अगारों की मौत

श्रीशंभुदयाल सक्सेना

नवयुग ग्रन्थ कुटीर

बीकानेर

पहला संस्करण

प्रकाशक नवयुग ग्रन्थ कुटीर बीकानेर
मुद्रक एजूकेशनल प्रेस बीकानेर
मूल्य ४०० नए पैसे

आमुख

सुना था कन्हाईलाल दत्त ने मुखबिर नरेन्द्र गोसाईं को अलीपुर जेल में गोलियों का शिकार बनाया और इस सफलता की खुशी में फांसी पर चढ़ते चढ़ते उनके शरीर में कई पौंड खून बढ़ गया । उस अमर शहीद की शव-यात्रा में कलकत्ते की सड़कों पर इतने फूल बिछे थे जितने उन सड़कों ने फिर कभी नहीं देखे ।

वही पुरानी स्मृति उस दिन साकार हो उठी जब लाहौर से कलकत्ते तक का संपूर्ण रेलपथ फूलों से ढक गया। अमर शहीद यतीनदास का शव रेल के एक डिब्बे में लाहौर से कलकत्ता ले जाया जा रहा था । इलाहाबाद स्टेशन पर हम सब ने भरे हुए हृदयों से श्रद्धांजलि स्वरूप फूलमालाओं के साथ साथ अगणित अश्रुहार भी उस भारत मां के लाल की पवित्र अर्थी को समर्पित किये थे । 'इन्क़लाब जिन्दाबाद' के नारों से उस दिन भारत का आकाश गूंज उठा था ।

वह समय था जब ब्रिटिश शासन भारत में कई ओर से खतरों का सामना कर रहा था । बोलशेविकों को दबाने के लिए उसने मेरठ षड्यन्त्र का सूत्रपात किया था । विप्लववादियों को निर्मूल करने के लिए दिल्ली और लाहौर में मोर्चे लगाये थे । शांति और अहिंसा के सैनिकों से निबटने के लिए भी वह मुस्तैदी से अपनी शक्ति और सेना का उपयोग कर रहा था ।

उन्हीं दिनों एक मध्याह्नपूर्व को आग की तरह यह समाचार इलाहाबाद के वातावरण में फैला कि विप्लववादियों के प्रथम सेनापति चन्द्रशेखर आजाद अल्फ्रेड पार्क में अंग्रेजी पुलिस-दल से

मार्च होते-होते फरारवादी हुए हैं, तो एक हलचल मच गई। जनता बे-तहाशा पार्क की ओर दौड़ पड़ी परन्तु पुलिस ने सारे नाके रोक रक्खे थे। वहां पहुँचना सम्भव नहीं था और तभी सम्भव हुआ जब उस दीवाने सेनानी को अचूक निशानेबाजी के कोई अवरोध वहां रहने नहीं दिये गये। पुलिस ने उस वृक्ष को भी जड़-मूल से उखाड़ दिया जिसकी छाया तले वह वीर चिरनिद्रा में सोया था, परन्तु आजाद को जनता के हृदय से उखाड़ सकने की शक्ति किसी पुलिस या सरकार को न हुई। अल्फ्रेड पार्क की चप्पा चप्पा भूमि वतनपरस्तों का तीर्थ बन गई और वह उस दिन से आजादपार्क के नाम से अमर हो गया।

इस नाटक में इन सारी स्मृतियों को संजोने का प्रयत्न किया गया है परन्तु नाटकीय सुविधा के लिए घटनाक्रम में, घटनास्थलों में और पात्रों में भी आवश्यक हेरफेर कर लिया गया है। देश काल और पात्र दोनों के संकलन में यह ध्यान बराबर रक्खा गया है कि कल्पना इतिहास पर अथवा इतिहास कल्पना पर एकान्त रूप से हावी न होने पाये और यह इसलिए संभव हो सका है कि आधार ग्रन्थों में कथावस्तु के लिए प्रचुर सामग्री प्राप्त है। अतः उन सभी लेखकों का हृदय से आभार प्रदर्शित करना आवश्यक है जिनके बिना इस नाटक में स्वाभाविकता की प्राण प्रतिष्ठा किसी तरह इस रूप में सम्भव न होती। यदि कुछ कमियां रही हैं तो उनका उत्तरदायित्व मेरे बिना भी निस्तार नहीं है।

सेनानी कार्यालय बीकानेर —शंभूदयाल सक्सेना

रचना काल
जनवरी १९६१

अगारों की मौत

[नाटक]

नाटक के पात्र

प्रमुख पात्र

नाम	दल का नाम
भगतसिंह	बलवंत रणजीत
सुखदेव	
राजगुरु	रघुनाथ
बटुकेश्वरदत्त	मोहन
चंद्रशेखर आज़ाद	पंडितजी
भगवतीचरण	बाबू भाई, हरी भाई
भगवानदास	कैलाश
यशपाल	सोहन
विजयकुमार सिन्हा	बच्चू
वैशम्पायन	बच्चन
शिव वर्मा	प्रभात
कैलाशपति	कालीचरण
सुशीला	दीदी
दुर्गा वोहरा	भाभी
जयदेव कपूर	हरीश
महावीर सिंह	ठाकुर भाई

कथान्तर पात्र

गणेश शंकर विद्यार्थी जयगोपाल हंसराज वोहरा धन्वन्तरी सुरेन्द्र पांडे भया प्रसाद सुखदेवराज कुंजबिहारी, मदनगोपाल मोतीलाल नेहरू मदनमोहन मालवीय वामनजी इमाम मिस्स श्रेराड, जार्ज सुस्टर, पंजाब के गवर्नर के सम्मानस आदि आदि

घटनाओं के स्थल

कानपुर, भावरा लाहौर कलकत्ता दिल्ली नई दिल्ली शिमला और इलाहाबाद

दृश्य दूसरा

कानपुर एक सुनसान बस्ती में पुराना सा मकान

सायंकाल ईस्वी सन् १९२८ की ग्रीष्म ऋतु

('हिन्दुस्तान रिपब्लिकन आर्मी' के कार्य को काकोरी ट्रेन डकैती के सिलसिले में हुई साथियों की गिरफ्तारी से काफी क्षति पहुँची है। उसे फिर से संगठित करने और आगे बढ़ाने पर विचार करने के लिए दल के सदस्य दूर दूर से आये हैं। भगतसिंह सुखदेव चंद्रशेखर आजाद भगवती चरण शिववर्मा विजयकुमार सिन्हा फणीन्द्र घोष शालिगराम बटुकेश्वरदत्त आदि आदि। साथी एक एक कर आते और अपना स्थान ग्रहण करते हैं। अँधेरे कमरे में केवल मोमबत्ती का हल्का प्रकाश है। उपस्थित साथियों के चेहरे साफ साफ पहचाने नहीं जाते। एक गहरी खामोशी में कमरे का वातावरण डूबा हुआ है।)

विजयकुमार : (खड़े होकर) हम समझते हैं अब काम आरम्भ होना चाहिए।

चंद्रशेखर : अवश्य।

विजयकुमार : इस कमरे में जैसी खामोशी और तारीकी छाई है वैसी ही आज हमारे जीवन में भी भर गई है। हमारे लम्बे युद्ध का यह एक विश्रान्तिकाल है। साथी जो हमसे बिछुड़ गये हैं वे फिर मिलेंगे कि नहीं नहीं कह सकते परन्तु देश की आज़ादी का जो व्रत हमने लिया है वह अंतिम लक्ष्य के रूप में हमारे सामने है। उसे हमें पाना है। इस पाने की चेष्टा में हम बहुत से साथी खो चुके हैं बहुत से खोयेंगे परन्तु हमारा युद्ध जारी रहेगा। शत्रु का शस्त्रबल हम में से हर एक को खत्म कर सकता है पर वह उस युद्ध को खत्म नहीं कर सकता जिसे हमने छेड़ा है। वह जारी रहेगा। देश की आज़ादी का क्षण चाहे वह कितनी ही दूर हो हमारे करीब आ रहा है। इसी अटल विश्वास को लेकर हम यहां इकट्ठे हुए हैं। युद्ध के इस विश्रान्ति काल में हम भावी युद्ध का एक नक्शा बना लेना चाहते हैं। उस नक्शे की रूपरेखा हम सब आज यहां तय करेंगे।

(वे अपने स्थान पर बैठ जाते हैं। चन्द्रशेखर आजाद बोलने खड़े होते हैं।)

चंद्रशेखर मैं अपने आपको आजादी का एक सिपाही भर मानता हूं। युद्ध के जिस मोरचे पर लड़ने का आदेश हो मैं तैयार हूं। उससे तिल भर भी खिसकने की बात आप नहीं सुनेंगे, चाहे इस शरीर की बोटी बोटी मैदान में बिखर जाय। परन्तु युद्ध का नकशा तैयार करना आप सब साथियों का काम है। आप जिन्होंने दुनियां की क्रान्तियों के इतिहास पढ़े हैं, वही यह सब कर सकते हैं।

(चंद्रशेखर अपना स्थान ग्रहण कर लेते हैं। भगतसिंह बोलने के लिए उठते हैं।)

भगतसिंह साथियो, हाल की घटनाओं ने हमारे संगठन को भारी क्षति पहुंचाई है। सब तरह के अभावों से हम घिर गये हैं। बहुत दिनों के हमारे प्रयत्न अस्तव्यस्त हो गये हैं परन्तु इससे क्या हम हताश हो जायेंगे? ऐसा होता तो हम यहां इकट्ठे न हुये होते। हमारे दिल और दिमाग जिस पवित्र उद्देश्य के लिए कृत संकल्प हैं वह इतना ऊँचा और भव्य है कि

हम उसे छोड़ नहीं सकते। इस निश्चय के प्रति हम में से किसी के दो मत नहीं हैं। अब सवाल सिर्फ इतना ही रह जाता है कि हम वर्तमान स्थिति में काम का बंटवारा कैसे करें जिससे हमारे कामों में सामंजस्य बना रहे? हम दूर दूर रह कर भी ऐसा करें कि 'हिन्दुस्तान रिपब्लिकन आर्मी' का नाम सार्थक हो जाये। धर्म जाति और प्रान्तों की सीमाएं हमारे काम में बाधा न पहुंचा सकें।

(भगतसिंह के बाद सुखदेव बोलने खड़े होते हैं।)

सुखदेव : प्यारे साथियो हमारी जीत का आधार दृढ़ और व्यापक संगठन है। देश के एक छोर से दूसरे छोर तक हम अपनी संस्थाओं का जाल बिछा दें ताकि जरूरत पड़ने पर जिस तार को हम लाहौर में छू दें वही दिल्ली, आगरा कानपुर और कलकत्ते में भी झंकृत हो उठे। इसके लिए मेरा सुझाव है कि सब साथी अपने अपने प्रदेश में जाते ही

किसी न किसी विशिष्ट नाम से संगठनों का काम दिया दें। पंजाब का जिम्मा मैं लेता हूं। आज से छः माह बाद कोई ऐसा कस्बा नहीं मिलेगा जहां हमारी 'नौजवान भारत सभा' का संगठन न होगा। हिन्दुस्तान रिपब्लिकन आर्मी से भिन्न कोई भी नाम रख कर कार्यारंभ किया जा सकता है। हर प्रदेश में अलग नाम रखकर भी काम हिन्दुस्तान रिपब्लिकन आर्मी का ही होगा। इससे हमें सुविधा रहेगी। शत्रु के सार्वदेशिक आक्रमण से हम कुछ दिनों तक बचे रहेंगे। एक भविष्यवाणी मैं आप लोगों के सामने कर देना चाहता हूं कि यदि हमने सफलता पूर्वक इस तरह के गुप्त संगठन सारे देश में कायम कर लिये तो हम लोक-संपर्क के रूप में अजेय शक्ति का संचय कर लेंगे परन्तु उस हालत में देश का नेतृत्व हमारे विरुद्ध हो सकता है। वह जनता में हमारे संगठन के प्रति भ्रमात्मक प्रचार पर उतर सकता है। इसका लाभ उठाकर शत्रु हमारा दमन कर

सकता है। अतः हमें परायों से डर तो है ही अपनों से भी डर है। इन सब बातों के प्रति सजग रह कर ही काम किया जाना है।

(इसके बाद बटुकेश्वरदत्त बोलते हैं।)

बटुकेश्वरदत्त   मेरा सुझाव है कि प्रान्तीय संगठनों के लिए स्वेच्छा से साथी लोग अपने अपने नाम दे दें और यहां से जाते ही काम शुरू हो जाय। मेरा यह भी सुझाव है कि इन संगठनों में एक-सूत्रता बनाये रखने के लिए श्री विजय कुमार और भगतसिंह समय समय पर सब प्रदेशों में जाते आते और परामर्श देते रहें। बंगाल बिहार में 'अनुशीलन' और 'युगान्तर' समितियां अपने लोकप्रिय नामों से ही काम करेंगी।

(इसके बाद फणीन्द्रनाथ सुझाव रखते हैं।)

फणीन्द्रनाथ : यह तो संगठनात्मक पहलू की बात हुई। मेरा सुझाव है कि एच. आर. ए. का सैनिक रूप को खूब विकसित किया जाय। इसके लिए साथी चंद्रशेखर आजाद को प्रधान सेनापति नियत करके व्यापक अधिकार दिये

जाय। अस्त्रबल का मुकाबला करने की हमें कभी भी जरूरत पड़ सकती है। हर समय सज्जित रहने की आवश्यकता है।

(इतने प्रस्तावों के बाद सभा विचार-विमर्श के लिए उठ जाती है। सभी गपशप करने के लिए मकान के भिन्न भिन्न भागों में बिखर जाते हैं। केवल भगतसिंह मोमबत्ती के प्रकाश में कमरे में टहलते टहलते आत्मनिरीक्षण में दत्तचित्त रहते हैं।)

भगतसिंह कांग्रेस द्वारा असहयोग आन्दोलन वापस ले लेने से देश में मुर्दनी छा गई थी वह तो कुछ दूर हुई है। काकोरी की घटना जरूर कुछ मुर्दे रंग लायेगी। साथियों की गिरफ्तारी बेकार नहीं जा सकती। इस वक्त हम एक गहरे संगठन की नींव डाल सकते हैं और जनसम्पर्क की दिशा में एच आर. ए. को ले जा सकते हैं। बिना जनसंपर्क के शक्तिशाली संगठन संभव नहीं। जनसहयोग के बगैर हम कोई भी महान काम करें उसका मूल्य ही क्या ? इसके अलावा लोगों को हमारे

उद्देश्य के संबंध में भी तो कुछ जानकारी होनी चाहिए। कोरे आतंकवाद से दुश्मन को ही लाभ है। वह किसी भी नृशंसतापूर्ण दुष्कृत्य के साथ हमारे नाम को जोड़ सकता है। लोगों में हमारे नाम और काम दोनों के प्रति घृणा फैला सकता है।

राजगुरु : (एक कोने में से) बस रणजीत तुमने मेरे मन की बात कह दी है।

भगतसिंह (चौंककर) अरे रघुनाथ तुम तुम बाहर नहीं गये ?

राजगुरु : रणजीत क्रुद्ध न हो। मैं भी तुम्हारी तरह चिन्ता में जल रहा हूँ।

भगतसिंह (हँसकर) पर फफोले तो नहीं उठे दिखलाई नहीं पड़ते।

(इधर उधर ऊपर नीचे देखने का अभिनय करते हैं।)

राजगुरु : फफोले देखने हैं तो ये भी देखलो।

(अपनी कमीज ऊपर उठाकर छाती खोल देता है। छाती में तीन चार काले फफोले नजर आते हैं।)

भगतसिंह (पीड़ित होकर) रघुनाथ !

राजगुरु (साधारण स्वर में) रणजीत !

भगतसिंह : मुझे क्षमा करो भाई।

राजगुरु : किसलिए, तुम्हारा अपराध ?

भगतसिंह मैंने तुम्हारे ऊपर हीन व्यंग्य किया इसका मुझे पछतावा है।

राजगुरु : बस खतम हुई बात।

(भगतसिंह की पीठ थपथपाता है।)

भगतसिंह और ये फफोले"सच बताना रघुनाथ।

राजगुरु कोई बात नहीं। क्रांतिकारियों पर पुलिस के जुल्मों की बात चल पड़ी थी। तपे हुए लोहे से जलाने में कितना दर्द होता होगा यही जानने के लिए परीक्षा कर देखी। बस, और कुछ नहीं।

भगतसिंह तपे हुए लोहे को छाती से लगाकर परीक्षा"

राजगुरु : हाँ सिर्फ परीक्षा।

भगतसिंह तीन तीन जगह ?

राजगुरु यह जानने के लिए कि यंत्रणा सहने की ताकत भी है इस शरीर में ?

भगतसिंह : किसी ने रोका नहीं तुम्हें ?

राजगुरु : सँडसी को छीन लिया पूरा मजा भी तो नहीं लेने दिया।

भगतसिंह : शहादत को वरण करने का तुम्हारा अधिकार मैं मानता हूँ पर इस तरह अपने को हलाक करना बेजा है। लाओ देखूँ। छालों पर अभी तक कुछ लगाया भी नहीं?

(कुछ और प्यार से राजगुरु को पकड़ते हैं। उनकी कमीज उठाकर फिर छालों को देखते हैं। मरहम लेकर लगाते हैं। शिववर्मा का प्रवेश।)

शिववर्मा : क्यों भाई?

(राजगुरु तिलमिलाता है।)

भगतसिंह : देखो इस अपने रसोइये को। छाती को दाग कर धैर्य की परीक्षा करता है।

शिववर्मा : मैं जानता हूँ शहादत के बेताब आशिक राजगुरु को नहीं नहीं रघुनाथ को।

राजगुरु : मैं प्रशस्ति सुनने आया हूँ यहाँ।

भगतसिंह : मैं तो तुम्हारी बेवकूफी पर हँस रहा हूँ और तुम उसे प्रशस्ति समझ रहे हो। वाह क्या खूब!

(शिव और भगतसिंह हँसते हैं। राजगुरु चुप होता है।)

राजगुरु : देखो रणजीत जरा सीरियस बनो।

भगतसिंह : *किस तरह?*

राजगुरु : तुम जो कह रहे थे कि दुश्मन किसी से भी आतंकवाद के काम करा कर हम क्रांतिकारियों के नाम पर थोप सकता है।

शिववर्मा : हां इस तरह वह जनता में हमें बदनाम कर सकता है।

भगतसिंह : और हम क्रांतिकारी खुले रूप में उसका विरोध नहीं कर सकते। विरोध भी करें तो कोई हमारा विश्वास नहीं करेगा।

राजगुरु : विश्वास तो हम अपने कामों से करा देंगे।

शिववर्मा : पर हमारे कामों को जनता के सामने विकृत करके पेश किया जाता है।

भगतसिंह : दल के नेता भी हम से भय खाते हैं। वे नहीं चाहते कि अपने कामों से हम उनके नेतृत्व को फीका करने पायें।

शिववर्मा : हमें बदनाम करने में वे भी दुश्मन से मिल जाते हैं।

भगतसिंह : हमें नेताओं की परवाह नहीं पर इससे जनता गुमराह होती है।

राजगुरु इसके प्रतिकार के अभियान का नेतृत्व करने के लिए मैं तैयार हूं। आप दल के सामने इस प्रश्न को रक्खें। बेशक मेरा नाम ले दें।

(भगतसिंह मुस्कराते हैं। राजगुरु अचकचाकर भगतसिंह की मुख-मुद्रा को देखते हैं।)

शिववर्मा पर वह अभियान क्या हो ?

राजगुरु : दुश्मन से कोई भारी मुठभेड़ मोर्चा ! आटोमेटिक कोल्ट मेरे हाथ में दे दो फिर देखो क्या करामात दिखाता हूं। दल का नाम सारे देश में रोशन कर देता हूं।

(इसी समय सब द्वारों से साथी लोग आना प्रारंभ करते हैं और अपने अपने स्थान पर बैठते जाते हैं।)

भगतसिंह : साथी सुखदेव का सुझाव हमें पसन्द आया है कि जनसंपर्क के लिए एच आर. ए के साथ गुप्त और व्यापक संगठन की आवश्यकता है। यह भिन्न भिन्न नामों से भिन्न भिन्न

प्रान्तों में काम करे। लोगों को हमारे उद्देश्यों से अवगत कराये। गलत फहमियाँ दूर करे। क्रांतिकारियों को वे हत्यारा न समझें। उनके देश प्रेम उनके बलिदान उनके महान उद्देश्य के यथार्थ रूप को ठीक ठीक आँकें। अपने उद्देश्य को शिक्षित वर्ग के आगे और अधिक स्पष्ट करने के लिए मेरा दूसरा सुझाव है कि 'हिन्दुस्तान रिपब्लिकन आर्मी' को आगे से 'हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी' नाम दिया जाय।

शालिगराम : (बात टोककर) यह सुझाव अमान्य है। इससे जनता में भ्रम फैलेगा।

चन्द्रशेखर आज़ाद : एच आर ए के साथ काकोरी के साथियों का इतिहास जुड़ा हुआ है। उस नाम को हम कैसे बदल सकते हैं?

भगतसिंह : मैं मानता हूँ परन्तु हम 'सोशलिस्ट' शब्द द्वारा उस पर्दे को उठा लेना चाहते हैं जिससे लोगों को शंका हो सकती है।

शालिगराम : क्या इसके लिए रिपब्लिकन शब्द काफी नहीं है? लोकतंत्र के सिवा हम अपनी

तानाशाही स्थापित करने के लिए लड़ रहे हैं ऐसा भ्रम किसी को कभी हुआ है क्या।

भगतसिंह : लोकतंत्र के बहुत से रूप हो सकते हैं। और जब शासन प्रणालियाँ बदलती हैं तो प्रतिक्रियावादी ताकतें हलचलकारी अभावों में आकर सत्ता को अपने हाथों में ले लेती हैं और 'क्रांति' के महान उद्देश्य को विफल कर देती हैं। हम इस संशोधित नाम के द्वारा बता देना चाहते हैं कि हमारा दल 'समाजवादी लोकतंत्र' की स्थापना के लिए क्रियाशील है। यह केवल हत्यारों का गिरोह नहीं है और न यह कोरे बेकार युवकों का ही संगठन है जिनके सामने भावी भारत की आदर्श समाज-व्यवस्था का कोई चित्र नहीं है।

चन्द्रशेखर : एक शब्द जोड़ने में कुछ नहीं है। पर इससे दल ने जो यश कमाया है वह खतरे में न पड़ जाय।

सुखदेव : हम कोई नया संगठन नहीं बना रहे। 'समाजवादी' शब्द जोड़कर उन लोगों के

आगे अपना उद्देश्य स्पष्ट कर रहे हैं जो हमारे 'लोकतंत्र' के रूप के प्रति शंकाशील हैं।

विजयकुमार : साथी रणजीत के सुझाव को मान लेने में कोई हर्ज नहीं है।

शालिगराम : संगठन का नाम जिसके हेतु हमारे अनेक साथियों ने प्राणों का उत्सर्ग किया है हमारे लिए एक पवित्र धरोहर है। उसे बदलने का अधिकार मेरे विचार में किसी को नहीं है

बटुकेश्वरदत्त : जहां तक भावुकता का प्रश्न है साथी शालिगराम ठीक कहते हैं किन्तु जहां यह बताने का सवाल है कि हम देश में कैसा शासन चाहते हैं हम किस अंतिम लक्ष्य के लिए लड़ रहे हैं हमारे बलिदान का लाभ किसे मिलेगा, वहां साथी रणजीत का सुझाव काफी वजन रखता है।

फणीन्द्रनाथ : ठीक यही बात है।

भगतसिंह : शहीदों की पवित्र धरोहर में तो हम यह शब्द जोड़कर कुछ वृद्धि ही कर रहे हैं। उनके पथ को हम और अधिक उज्ज्वल

विद्यार्थीजी प्रबन्ध कर लिया होगा ?

मिश्रजी कहाँ ? केवल पांच सौ हो पाये हैं।

विद्यार्थीजी केवल पाँच सौ ?

मिश्रजी केवल पाँच सौ। (चिंतित मुद्रा)

विद्यार्थीजी : (एक पर्चा जेब में से निकालकर देते हैं।) इसे किसी के हाथ भेजिये तो सही।

मिश्रजी (पर्चा लेकर) कृपचन्द को पार इन्हें पहले भी

विद्यार्थीजी : प्रताप बन्द नहीं करना है तो फिर एक बार सही। जैसे पहले दिया वैसे इस बार भी देंगे।

मिश्रजी अंग्रेजी हुकूमत रहेगी तब तक प्रताप पर संकट आया ही रहेगा।

विद्यार्थीजी प्रताप' संकटों में ही जन्मा और संकटों में ही बड़ा हुआ है। संकटों से अब उसे भय नहीं रह गया है।

मिश्रजी हुकूमत प्रताप' को उखाड़ फेंकने पर तुली बैठी है।

विद्यार्थीजी और प्रताप' भी उसे समुद्र पार भेज देने के लिए दृढ़ संकल्प है।

(पोस्टमैन का रजिस्ट्री लेकर आना ।)

मिश्रजी (हाथ बढ़ाकर रजिस्ट्री लेते हस्ताक्षर करते और लिफाफा खोलते हैं) अब ड्राफ्ट दो हजार !

(हुए मुड़ा पोस्टमैन का प्रस्थान)

विद्यार्थीजी (चौंकके) ए !

मिश्रजी यह लीजिए पूरे दो हजार का ड्राफ्ट ।

(ड्राफ्ट विद्यार्थीजी के आगे रख देते हैं ।)

विद्यार्थीजी और दाता का नाम भी नहीं !

मिश्रजी नहीं गुप्तदान । जनता जनार्दन ने जिसे छाती से लगा लिया है यह प्रताप मर नहीं सकता ।

विद्यार्थीजी जनता का प्रताप चिरजीवी हो ।

मिश्रजी ऐसा ही होगा । अब मैं आगे की कार्रवाई के लिए जाता हूँ ।

(प्रस्थान)

विद्यार्थीजी प्रताप' पर लोग इतने फिदा हैं ! (लेखनी उठाते और अधूरे लेख को पूरा करने का उपक्रम करते हैं । उसी समय एक हैट-सूटधारी मनचली नौजवान प्रवेश करता है ।)

आगन्तुक श्रीमान् जी को नमस्ते ।

विद्यार्थीजी (ऊपर देखकर) पधारें महाशय ! कहिये

विद्यार्थीजी : भाई, तुम्हें किस नाम से पुकारना होगा ?

आगन्तुक : मुझे यशवन्त कहियेगा ।

विद्यार्थीजी : अच्छा तो यशवन्त भाई मिश्रजी से जल्दी मिल लीजिये । नहीं तो वे बाहर निकल जायेंगे ।

(यशवन्त का अभिवादन करके जाना विद्यार्थीजी का लिखने का यत्न करते ही मिश्रजी का आना ।)

मिश्रजी : (पर्चा सामने पटक देते हैं ।) यह क्या करते हैं आप ?

विद्यार्थीजी : (मुस्कराकर) क्यों क्या हुआ ?

मिश्रजी : एक अजनबी को प्रताप की डाक का काम ?

विद्यार्थीजी : हाँ यही तो ।

मिश्रजी : आप उससे परिचित हैं ?

विद्यार्थीजी : जरूर ।

मिश्रजी : कौन है यह ?

विद्यार्थीजी : एक निष्ठावान देश भक्त युवक ।

मिश्रजी : देश-सेवा की दो चार बातें कहीं और आपने विश्वास कर लिया । कई बार हो चुका है आप अच्छी तरह जानते हैं । प्रताप-कार्यालय

में बिना जाने पहचाने लोगों को रखने का खतरा हम उठा चुके हैं। इसलिए कहता हूं।

विद्यार्थीजी : पर इस बार नहीं उठायेंगे।

(मुस्कराहट)

मिश्रजी आपको विश्वास है ?

विद्यार्थीजी हां पूरी तरह। मेरी आंखें इस मामले में धोखा नहीं खा सकतीं।

मिश्रजी : फिर भी डाक के अलावा और काम क्यों न दे दिया जाय ?

विद्यार्थीजी : मेरे कहने से एक बार और खतरा उठा लीजिये।

मिश्रजी : अच्छी बात है।

विद्यार्थीजी : खतरा उठाने से आप घाटे में नहीं रहेंगे। जनता जब तक प्रताप की पीठ पर है तब तक खतरा भी उसके लिए वरदान बन जायगा।

मिश्रजी : आपने उसकी आंखों में पढ़ लिया है तो मुझे कुछ नहीं कहना है।

विद्यार्थीजी जहां सदाय होता है वहीं जी डगमगाता है। फिर पुलिस के गुर्गे छिपे नहीं रहते। उन्हें

दूर से ही परख लेने की दृष्टि मेरे अंदर पैदा हो गई है।

मिश्रजी सब ठीक। मैं जाता हूँ।

(प्रस्थान)

विद्यार्थीजी : देश के दीवानों को प्रताप कार्यालय में जगह न मिलेगी तो कहां जायेंगे ? (फिर कलम उठाकर लिखने लगते हैं। बलवन्त आता है।)

बलवंत : एक बात कहना भूल गया था।

विद्यार्थीजी : (काम रोककर) वह क्या ?

बलवंत : मैंने जो कुछ कहा है उस पर आप विश्वास कर सकते हैं।

विद्यार्थीजी : हां हां मुझे तो विश्वास ही है।

बलवंत : यहां ऐसे भी बहुत से लोग आते होंगे —

विद्यार्थीजी : हां अक्सर। पर मैं उन्हें भांप लेता हूं। तुम्हारे बारे में तो मैं इस तरह की कल्पना भी नहीं कर सकता।

बलवंत : यह मेरा सौभाग्य है।

विद्यार्थीजी : काम मिल गया ?

बलवंत : मिल गया। मैंने समझ लिया। उसके अलावा और भी काम आप दे सकते हैं।

विद्यार्थीजी वह सब बाद में देखा जायगा। बैठकर तय करेंगे। तुम्हारी रुचि का भी ध्यान रखना पड़ेगा।

बलवंत मेरी रुचि? प्रताप कार्यालय में झाड़ू लगाने से लेकर हर काम में मेरी रुचि है।

विद्यार्थीजी : (प्रसन्न होकर) तुमने सेवा के मर्म को समझा है। मैं प्रसन्न हूँ। (अचानक कुछ स्मरण हो आने से) समय हो गया है। मुझे मजदूरों की एक सभा में पहुँचना है। तुम यहाँ बैठो और आनेवालों से परिचय करो। इससे तुम्हें कुछ करने का अवसर मिल सकेगा।

(विद्यार्थीजी का जाना और बलवंत का कुर्सी पर बैठना।)

बलवंत (टेबल पर से 'प्रताप' की फाइल उठाकर उस पर नजर दौड़ाते दौड़ाते विचारलीन हो जाता है।) मैं भगतसिंह इस समय कानपुर में, प्रताप कार्यालय में बलवंत बना बैठा हूं। उधर घर में सोच हो रही होगी। पर क्या मैं विवाह बंधन में बंध जाता? पिता, माता,

दादा सभी का दबाव और मैं अकेला। मेरे लिए घर छोड़ने के सिवाय उपाय ही क्या था? उन्हें बताना जरूरी था कि मैं घर बसाने के लिए नहीं देश बचाने के लिए पैदा हुआ हूं। ऐसा ही योग था। तभी तो देश-सेवकों के घर में जन्मा। खालसा कालेज में न पढ़कर डी० ए० वी० कालेज में पढ़ा। असहयोग में कूदा। नेशनल कालेज में गया। नये रंग और नये विचारों की दीक्षा ली। भगवतीचरण राजगुरु सुखदेव यशपाल जैसे साथी मिले। यह सब होना ही था। भगत सिंह का रास्ता ही दूसरा था। आज बलवंत बनकर मैं प्रताप कार्यालय में आ बैठा हूं। यह मेरे मनमाफिक स्थान है। यहां कुछ दिन रह कर कुछ कर सकूंगा। (भाव तन्द्रा मग्न मुद्रा में) पिता जी दोस्तों और सहपाठियों से पूछताछ कर रहे होंगे। लेकिन अब तक तो मेरा पत्र भी उन्हें मिल गया होगा

(बटुकेश्वरदत्त का प्रवेश)

बटुकेश्वरदत्त : मैं साथी बलवंत की ध्यान मुद्रा को भंग

करने के लिए क्षमा माँग लेता हूँ।

भगतसिंह : (मुस्कराकर) आइये। मुझे किससे मिलने का सौभाग्य प्राप्त हो रहा है?

बटुकेश्वरदत्त : मैं बटुकेश्वर दत्त हूँ। हम दोनों हमपेशा हैं। विद्यार्थीजी ने आपका परिचय मुझे दे दिया है।

भगतसिंह : हम दोनों हमपेशा हैं। विद्यार्थीजी ने मेरे बारे में आपको सब कुछ बता दिया है। साथी बटुकेश्वरदत्त अपना हाथ मुझे दो न, भाई।

बटुकेश्वरदत्त : (हाथ बढ़ाकर) साथी बलवंत के साथ सौहार्द्र बंधन में बँधने के गौरव को मैं बहुत ऊँचा स्थान देता हूँ।

भगतसिंह : (हाथ मिलाते हुए) बलवंत नहीं भगतसिंह पंजाब का भगतसिंह।

बटुकेश्वरदत्त : भगतसिंह! और भी अच्छा। पंजाब और बंगाल यहाँ आकर हम मिले।

भगतसिंह : अब हम बहुत कुछ कर सकेंगे।

बटुकेश्वरदत्त : हाँ बहुत कुछ। हमारे ऊपर भारी उत्तरदायित्व है।

विजयकुमार : कुछ तो भूलना चाहिए था नहीं न ? (हास्य) अच्छा तो बलवंत को आज की बैठक में आना है।

भगतसिंह : आऊँगा।

विजयकुमार : (बटुकेश्वरदत्त से) आप इन्हें साथ लायेंगे।

बटुकेश्वरदत्त : जरूर।

विजयकुमार : तो हमें कपड़े पिरते दिखना चाहिए।

बटुकेश्वरदत्त : हां और क्या।

भगतसिंह : अच्छा नमस्ते। (हाथ जोड़ देते हैं। अभिवादन के बाद दोनों का प्रस्थान। चपरासी का आना।)

चपरासी : आपको नवीन जी ने याद किया है।

भगतसिंह : कहां ?

चपरासी : ऊपर अध्ययन कक्ष में।

भगतसिंह : अभी आया।

(चपरासी का प्रस्थान भगतसिंह जाने के लिए उठते हैं कि नवीनजी और पालीवाल जी वहीं आ पहुंचते हैं।)

नवीनजी : भई बलवंत, प्रताप के इस मंच में तुम्हीं सर्वेसर्वा रहोगे।

भगतसिंह : ऐसी क्या आफत आ गई है ?

नवीनजी : ये कवि सम्मेलन जो नहीं छोड़ते हैं मुझे ? आज रात ही मेरठ का टिकट कटाना है।

भगतसिंह : पालीवाल जी तो हैं ?

पालीवालजी : मैं इसी गाड़ी से आगरा जा रहा हूँ। पोलीटिकल कान्फ्रेन्स का काम मेरे जिम्मे लगा है।

भगतसिंह फिर भी मेरा तो सवाल नहीं उठता। विद्यार्थीजी रहेंगे ही।

नवीनजी : विद्यार्थीजी तो कोर्ट से ही झाँसी चले गये हैं। भूख हड़ताली छात्रों के प्राणों का संकट है। अभी अभी तार आया था।

भगतसिंह तो इतना बड़ा दायित्व अकेले मैं

नवीनजी : हाँ तुम उठाओगे।

पालीवालजी और 'प्रताप' का अंक समय पर निकलेगा। बस, यही कहने हम आये हैं।

नवीनजी और अब हम जा रहे हैं।

भगतसिंह : जाइये मेरे से जैसा बन पड़ेगा वैसा..

पालीवालजी हाँ हाँ वैसा ही। (नवीनजी से) चलो नवीनजी गाड़ी पकड़नी है।

(दोनों का शीघ्रता से प्रस्थान)

भगतसिंह : अब तो काम में जुटे बिना निस्तार नहीं।
और, और शाम को बैठक में—

(कुर्सी पर बैठ जाना और कागजों का पुलन्दा लेकर मेज़र छांटना व लिखने में व्यस्त होना।)

पर्दा

चन्द्रशेखर : जब यह शरीर और प्राण ही हम पर निछावर हैं तो दाढ़ी चोटी की क्या कीमत है ?

(कैंची लेकर चोटी काटते हैं।)

राजगुरु हम केवल भारतीय हैं, न हिन्दू न मुसलमान न सिक्ख न किरिस्तान।

(जनेऊ तोड़कर फेंकते हैं।)

भगतसिंह यह नये धर्म की दीक्षा है।

(केशों और दाढ़ी पर कैंची चलाते हैं। अन्य साथी भी धर्मचिह्नों का परित्याग करते हैं।)

बटुकेश्वरदत्त मेरे पास त्याग करने को कुछ नहीं है न दाढ़ी न चोटी न यज्ञोपवीत।

(सब हंसते हैं।)

भगवतीचरण : मैं भी निराट अकिंचन हूं। मैं नहीं जानता मैं किस चीज का त्याग करूं ?

सुखदेव : आप ऐसा क्यों कहते हैं ?

राजगुरु : कह सकते हैं। साथी भगवतीचरण कह सकते हैं वे पहले ही सर्वस्व त्याग कर चुके हैं। उनकी वीरांगना पत्नी ने उन्हें दल के लिए काम करने की पूरी छूट दे दी है।

भगवतीचरण : सर्वस्व-त्याग के गौरव का परित्याग करते हुए मैं 'शरणम् शरणं गच्छामि'। बस मुझे स्वीकार करें।

भगतसिंह : इस ऐतिहासिक बैठक में हुए निश्चयों के प्रकाश में हमें अपने अपने प्रान्तों में तुरन्त काम आरम्भ कर देना है। पंडित जी प्रधान सेनापति के रूप में शीघ्र ही सब प्रांतों का दौरा करेंगे। सैनिक स्थिति में कहां किस सुधार की जरूरत है, यह वही बतायेंगे। वही जगह जगह शिविर कायम करेंगे। एक्शन आदि का निश्चय स्थानीय कार्यकर्त्ताओं द्वारा होगा। तूफानी गति से काम करके हमें देश की रगों में खून खौला देना है। सोते हुओं को जगा देना है। दुश्मन को यह बता देना है कि हर जगह उसके लिए हमारा मोर्चा तयार है। हर जगह युवक संगठन प्रचार और सहायता के लिए, हमारी पीठ पर होंगे। बस आज का काम समाप्त होता है। आप लोग चाहें तो थोड़ी कुछ देर अपना संगीत कार्यक्रम चला सकते हैं।

विजयकुमार : आज संगीत का मूड नहीं है और मौका भी नहीं है। हमारे साथी सीकचों के भीतर बेड़ियों की झनकार का संगीत सुन रहे हैं। हमारे गले से संगीत नहीं फूट सकता जब तक वे हमारे बीच नहीं आ जाते।

(सब खामोश रहते हैं और बैठक उठ जाती है। जो जहाँ-जहाँ ठहरे हैं वहाँ वहाँ के लिए रवाना हो जाते हैं। केवल आजाद भगतसिंह विजय कुमार और राजगुरु रह जाते हैं।)

भगतसिंह हमें आज से सातवें दिन आगरा में मिलना है। मैं घूमता हुआ समय पर पहुँच जाऊंगा।

चंद्रशेखर : मैं भी घूमता हुआ ही पहुँचूंगा। ये दोनों (विजयकुमार और राजगुरु की तरफ संकेत करते हैं।) ट्रेन से जायेंगे। बाबा की आगरा पेस से रवानगी का ये पता रखेंगे और और आवश्यक प्रबंध कर लेंगे।

राजगुरु पुलिस के हाथों से सोमेस बाबा को छुड़ाना ही तो है यह अकेला मैं ही करके दिखा दूंगा। तुम तो उन्हें लेकर छुपाने की तैयारी रखना।

भगतसिंह : (हँसकर) फिर वही फुक्कुर। तेरी आदत नहीं जाती, भाई मेरे।

चन्द्रशेखर : यह मामूली अभियान नहीं होगा। पुलिस भी सतर्क है। बिलकुल योजनाबद्ध काम होगा।

राजगुरु : योजनाबद्ध काम का नेतृत्व मुझे देने में हिचकिचाहट""

विजयकुमार : अच्छा अच्छा। अब इन लोगों को जाने दो। हम दोनों साथ चलेंगे। रास्ते में सारी योजना तय कर लेंगे।

राजगुरु : यह माना। "रणजीत का तो स्वभाव है छोटी सी बात को बड़ी करके दिखाना। अंग्रेजी के पोथे पढ़ते पढ़ते इसका दिमाग"

भगतसिंह (हंसते हुए) अच्छा भाई! तुम योजना तय करो हम तो चले।

(बाहर निकल जाते हैं। उनके पीछे चंद्रशेखर आजाद भी अंधेरे में गायब हो जाते हैं। विजय कुमार आकर मकान की कुंजी बंद कर लाते हैं परन्तु राजगुरु को कमरे में नहीं पाते हैं।)

विजयकुमार रघुनाथ रघुनाथ!

(कोई उत्तर नहीं मिलता है।)

अरे कहां चला गया? मोमबत्ती खत्म होने आ गई है। थोड़ी देर में गाड़ी पकड़नी है।

(इतने पर भी राजगुरु नहीं दिखाई देता है तो वे बरामदे में घर के दूसरे कमरों में उसे खोजते हैं। फिर आकर बाहर दरवाजे की कुंडी जमाते हैं। कुंडी भीतर से बंद मिलती है।) कुंडी तो मैंने ही बंद की थी। तो गया कहां? एक मिनट में कहां गायब होगया? पंडितजी और रणजीत को तो मैंने ही निकाला था तब उसे यहीं बैठा छोड़ गया था। मकान से कूद कर तो जा नहीं सकता और उसको जरूरत भी क्या है?

(एक बार फिर सारा घर छान मारते हैं। जलती मोमबत्ती लेकर सब कमरे-कोठरियां देखकर बड़े कमरे में लौट आते हैं। मोमबत्ती यथास्थान रख देते हैं और थककर बैठ जाते हैं तभी खूंटी पर टंगे कुछ कपड़े गिरते हैं और राजगुरु उनके पीछे खड़े खड़े सो रहे दिखाई पड़ते हैं। विजयकुमार कुछ हंसी व कुछ खीज में आकर उन्हें झकझोरते हैं।)

राजगुरु (अर्ध सुप्त अवस्था में) हूं हूं मुझे सो लेने दो।

विजयकुमार ओ सोनेवाले आंखें खोल। मोमबत्ती चरम

हो रही है और हमें बिस्तर बांधकर स्टेशन पहुंचना है।

(पुनः झकझोरते हैं।)

राजगुरु : (आंखें खोलकर) रणजीत यह मजाक अच्छा नहीं है। तुमने मेरी पिटपिटिया कहां छिपा दी है?

विनयकुमार (राजगुरु के दोनों कंधे हिलाकर) पत्थरे की पिटपिटिया का दादा! मोमबत्ती जा रही है। आंखें खोल नहीं तो…

(मोमबत्ती जलकर बुझ जाती है। घर में घनघोर अंधकार छा जाता है।)

पर्दा

दृश्य तीसरा

आगरा, नूरी दरवाज़े के भीतर एक दो-मंज़िला मकान
एच. एस. आर. ए. का शिविर
१९२९ ई. का एक मध्याह्नोत्तर काल।

(हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी की छावनी में जो झाँसी से हटाकर आगरा में लाई गई है, आज कुछ विशेष हलचल है। आज़ाद भगतसिंह विजयकुमार जयगोपाल वैशम्पायन, सदाशिव राव सुखदेव भगवतीचरण आदि उपस्थित हैं। सब आतुर और चिंतित हैं। सब की निगाहें उठ-उठकर द्वार की ओर जाती हैं और कान तो सड़क की ओर लगे ही हैं। इतने में ऊपर दरवाज़े की कुंडी खड़कती है। भगवतीचरण उठकर कुंडी खोल आते हैं। राजगुरु अपना झोला-झंडा कंधे पर लटकाये घर में प्रवेश करते हैं और इत्मीनान से आसन में रखकर खड़े हो जाते हैं। विजयकुमार की दृष्टि बराबर खुले द्वार की ओर लगी रहती है, फिर वे आवाज़ लगाते हैं।)

विजयकुमार : जयदेव, जयदेव !

(कोई उत्तर नहीं आता। केवल राजगुरु खड़े टुकुर टुकुर देखते रहते हैं। विजय

(कुमार अपने स्थान से उठकर दरवाजे तक जाते और गली में झांक आते हैं।)

यहां भी तो नहीं है। कहां रह गया? (राजगुरु से) हरीश कहां रह गया? उसे दूसरे मकान में भेज दिया क्या? वहां तो नहीं भेजना था।

(राजगुरु हक्के बक्के होकर उनकी ओर देखने लगते हैं।)

भई मेरी ओर क्या ताकते हो?

राजगुरु : तो क्या हरीश को साथ लाना था?

विजयकुमार : धन्य हो, तुमसे कहा था न कि उसे साथ लेकर आना। और रुपये देते समय समझा दिया था कि यहां पैसों की बहुत कमी है इसलिए जहां तक हो वे भी खर्च न करके बचा कर ही लाये।

राजगुरु : तब तो सब उल्टा ही हुआ।

(चिंतित हुआ)

विजयकुमार : क्यों क्या कर आये?

राजगुरु : मैं तो रुपये देकर उसे कह आया कि खर्च करना और वहीं रहना। थोड़ी देर के लिए

भी इधर उधर मत होगा।"" मुझे तो ऐसा ही ध्यान रहा।

विजयकुमार ऐसा क्या ध्यान रहा ?

राजगुरु : यही कि योगेश दादा को जेल से छुड़ाकर रखने के लिए तुरन्त कोई सुरक्षित स्थान की आवश्यकता होगी। इस दृष्टि से हरीश का निवास सर्वोत्तम है।

विजयकुमार : (बिगड़कर) यह तो सारी मनगढ़न्त बात हुई। मैंने जो कहा था वह मालूम पड़ता है आपने सुना ही नहीं ? कल्पनाशक्ति की भी हद होती है!

राजगुरु : (सिर खुजाते हुए) क्या बतायें।

(पछताने की मुद्रा में थैला उठाकर भीतर चला जाता है।)

चंद्रशेखर : (विजयकुमार से) क्या बात है ?

विजयकुमार रघुनाथ सब काम बिगाड़ आया। हरीश को बुलाने के बजाय उसे रोक आया और रुपया दिया था वह उसी के पास छोड़ आया।

चन्द्रशेखर : उसे जानते नहीं हो क्या ? सोते सोते आदेश सुना होगा, फिर मन में जो आया वह कर

आया। खैर जो हुआ सो हुआ। साथी सब भूखे हैं। खाने पीने की चिन्ता करो।

विजयकुमार : पैसा बिल्कुल नहीं है। ओढ़ने बिछाने के नाम पर दो चार फटे पुराने कंबलों के सिवा कुछ भी नहीं है। सब जमीन पर आधी धोती बिछा कर सो जाते हैं। खाने के लिए चार आने के पैसे देते थे वे भी बंद करने पड़ गये हैं। आटा-दाल मंगाकर टिक्कड़ सेंकने की सोची है। उसके लिए बरतन नहीं। मिट्टी के खप्पर में दाल उबाली है। साथियों से कहिये एक ही चक्कर में बैठ जायं। बिल्कुल अघोरियों का भोजनचक्र।

भगवतसिंह : कोई बात नहीं, यह एच. एस. आर. ए. का शिविर ही तो है।

चन्द्रशेखर : (हँसकर) हम तो बाबा अघोरी साधक हैं। खोपड़ी के पात्र में भी खा सकते हैं। जिन-जिन को हमने जीत लिया है।

विजयकुमार : तो एक-दो-तीन सब साथी घेरा बना कर बैठ जायें। खाना आ रहा है।

(सब घेरा बनाकर बैठते हैं। आजाद सबसे पहले भगतसिंह सब के साथ में घेरे में शामिल होते हैं। पूरी मक्की का छप्पर जिसमें दाल भरी है, लाकर बीच में रख दिया जाता है उसके पास सबकी रोटियाँ। बिना हल्दी की दाल का रंग मटमैला सा है। उधर ध्यान न देकर 'हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी' के प्रधान सेनापति चंद्रशेखर आजाद बड़ी बेतकल्लुफी से रोटी का टुकड़ा तोड़कर खाने लगते हैं और उसके साथ ही सब साथी खाना आरंभ करते हैं, केवल भगतसिंह कुछ झिझकते हैं परन्तु झिझक को व्यक्त नहीं होने देते हैं।)

भगतसिंह　(हंसी में दाल के स्वाद को छिपाकर) साथियो, हमारा यह भोज किसी शाही भोज से कम नहीं है। तो क्यों न हम उसी तकल्लुफ और अन्दाज़ से खायें जिससे लखनऊ के नवाब और रईस खाते हैं।

चंद्रशेखर : (हँसकर) जरूर पर हम मजबूत लोग हैं। हमें तो पेट भर खाना है। नजाकत और नफासत में पड़े रहेंगे तो…

आया। खैर जो हुआ सो हुआ। साथी सब भूखे हैं। खाने पीने की चिन्ता करो।

विजयकुमार : पैसा बिल्कुल नहीं है। ओढ़ने बिछाने के नाम पर दो चार फटे पुराने कंबलों के सिवा कुछ भी नहीं है। सब जमीन पर अपनी धोती बिछा कर सो जाते हैं। खाने के लिए चार आने के पैसे देते थे वे भी बंद करने पड़ गये हैं। आटा-दाल मंगाकर टिक्कड़ सेंकने की सोची है। उसके लिए बरतन नहीं। मिट्टी के खप्पर में दाल उबाली है। साथियों से कहिये एक ही चक्कर में बैठ जायं। बिल्कुल अघोरियों का भोजनचक्र !

भगतसिंह : कोई बात नहीं, यह एच. एस. आर. ए. का शिविर ही तो है।

चन्द्रशेखर : (हंसकर) हम तो बाबा अघोरी साधक हैं। खोपड़ी के पात्र में भी खा सकते हैं। *भिन्न-भिन्न को हमने जीत लिया है।*

विजयकुमार : तो एक-दो-तीन सब साथी घेरा बना कर बैठ जायें। खाना आ रहा है।

(सब घेरा बनाकर बैठते हैं। आज़ाद सबसे पहले भगतसिंह सब से बाद में घेरे में शामिल होते हैं। पूरी मटकी का खप्पर जिसमें दाल बनी है, लाकर बीच में रख दिया जाता है उसके पास चपाती रोटियाँ। बिना हल्दी की दाल का रंग मटमैला सा है। उधर ध्यान न देकर हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी के प्रधान सेनापति चंद्रशेखर आज़ाद बड़ी बेतकल्लुफी से रोटी का टुकड़ा तोड़कर खाने लगते हैं और उनके साथ ही सब साथी खाना आरंभ करते हैं, केवल भगतसिंह कुछ झिझकते हैं परन्तु झिझक को व्यक्त नहीं होने देते हैं।)

भगतसिंह : (हंसी से मन के भाव को छिपाकर) साथियो, हमारा यह भोज किसी शाही भोज से कम नहीं है। तो क्यों न हम उसी तकल्लुफ और अन्दाज़ से खायें जिससे लखनऊ के नवाब और रईस खाते हैं।

चन्द्रशेखर : (हंसकर) ज़रूर, पर हम अवधूत लोग हैं हमें तो पेट भर खाना है। नज़ाकत और नफासत में पड़े रहेंगे तो—

भगतसिंह : पर अमीरी अन्दाज़ भी कोई बुरा नहीं है, देखो

(बड़ी नज़ाकत से डिब्बा में से एक बिल्कुल छोटा सा टुकड़ा तोड़ते हैं ऐसे कि कहीं बेचारे डिब्बा का दिल न दुख जाय और अपनी उंगलियों में भी खरोंच न आने पाये ।)

विजयकुमार : वाह क्या कहना है !

(सब हँसते हैं ।)

भगतसिंह : हँसी की बात नहीं है साथियो ! यह तरीका अमीरी संस्कृति और आचार का महत्वपूर्ण अंग है ।

(फिर तोड़े हुए रोटी के टुकड़े को एक खास तकल्लुफ से दाल के अम्बार के पास ले जाते हैं इस तरह कि दाल से छू न जाय ।)

भगवानदास : (खाते खाते उछलकर) खूब, वाजिदअलीशाह को भी मात दे दिया ।

विजयकुमार : कोई नाजनीं देख लेगी तो गज़ब हो जायगा, रणजीत !

(सम्मिलित हास्य)

ममतसिंह : (गंभीर बने रहने का अभिनय करते हुए) देखा ?

(उस पौधे से सिपाही को पूरी नजाकत से हाथ घुमा कर मुँह में रखते हैं और वो बार बार नज़ाकत के साथ मुँह चलाते हैं फिर उसे आवाज़ से लपकते हुए कुल्हड़ के पानी से घूँट घूँट के पीछे उतारने का अभिनय करते हैं।)

सुखदेव : रणजीत, नकल ही करोगे या कुछ खाओगे भी!

ममतसिंह : (चमचुनी करके उठते हुए) वल्लाह, क्या लज़ीज़ खाना है। सुभान अल्लाह!

(रूमाल से मुँह पोंछते और ऐसा प्रदर्शित करते हैं जैसे भर पेट खाकर उठे हों।)

विमलकुमार (आंख मारकर सहास्य) सदके जाऊं तेरी अदा के!

चंद्रशेखर : (भौंहों से पूरी तरह रुष्ट होकर कहते हुए) क्या बन्दरों-जैसी नकल करते हो? यह भी कोई संस्कृति है! हमारा आचार है मौत का वरण। कौन किस तरह मौत के पंजे में पड़ेगा, इसकी नकल करो तो कुछ मज़ा भी आये।

(उठकर गुस्सा करने लगते हैं।)

वैशम्पायन : पंडितजी आखिर सेनापति हैं। अपने अनुरूप ही बात कहेंगे वे। मुझ से कहलाओ तो ये बब्बू और रणजीत कहीं किसी सिनेमा घर में पकड़े जायेंगे। पकड़े जाने पर पुलिस से कहेंगे, पकड़ लिया तो कोई बात नहीं पर पूरा शो तो देख लेने दो।

(सब हंसते हैं।)

गयाप्रसाद : हमें तो यह बताओ कि ये हजरत किस तरह पकड़े जायेंगे?

(रामगुप्त की ओर इशारा करते हैं।)

विजयकुमार : ये तो कहीं खड़े खड़े ऊंघते हुए पकड़े जायेंगे, इसमें कोई शक नहीं।

गयाप्रसाद : क्यों?

विजयकुमार इसलिए कि ये चलते चलते भी ऊंघते हैं। मैं तो कहता हूं इनकी नींद भी हवालात में ही जाकर खुलेगी। तब आंखें मलकर ये पूछेंगे कि क्या सचमुच में पकड़ लिया गया हूं या सपना देख रहा हूं?

भगतसिंह : (कहकहा लगाकर) भई वाह, खूब मजा उतारा है।

(सम्मिलित हास्य)

विजयकुमार : और मोहन चांदनी रात में कहीं पार्क में चांद को निहारते हुए पकड़े जायेंगे सम्भो हम में गिरफ्तार खुद पुलिसवालों से ही पूछ बैठेंगे, लेकिन तुमने चांद भी देखा है ? जरा ऊपर देखो। ओह, कितना प्यारा कितना सुन्दर है वह !

(सब ओर से रहरह कर देर तक कहकहा लगता है)

भगवानदास : मुझे पंडित जी के सिवा किसी की गिरफ्तारी में दिलचस्पी नहीं है।

सुखदेव : मैं बताऊं पंडित जी बुन्देलखंड की पहाड़ियों में शिकार खेलते या चंबल के कगारों में बम परीक्षण करते पकड़े जायेंगे।

विजयकुमार परन्तु किसी सरकार परस्त मित्र के विश्वास घात से ही यह संभव हो सकेगा।

भगवानदास किन्तु वे घायल होकर बेहोशी की हालत में ही पुलिस के हाथ आयंगे। झाँसी के अस्पताल में आकर होश में आने पर ही इन्हें पता चलेगा कि क्या हो गया।

विजयकुमार : और सजा होगी दफा १२१ में फांसी !

(उठकर कुल्ला करने लगते हैं।)

वात्स्यायन : पंडितजी आखिर सेनापति हैं। अपने अनुरूप ही बात कहेंगे वे। मुझ से कहलाओ तो ये बच्चू और गणजीत कहीं किसी सिनेमा-घर में पकड़े जायेंगे। पकड़े जाने पर पुलिस से कहेंगे, पकड़ लिया तो कोई बात नहीं पर पूरा शो तो देख लेने दो।

(सब हँसते हैं।)

गयाप्रसाद : हमें तो यह बताओ कि ये हज़रत किस तरह पकड़े जायेंगे?

(राजगुरु की ओर इशारा करते हैं।)

विजयकुमार : ये तो कहीं खड़े खड़े ऊँघते हुए पकड़े जायेंगे, इसमें कोई शक नहीं।

गयाप्रसाद : क्यों?

विजयकुमार : इसलिए कि ये चलते चलते भी ऊँघते हैं। मैं तो कहता हूँ इनकी नींद भी हवालात में ही जाकर खुलेगी। तब आँखें मलकर ये पूछेंगे कि क्या सचमुच मैं पकड़ लिया गया हूँ या सपना देख रहा हूँ?

भगतसिंह : (कहकहा लगाकर) भई वाह, खूब नक्शा उतारा है।

(सम्मिलित हास्य)

विजयकुमार : और मोहन चांदनी रात में कहीं पार्क में चाँद को निहारते हुए पकड़े जायंगे सम्मोहन में गिरफ्त खुद पुलिसवालों से ही पूछ बैठेंगे, 'लेकिन तुमने चांद भी देखा है ? जरा ऊपर देखो। ओह कितना प्यारा कितना सुन्दर है वह !

(सब ओर से रहरह कर देर तक कहकहा लगता है)

भगवानदास : मुझे पंडित जी के सिवा किसी की गिरफ्तारी में दिलचस्पी नहीं है।

सुखदेव में बताऊं पंडित जी बुन्देलखंड की पहाड़ियों में शिकार खेलते या जंगल के खारों में बम परीक्षण करते पकड़े जायगे।

विजयकुमार परन्तु किसी सरकार परस्त मित्र के विश्वास घात से ही यह संभव हो सकेगा।

भगवानदास : किन्तु मे घायल होकर बेहोशी की हालत में ही पुलिस के हाथ आयंगे। झाँसी के अस्पताल में आकर होश में आने पर ही इन्हें पता चलेगा कि क्या हो गया।

विजयकुमार : और सजा होगी दफा १२१ में फांसी !

(उठकर गुस्सा करने लगते हैं।)

वात्स्यायन : पंडितजी आखिर सेनापति हैं। अपने अनुरूप ही बात कहेंगे वे। मुझ से कहलाओ तो ये बच्चू और रणजीत कहीं किसी सिनेमा घर में पकड़े जायेंगे। पकड़े जाने पर पुलिस से कहेंगे, पकड़ लिया तो कोई बात नहीं पर पूरा शो तो देख लेने दो।

(सब हँसते हैं।)

गयाप्रसाद : हमें तो यह बताओ कि ये हजरत किस तरह पकड़े जायंगे ?

(राजपूत की ओर इशारा करते हैं।)

विजयकुमार : ये तो कहीं खड़े खड़े ऊँघते हुए पकड़े जायंगे, इसमें कोई शक नहीं।

गयाप्रसाद : क्यों ?

विजयकुमार : इसलिए कि ये चलते चलते भी ऊँघते हैं। मैं तो कहता हूँ इनकी नींद भी हवालात में ही जाकर खुलेगी। तब आँखें मलकर ये पूछेंगे कि क्या सचमुच मैं पकड़ लिया गया हूँ या सपना देख रहा हूँ ?

भगतसिंह : (कहकहा लगाकर) भई वाह खूब नक्शा उतारा है।

(सम्मिलित हास्य)

विजयकुमार : और मोहन चाँदनी रात में कहीं पार्क में चाँद को निहारते हुए पकड़े जायंगे सम्मोहन में गिरफ्तार खुद पुलिसवालों से ही पूछ बैठेंगे, 'लेकिन तुमने चाँद भी देखा है ? ज़रा ऊपर देखो। ओह, कितना प्यारा कितना सुन्दर है यह !

(सब ओर से रह रह कर देर तक कहकहा लगता है)

भगवानदास : मुझे पंडित जी के सिवा किसी की गिरफ्तारी में दिलचस्पी नहीं है।

सुखदेव : मैं बताऊं पंडित जी बुन्देलखंड की पहाड़ियों में शिकार खेलते या जंगल के खारों में बम परीक्षण करते पकड़े जायंगे।

विजयकुमार : परन्तु किसी सरकार परस्त मित्र के विश्वास घात से ही यह संभव हो सकेगा।

भगवानदास : किन्तु ये घायल होकर बेहोशी की हालत में ही पुलिस के हाथ आयंगे। झाँसी के अस्पताल में आकर होश में आने पर ही इन्हें पता चलेगा कि क्या हो गया।

विजयकुमार : और सजा होगी दफा १२१ में फांसी।

(उठकर कुरसी पास ले आते हैं।)

वात्स्यायन : पंडितजी आखिर सेनापति हैं। अपने अनुरूप ही बात कहेंगे वे। मुझ से कहलाओ तो ये बब्बू और रणजीत कहीं किसी सिनेमा घर में पकड़े जायेंगे। पकड़े जाने पर पुलिस से कहेंगे, पकड़ लिया तो कोई बात नहीं पर पूरा शो तो देख लेने दो।

(सब हँसते हैं।)

गयाप्रसाद : हमें तो यह बताओ कि ये हजरत किस तरह पकड़े जायगे ?

(राजगुरु की ओर इशारा करते हैं।)

विजयकुमार : ये तो कहीं खड़े खड़े ऊँघते हुए पकड़े जायंगे, इसमें कोई शक नहीं।

गयाप्रसाद : क्यों ?

विजयकुमार : इसलिए कि ये चलते चलते भी ऊँघते हैं। मैं तो कहता हूँ इनकी नींद भी हवालात में ही जाकर खुलेगी। तब आँखें मलकर ये पूछेंगे कि क्या सचमुच मैं पकड़ लिया गया हूँ या सपना देख रहा हूँ ?

भगतसिंह : (कहकहा लगाकर) भई वाह खूब नकशा उतारा है।

(सम्मिलित हास्य)

विजयकुमार : और मोहन चांदनी रात में कहीं पार्क में चाँद को निहारते हुए पकड़े जायगे सम्भो हम में गिरफ्तार खुद पुलिसवालों से ही पूछ बैठेंगे, लेकिन तुमने चाँद भी देखा है ? जरा ऊपर देखो। ओह, कितना प्यारा कितना सुन्दर है वह !

(सब ओर से रहरह कर देर तक कहकहा लगता है)

भगवानदास : मुझ पंडित जी के सिवा किसी की गिरफ्तारी में दिलचस्पी नहीं है।

सुखदेव : मैं बताऊं पंडित जी बुन्देलखंड की पहाड़ियों में शिकार खेलते या जंगल के बागों में बम परीक्षण करते पकड़े जायंगे।

विजयकुमार परन्तु किसी सरकार परस्त मित्र के विश्वास घात से ही यह संभव हो सकेगा।

भगवानदास : किन्तु ये घायल होकर बेहोशी की हालत में ही पुलिस के हाथ आयंगे। झाँसी के अस्पताल में जाकर होश में आने पर ही इन्हें पता चलेगा कि क्या हो गया।

विजयकुमार : और सजा होगी दफा १२१ में फांसी !

(उठकर कुल्ला करने लगते हैं।)

वैशम्पायन : पंडितजी आखिर सेनापति हैं। अपने अनुरूप ही बात कहेंगे वे। मुझ से कहलाओ तो ये बच्चू और रणजीत कहीं किसी सिनेमा-घर में पकड़े जायेंगे। पकड़े जाने पर पुलिस से कहेंगे, पकड़ लिया तो कोई बात नहीं पर पूरा शो तो देख लेने दो।

(सब हंसते हैं।)

गयाप्रसाद : हमें तो यह बताओ कि ये हजरत किस तरह पकड़े जायेंगे?

(राजगुरु की ओर इशारा करते हैं।)

विजयकुमार : ये तो कहीं खड़े खड़े ऊँघते हुए पकड़े जायेंगे, इसमें कोई शक नहीं।

गयाप्रसाद : क्यों?

विजयकुमार : इसलिए कि ये चलते चलते भी ऊँघते हैं। मैं तो कहता हूँ इनकी नींद भी हवालात में ही जाकर खुलेगी। तब आँखें मलकर ये पूछेंगे कि क्या सचमुच मैं पकड़ लिया गया हूँ या सपना देख रहा हूँ?

भगतसिंह : (कहकहा लगाकर) भई वाह खूब नक्शा उतारा है।

(सम्मिलित हास्य)

विजयकुमार : और मोहन चांदनी रात में कहीं पार्क में चाँद को निहारते हुए पकड़े जायगे सम्मोहन में गिरफ्त खुद पुलिसवालों से ही पूछ बैठेंगे, 'लेकिन तुमने चांद भी देखा है ? ज़रा ऊपर देखो। ओह, कितना प्यारा कितना सुन्दर है यह !

(सब ओर से रहरह कर देर तक कहकहा लगता है)

भगवानदास : मुझे पंडित जी के सिवा किसी की गिरफ्तारी में दिलचस्पी नहीं है।

सुखदेव : मैं बताऊं पंडित जी बुन्देलखंड की पहाड़ियों में शिकार खेलते या चबल के खारों में बम परीक्षण करते पकड़े जायगे।

विजयकुमार परन्तु किसी सरकार परस्त मित्र के विश्वास घात से ही यह संभव हो सकेगा।

भगवानदास : किन्तु ये घायल होकर बेहोशी की हालत में ही पुलिस के हाथ आयंगे। झाँसी के अस्पताल में जाकर होश में आने पर ही इन्हें पता चलेगा कि क्या हो गया।

विजयकुमार : और सजा होगी दफा १२१ में फांसी !

चंद्रशेखर : धत्तेरे की।

भगतसिंह : (विनोदपूर्वक) और पंडित जी आपके लिए दो रस्सों की जरूरत पड़ेगी। एक गले के लिए और दूसरा इस भारी भरकम शरीर के लिए।

(शरीर में उंगली चुभोते हैं।)

चंद्रशेखर : इधर सुनो फांसी चढ़ने का शौक मुझे नहीं। वह तुम्हें ही मुबारक हो। रस्सा वस्सा और फन्दा वन्दा तुम्हारे ही गले के लिए है। मेरा यह बमतुल बुखारा जब तक पास है तब तक किसने मां का दूध पिया है जो आजाद को जिन्दा पकड़ ले जाये।

(अपना माउजर पिस्तौल ऊपर उठाते हैं। 'वाहवाह' के साथ हास्य का फव्वारा छूटता है।)

भगतसिंह (हंसकर) पंडित जी दुर्वासा बनने से कोई फायदा नहीं। जो होगा वह तो होगा ही। उसका कोई गम नहीं। अब जरा चलकर ऊपर भी संभालें। वक्त बहुत थोड़ा रह गया है।

चन्द्रशेखर : उधर सब ठीक है। अतीमबाबू अपने काम पर मुस्तैद हैं। फिर भी चलो एक बार देख आयें। बच्चू, इस बीच कोई बात हो तो वहीं खबर देना।

(जयन्तसिंह और बाबाव का प्रस्थान। उनके पीछे द्वार बंद करने के लिए विजय कुमार का आना। बाहर किसी संदिग्ध व्यक्ति को देखकर कुछ देर तक वहीं रुक जाना।)

गयाप्रसाद : अरे भाई कैलास आज अभियान से पहले अपनी ताकत वाली दवाई तो निकाल। ज़रा देखें तो कैसी है ?

वैशंपायन : एकदम नंबर वन ?

सुखदेव : यह तो शराब होती है। उसका यहां क्या काम ?

भगवानदास : कुछ भी हो यह ताकत की दवा है।

सुखदेव : लेकिन तुम उसे कहां से लाये ?

भगवानदास पंडित जी से चार रुपये लेकर लाया हूं।

सुखदेव : तो तुम उसे पीते हो ?

भगवानदास हां सुबह शाम।

चंद्रशेखर : धत्तेरे की।

भगतसिंह : (विनोदपूर्वक) और पंडित जी आपके लिए दो रस्सों की जरूरत पड़ेगी। एक गले के लिए और दूसरा इस भारी भरकम शरीर के लिए।

(शरीर में उंगली चुभोते हैं।)

चंद्रशेखर : इधर सुनो फांसी चढ़ने का शौक मुझे नहीं। वह तुम्हें ही मुबारक हो। रस्सा बस्ता और फंदा सदा तुम्हारे ही गले के लिए है। मेरा यह बमतुल बुखारा जब तक पास है तब तक किसने मां का दूध पिया है जो आजाद को जिन्दा पकड़ ले जाये।

(अपना माउजर पिस्तौल ऊपर उठाते हैं। 'वाहवाह' के साथ हास्य का फव्वारा छूटता है।)

भगतसिंह (हंसकर) पंडित जी गुस्सा करने से कोई फायदा नहीं। जो होगा वह तो होगा ही। उसका कोई गम नहीं। अब जरा चलकर उधर भी संभालें। वक्त बहुत थोड़ा रह गया है।

चंद्रशेखर : उधर सब ठीक है। अतोलबाबू अपने काम पर मुस्तैद हैं। फिर भी चलो एक बार देख आयें। बच्चू, इस बीच कोई बात हो तो वहीं खबर देना।

(जयसिंह और बाबाराव का प्रस्थान। उनके पीछे द्वार बंद करने के लिए विजय कुमार का आना। बाहर किसी संदिग्ध व्यक्ति को देखकर कुछ देर तक वहीं रुक जाना।)

राधाप्रसाद : अरे भाई कैलास, आज अभियान से पहले अपनी ताकत वाली दवाई तो निकाल। जरा देखें तो कैसी है?

वैशंपायन : एकदम नंबर वन?

सुखदेव : यह तो शराब होती है। उसका यहां क्या काम?

भगवानदास : कुछ भी हो यह ताकत की दवा है।

सुखदेव : लेकिन तुम उसे कहां से लाये?

भगवानदास पंडित जी से चार रुपये लेकर लाया हूं।

सुखदेव : तो तुम उसे पीते हो?

भगवानदास हां सुबह शाम।

चंद्रशेखर : धत्तेरे की।

भगतसिंह : (विनोदपूर्वक) और पंडित जी आपके लिए दो रस्सों की जरूरत पड़ेगी। एक गले के लिए और दूसरा इस भारी भरकम शरीर के लिए।

(शरीर में उंगली चुभोते हैं।)

चंद्रशेखर : इधर सुनो फांसी चढ़ने का शौक मुझे नहीं। वह तुम्हें ही मुबारक हो। रस्सा वस्सा और फंदा वंदा तुम्हारे ही गले के लिए है। मेरा यह बमतुल दुलारा जब तक पास है तब तक किसने माँ का दूध पिया है जो आजाद को जिन्दा पकड़ ले जाये।

(अपना माउजर पिस्तौल ऊपर उठाते हैं। 'वाहवाह' के साथ हास्य का फव्वारा छूटता है।)

भगतसिंह (हँसकर) पंडित जी दुर्वासा बनने से कोई फायदा नहीं। जो होगा वह तो होगा ही। उसका कोई गम नहीं। अब जरा चलकर ऊपर भी सँभालें। वक्त बहुत थोड़ा रह गया है।

चन्द्रशेखर : उधर सब ठीक है। असीमबाबू अपने काम पर मुस्तैद हैं। फिर भी चलो एक बार देख आयें। बच्चू इस बीच कोई बात हो तो वहीं खबर देना।

(चन्द्रशेखर और आज़ाद का प्रस्थान। उनके पीछे द्वार बंद करने के लिए विजय कुमार का जाना। बाहर किसी संदिग्ध व्यक्ति को देखकर कुछ देर तक वहीं रुक जाना।)

गयाप्रसाद : अरे भाई कैलास आज अभियान से पहले अपनी ताकत वाली दवाई तो निकाल। जरा देखें तो कैसी है ?

वैशंपायन : एकदम नंबर वन ?

सुखदेव : यह तो शराब होती है। उसका यहां क्या काम ?

भगवानदास : कुछ भी हो यह ताकत की दवा है।

सुखदेव : लेकिन तुम उसे कहां से लाये ?

भगवानदास पंडित जी से चार रुपये लेकर लाया हूं।

सुखदेव : तो तुम उसे पीते हो ?

भगवानदास हां सुबह शाम।

गयाप्रसाद : अकेले ही अकेले ताकतवर बन जाओगे तो ठीक नहीं। निकालो हम लोग भी देखें। आज ताकत की शायद जरूरत पड़ जाय।

भगवानदास : तुम लोगों ने देख ली है तो अब नहीं मानोगे।

(जाकर बोतल ले आते हैं। सब थोड़ी थोड़ी चखते हैं।)

सदाशिव : (होठों से लगाकर पीक देते हैं।) मैं नहीं पीता।

गयाप्रसाद : लाओ, हलाहल का प्याला इधर दो। मैं पीता हूँ।

(सदाशिव की छोड़ी हुई मात्रा भी पी जाते हैं। विजयकुमार प्रवेश करते हैं।)

भगवानदास : (बोतल में काग लगाते हुए) अब किसी को न दूँगा। तुम लोग तो उसे खतम करने पर तुले हो।

विजयकुमार : भैरवी चक्र की उपासना तो नहीं कर रहे हो?

सदाशिव : यह कैलास एकमात्र नर्मदा जल पीता है। कहता है तापस की दवा है। पंडित के आदेश से लाया है।

विजयकुमार : क्या सच लाओ देखूँ ।

(बोतल लेने के लिए हाथ बढ़ाते हैं । कैलाश बोतल उन्हें पकड़ा देता है ।)

भगवानदास : देख सोचिये पर खतम न कर डालना ।

विजयकुमार : (कुपित होकर) मैं पंडित जी से कहता हूँ । यह सुसंस्कृत और चरित्रवान क्रांतिकारियों का अड्डा है या कलवरिया ? तुम लोग एच एस आर. ए के त्यागनिष्ठ सिपाही हो या शराबी ? अभी तलाशी हो जाय और हम पकड़े जायं तो कितनी बदनामी हो ?

(सीढ़ियों से जाना)

सदाशिव : इसका परिमार्जन होना चाहिए ।

सुखदेव : लाओ बोतल इधर दो । मैं उसे नाली में फेंक दूं वरना पंडितजी को जानते हो ।

भगवानदास : हम कोई नशे के लिए थोड़े ही पीते हैं ।

(अकड़कर बैठता है ।)

सदाशिव राव : ताकत की दवा के तौर से लेते हैं ।

राजगुरु : मुझे तो कोई ताकत-वाकत लगती नहीं ।

गयाप्रसाद : एक बार पीकर ही पहलवान होना चाहते हो ?

राजगुरु : ऐसी ऐसी दवाएं हैं कि दूर से देखकर ही

आदमी सौ हार्स पावर की गति से काम करने लगे।

सदाशिव राव : अच्छा !

राजगुरु : और नहीं तो क्या।

गयाप्रसाद : मैंने तो ऐसी किसी दवा का नाम नहीं सुना।

राजगुरु : तो तुम्हें डाक्टर किसने बना दिया ?

गयाप्रसाद : किसने बना दिया बताऊं ?

राजगुरु : हां किसने बना दिया जो इतना भी नहीं जानते।

सुखदेव : (गयाप्रसाद से) अजी किसके मुंह लगे हो ?

राजगुरु : (तमक कर) तो मैं मुंह लगाने के काबिल भी नहीं हूं ?

भगवानदास : अजी हो मैं कहता हूं हो। ये तो नाकन्दरे हैं। तुम्हारे जैसा हुस्न तो मैंने कहीं देखा ही नहीं।

(सब हंस पड़ते हैं।)

राजगुरु : बाबाम बैसास।

(भगवानदास की पीठ ठोंकता है। भाबार,

भगतसिंह और विजयकुमार प्रवेश करते हैं।)

चंद्रशेखर : कैलास, यह क्या सुन रहा हूं ?

भगतसिंह　हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी की छावनी में शराब के दौर !

(बनावटी गंभीरता को बनाये रखने का भरसक प्रयत्न करते हैं।)

चंद्रशेखर : क्या तुम शराब पीकर हुरदंग मचाने के लिए यहां आये हो ?

भगतसिंह　तुम्हें पता नहीं हम लोग यहां मौत के साये में रह रहे हैं ? जिस दिन क्रांति को हमने वरण किया है उस दिन से शारीरिक विलास के सभी साधनों से मुंह मोड़ लिया है। जनता में क्रांतिकारियों का इसीलिए मान है कि वे वैयक्तिक सुखों को लात मार कर प्राण होमने को हर समय तैयार रहते हैं। दुश्मन को इस कमजोरी का पता लग जाय तो वह हमें बदनाम कर डाले।

चंद्रशेखर　(पैर पटककर) कैलास मैं तुमसे उत्तर चाहता हूं।

भगवानदास : पंडित जी, यह वही एक्स्ट्रा नंबर वन है जिसके लिए आपने चार रुपये दिये थे। मैं क्या जानता था कि इससे इतना बावेला मचेगा ?

भगतसिंह : (हँसकर) अरे वाह पंडितजी आप खुद ही तो रुपये देते हैं और फिर नाराज़ भी होते हैं !

चंद्रशेखर : (दुखी होकर) तो मैंने क्या यह कहा था कि शराब ले आना ? (भगवानदास से) कमाल उस बोतल को ले आयो। उसे फोड़ देना ही ठीक होगा।

(कमाल बोतल लाकर देता है।)

भगतसिंह : बोतल को फोड़िये नहीं पंडितजी ! यह चीज़ बुरी नहीं है। इसका इस्तेमाल हमारे यहाँ वर्जित है। हम अभियान पर चल रहे हैं। उसमें ऐसी उत्तेजक चीज़ की भी आवश्यकता पड़ सकती है। न जाने हम में से कौन कब घायल हो जाये। इसके प्रभाव से मुर्दा भी दो चार कदम जा सकता है।

चंद्रशेखर : तो ?

भगतसिंह इसे रख लीजिये।

चंद्रशेखर (दयाप्रसाद से) डाक्टर साहब तो यह आपके पार्श्व में रही। इसे रासायनिक वस्तुओं के भंडार में पहुंचा दीजिये।

(दयाप्रसाद बोतल ले लेते हैं।)

भगतसिंह : (भगवानदास को एक ओर ले जाकर धीमे स्वर में) कैलास यह अच्छा नहीं हुआ। आगे से हम लोगों को ध्यान रखना चाहिए कि हमारी छोटी से छोटी भूल की बड़ी से बड़ी आलोचना होगी। अपनी निजी बदनामी की बात होती तो बड़ी बात नहीं थी परन्तु यह क्रांतिकारियों की बदनामी होगी क्रांतिप्रयास की बदनामी होगी। हम सब जिस महान उद्देश्य के लिए जीवन का दांव लगा रहे हैं उसकी बदनामी होगी। सब करा कराया काम मटियामेट हो जायगा। शहीदों का अब तक का बलिदान कलंकित हो जायगा।

भगवानदास मैं अपनी भूल के लिए बहुत लज्जित हूं।

भगतसिंह भूल सब से होती है भाई। मैं क्या भूल नहीं करता? तुमने उसे मान लिया, इसमें

तुम्हारी बहादुरी है, शोभा है। तुम आगे इस तरह की भूलों से बच सकोगे।

भगवानदास : इसका परिमार्जन?

भगतसिंह : परिमार्जन तो होगया। उसका अफसोस मत रखो। उसे भूल जाओ। आज हम बहुत बड़े अभियान पर चल रहे हैं। जोगेश दादा को पुलिस के पहरे से छुड़ाना है। हमें पूरे उत्साह और धैर्य के साथ काम करना होगा। साथी मोहन को स्टेशन पर खबर लेने के लिए भेजा जा रहा है।

(सुखदेवराज उनके आने से ही निकलकर बाहर जाते हैं।)

भगवानदास : आप की बातों से मेरा मन साफ होगया।

भगतसिंह : तो आओ, हम दोनों इसी खुशी में कुछ देर पंजा लड़ायें। पंजा लड़ाने में सुना है तुम एक ही हो।

भगवानदास : (हंसकर) थोड़ा बहुत आता है।

भगतसिंह : तो लाओ हाथ।

भगवानदास : आया।

(हाथ बढ़ा देते हैं। भगतसिंह पंजे में

पंजा फंसा देते हैं और देर तक दोनों जोर करते रहते हैं। धीरे धीरे सब साथी आगे बढ़ आते हैं और उनका पंजा लड़ाना देखते हैं। भगतसिंह कोशिश करते हैं पर भगवानदास का पंजा नहीं मोड़ पाते।)

भगतसिंह : (पंजा निकालकर) हनुमानजी देखने में ही बौने हैं। पंजा मगर फौलाद का है।

(सब हंसते हैं। भगवानदास भी उनके हास्य में योग देते हैं। एक विनोद का वातावरण बन जाता है। तभी बटुकेश्वर दत्त तीव्रता से प्रवेश करते हैं।)

चंद्रशेखर मोहन क्या खबर है?

बटुकेश्वरदत्त दस बजे की बात गलत है वे सात बजे की गाड़ी से ही आ रहे हैं।

चंद्रशेखर : इसका मतलब सारी योजना बेकार!

भगतसिंह (घड़ी देखकर) अभी पौन घंटा है।

चंद्रशेखर इतने में क्या हो सकता है?

भगतसिंह जितना हो सकता है किया जाय। और यह भी हो सकता है कि खबर गलत हो।

चंद्रशेखर तो मोहन वापस जाय और निगाह रक्खे। अगर सात बजे ही आ रहे हों तो आगरा के बजाय कामपुर स्टेशन पर—

भगतसिंह : हाँ, यहाँ कई घंटे का वक्त मिल जायगा।

बटुकेश्वर : यहाँ मकान का तत्काल प्रबंध हो सकेगा?

भगतसिंह : किया जायगा। मोहन और कुछ साथी उसी गाड़ी से रवाना हों। कुछ बाद बाकी एक्सप्रेस से।

(बटुकेश्वरदत्त परामर्श करके लौट जाते हैं। सामने के साथियों में जल्द जमा फैल जाती है। सब जल्दी जल्दी तैयारियों में लगते हैं।)

पर्दा

रोते हाथों से मुँह ढक लिया था। याद है ?

भगतसिंह : याद है। दादा को आँखों के आगे देखकर भी हम कुछ न कर सके। यह बरदाश्त से बाहर था।

भगवतीचरण : हमारी बेबसी की कहानी!

सुखदेव : ऐसा ही मौका था। मकान भी नहीं हाथ आ सका। जल्दी में काम बनता नहीं बिगड़ता ही है।

भगतसिंह उसी निराशा में डेयरी का धंधा गले आ पड़ा। पिताजी का अरसे से आग्रह था।

भगवतीचरण लेकिन अच्छा चला तो ?

भगतसिंह : चला तो खूब।

सुखदेव : फिर ?

भगतसिंह : फिर नया धंधा थोड़े ही करना था। वह तो एक पड़ाव था। एक नया अनुभव हुआ, आत्मविश्वास जमा।

सुखदेव और इस का नाम भी अब नहीं रहा।

भगतसिंह : वह कैसे रहता ? इसी पर पिताजी बिगड़ गये और बिगड़ना ही था।

भगवतीचरण : बस और केसरी का स्वयंवर हुआ था।

भगतसिंह : हाँ एक को ही तो वरण करना था।

सुखदेव : यथा यथा चल रहा। उसी को रहना था।

भगवतीचरण : वही रहेगा। हम नहीं रहेंगे, तुम नहीं रहोगे। रणजीत नहीं रहेगा तब भी दल तो रहेगा।

भगतसिंह : उसीको रहना चाहिए। उसके साथ हम अमर हैं।

सुखदेव : उसका विस्तार देखकर आज अचरज होता है। एक जाल सा बुन गया है। बिजली के वेग से काम हो रहा है।

भगवतीचरण : कुछ लोगों के दिल धड़क उठे हैं।

भगतसिंह : लो दिल के दौरे के दो मरीज यहीं आगये।

(दो आनेवालों की ओर इंगित करते हैं। आगन्तुक वयोवृद्ध हैं। वे इन लोगों को बिना देखे ही पास पड़ी खाली बेंच पर आकर बैठ जाते हैं। तीनों साथी बातचीत बंद करके घास में आराम से लेट जाते हैं। आगंतुकों ने अपनी अपूर्ण बातचीत का सिलसिला जारी रखने के लिए ही शायद

पड़ता है, इस एकांत काली बैंच की तरफ़
की है। उनमें इस प्रकार बातचीत होती
है।)

पहला : पता नहीं क्या हो रहा है?

दूसरा आसार अच्छे नहीं हैं।

पहला पचास साल तक नेतृत्व किया है।

दूसरा इसमें क्या सन्देह।

पहला और कल का छोकरा भगतसिंह

दूसरा दो दिन में ही नेताओं के आसन हिलाने की कोशिश कर रहा है।

पहला वह मूर्ख है।

दूसरा वह आवारागर्द है।

पहला वह इस हिन्दुस्तान में क्रांति के सपने देख रहा है।

दूसरा वह अपनी कब्र खोद रहा है।

पहला थोड़े से बेसमझ नौजवानों को गुमराह करने से इतने बड़े देश में क्रांति हुई है?

दूसरा जहाँ देखो वहाँ 'नौजवान भारत सभा' जहाँ देखो वहाँ…

पहला और सरकार उसे ढील दे रही है।

पहला : हाँ, सरकार तटस्थ दर्शक देर तक नहीं रह सकती ऐसा अनुमान है।

दूसरा : और यह व्याख्याता भगवतीचरण भी क्या कोई बड़ा विप्लववादी है ?

पहला : यह मत पूछो। एक आग है तो दूसरा अंगारा।

दूसरा : सब एक ही धातु के बने हैं।

पहला : परन्तु सबका भाग्य भंवर में झूल रहा है।

दूसरा : अच्छा ही है चलो चलें। कार में बातें करते चलेंगे।

(उठकर चल देते हैं। सुखदेव भी उठने का प्रयत्न करता है। भगतसिंह उसे पकड़ लेते हैं।)

सुखदेव : रोको मत रणजीत मैं इन नेता नामधारियों को पहज्जुम रसीद कर आऊँ। अभी दो मिनट में वापस आता हूँ।

भगतसिंह : नहीं शान्त रहो। तुम्हें बहुत बड़े बड़े काम करने हैं।

भगवतीचरण : इन नरक के कीड़ों को मारने से क्या होगा भाई ?

भगतसिंह : ये तो खुद मरे हुये हैं। इनका जमीर मर चुका है। इनकी आत्मा मर चुकी है। ये शरीर का बोझ मात्र ढो रहे हैं।

भगवतीचरण : बम और पिस्तौल से मरने का सौभाग्य सिर्फ शहीदों को मिलता है।

भगतसिंह : जो मर कर भी अमर होते हैं।

(सुखदेव शांत हो जाता और अपना रिवाल्वर जेब में डाल लेता है।)

भगवतीचरण : इससे हमें एक सबक मिला।

सुखदेव : यही कि देश का नेतृत्व भी प्रतिक्रियावादी तत्वों के हाथ में है।

भगतसिंह : इस स्थिति को महाक्रांति ही बदल सकती है।

भगवतीचरण : और वह महाक्रांति जन-सहयोग से ही सफल हो सकती है।

भगतसिंह : उसी के लिए हमारे प्रयास हैं।

सुखदेव : इस समय पैसे के बिना —

भगतसिंह : तो चलो आज उसी का प्रबंध करें।

भगवतीचरण : परन्तु यह हो हल्ला सा कैसा ?

सुखदेव : (दूर सड़क की ओर देखकर) लोगों में भगदड़ सी पड़ रही है।

भगतसिंह : मैं देखता हूँ।

(जल्दी जल्दी पेड़ पौधों को फांदते हुए पार्क के बाहर जाते हैं और पता करके वापस लौट आते हैं।)

भगवतीचरण : रणजीत क्या माजरा है ?

भगतसिंह : किसी बदमाश ने रामलीला में बम फेंक दिया है।

सुखदेव : ऐं, रामलीला में बम !

भगवतीचरण : रामलीला में बम !

भगतसिंह : कहते हैं हताहतों की संख्या सैकड़ों है !

सुखदेव : तो चलो देखें। वहां हमारी मदद की जरूरत पड़ सकती है।

भगवतीचरण : नहीं हमें घटनास्थल से दूर ही रहना चाहिए।

भगतसिंह : अफसोस आफत के समय हम अपने लोगों की मदद भी नहीं कर सकते।

भगवतीचरण : यही हमारी बेबसी है।

सुखदेव : पर यहां ठहरने का तो कोई मतलब नहीं।

भगतसिंह : रघुनाथ का इन्तजार था पर वह या तो चलते चलते ही रास्ते में सो गया होगा या बम फटने की जगह जा खड़ा हुआ होगा।

भगतसिंह : इसे कौन नहीं जानता।

(सबका मंच से बाहर चले जाना। दूसरी ओर से एक युवती के साथ दो युवकों का आना। वे थके हुए हैं और शहर से आ रहे हैं। आते ही तीनों घास पर बैठ जाते हैं।)

युवती : क्रांतिकारियों का यह काम तो मुझे कतई पसंद नहीं आया।

दूसरा युवक : तुम्हारा ख्याल है कि यह काम किसी क्रांतिकारी का है?

युवती : ऐसा ही तो लोग कह रहे थे।

दूसरा युवक : लोगों की यह गलत धारणा है कि बमों का प्रयोग केवल क्रांतिकारी ही करते हैं।

युवती : तो ?

दूसरा युवक : बम तो ऐसी चीज़ है कि उसे कोई भी फेंक सकता है।

पहला युवक : हिन्दू मुसलमानों के धार्मिक विग्रह को देखते हुये—

युवती : यह काम किसी मुस्लिम का हो सकता है।

दूसरा युवक : कुछ नहीं कहा जा सकता। कम से कम क्रांतिकारियों के नाम पर उसे थोपना तो

[अंगारों की मौत

पहला युवक : ये सभी उपासी बातें हैं और हमारे लिए बेकार हैं।

(युवती की आँखों में बेकरारी से भाँकता है।)

युवती (मुस्कराकर) मैं नाहक ही इस पचड़े को ले बैठी।

पहला युवक : (उसी तरह रूप-सुधा का पान करते हुए) पर इतना मैं कह सकता हूँ कि लाहौर का कोई भी आयोजन अब खतरे से खाली नहीं रह गया है।

युवती : परन्तु अपने प्यार का आयोजन तो निष्कंटक चलता रहेगा।

(और वे हँसती है।)

दूसरा युवक (चिन्ता में निमग्न होने से ध्यान नहीं और था पहुँचा था उससे भी ऊपर) ऐं क्या कहा ?

युवती : (इसीसे कटाक्ष से पहले युवक को आहत करने के बाद) कह रही हूँ कि कोई गीत सुनाओ न।

दूसरा युवक गीत नहीं मसिया।

पहला युवक मसिया नहीं वही क्रांतिकारियों की प्रिय गजल सुनाओ न।

दूसरा युवक : लो सुनो।

(उत्साह के साथ गुनगुनाता हुआ गाने लगता है।

शहीदों की चिताओं पर जुड़ेंगे हर बरस मेले।

वतन पर मरने वालों का यही बाक़ी निशाँ होगा।

(ज़ोर ज़ोर से कड़ियों को दुहराता है। निस्तब्ध वायुमंडल में स्वर-लहरी गूंजकर रह जाती है। साथी 'वाह वाह' करते रहते हैं।)

पहला युवक : मालूम पड़ता है तुम क्रांतिकारियों के दल तक पहुँचते हो ?

दूसरा युवक : दल तक नहीं दिल तक।

युवती : (उछलकर) शाबाश, शाबाश !

पहला युवक : दिल तक पहुँचने में लेकिन लाख रुकावटें हैं।

युवती : (हँसकर) पर कोई तकरार तो नहीं है। तकरार भी हो तो दिल तक पहुँचना मुझे आता है।

(झुककर पहले युवक के सीने से जा लगती है।)

दूसरा युवक : तुम्हारा प्रेम भी क्रांति के पथ पर चल पड़ा है।

(इसी समय सब बत्तियाँ बुझ जाती हैं अँधेरे में केवल उनकी सिसकियाहट सुनाई पड़ती रहती है।)

पर्दा

अंक दूसरा

दृश्य पहला

लाहौर। क्रांतिकारियों का शिविर

१९२८ के दिसम्बर का मध्य। दिन का तीसरा पहर

(साइमन कमीशन के बहिष्कार के जुलूस का नेतृत्व करते हुए पुलिस के लाठी प्रहार से आहत लाला लाजपतराय की मृत्यु सत्रह दिन के अन्दर हो गई। इससे देश भर में भयानक तूफान आ गया। इसी सिलसिले में अपना कदम उठाने के लिए एच. एस. आर. ए. की बैठक बुलाई गई है। दल के प्रायः सभी प्रमुख सदस्य आ पहुँचे हैं। आजाद, भगतसिंह, विजयकुमार, राजगुरु, भगवती चरण, सुखदेव, जयगोपाल, भगवानदास आदि।)

आजाद : एक ज्वालामुखी फूट पड़ा है।

विजयकुमार : नींद में सोया देश हिल उठा है।

भगतसिंह : बासंतीदेवी के मुँह से निकले आह्वान के शब्द हमें बुला रहे हैं।

आजाद : गजब के शब्द हैं।

विजयकुमार : उन्हें सुनकर भला कौन पीछे रह सकता है ?

आजाद : साक्षात् दुर्गा बोल उठी हैं।

राजगुरु : सुनें तो क्या कहा है उन्होंने ?

भगतसिंह : उन्होंने कहा है मैं पूछती हूँ देश का यौवन और पुरुषार्थ आज जिंदा है या मर गया ? यदि जिंदा है तो क्या वह इस अपमान और ग्लानि का अनुभव करता है ? मैं भारत की एक नारी अपने युवकों से स्पष्ट उत्तर चाहती हूँ। पूर्व इसके कि लाला जी की चिता भस्म ठंडी हो भारत का युवक समाज सामने आये और जवाब दे। मैं जवाब चाहती हूँ। मैं उत्तर चाहती हूँ। भारत के पतीस कोटि नरनारियों से वंदित और पूजित उस पवित्र शरीर को उन कमीने और हिंसक हाथों ने किस तरह छूने का साहस किया ? और वे अब तक मस्त बने हैं, इस बात का मैं जवाब चाहती हूँ।

राजगुरु : माँ वासन्ती, तुमने ठीक कहा है।

यवानदास : इस आह्वान का उत्तर देने का दायित्व हम सब पर है।

आजाद हम इसका उत्तर देंगे।

भगतसिंह हम निष्ठुर नहीं हैं। हम मानव-जीवन का मूल्य समझते और उसकी महत्ता स्वीकार करते हैं। हम उसके सौंदर्य से अभिभूत हैं और उसे प्यार भी करते हैं परन्तु राष्ट्रीय अपमान का प्रतिशोध बराबर लिया जायगा उसमें किसी तरह की कसर न रहेगी। तभी हम देवी बासन्ती के आह्वान का उचित उत्तर दे सकेंगे।

सुखदेव : इस निर्णय के साथ हम बहुत बड़ा मोर्चा खोल रहे हैं। यह न भूल जाना चाहिए।

भगवतीचरण : एक एस आर ए का मोर्चा दुश्मन से एक न एक दिन तो लगना ही है। और इससे अनुकूल अवसर भी शायद ही कभी मिलेगा।

आजाद : दुनियां को हम दिखा देना चाहते हैं कि भारत राष्ट्रीय अपमान चुपचाप सहन नहीं कर सकता।

राजगुरु : लाला जी का बदला तो मैं अकेला ही ले सकता हूँ। एच. एस. आर. ए. का सोमी इस छोटे से काम के लिए सोचने की क्या जरूरत है?

(सब राजगुरु के मुँह की ओर देखने लगते हैं।)

भगतसिंह : (मुस्कराकर) रघुनाथ ठीक कहता है परन्तु इस समय मंजे हुए सिपाहियों की हमारे लिए बड़ी कीमत है। हम किसी एक को भी बिना पूरी चौकसी के खतरे में नहीं झोंक सकते।

सुखदेव : यह तो युद्ध का श्रीगणेश होगा।

भगवतीचरण : असली युद्ध तो न जाने कब तक चलेगा।

राजगुरु : तभी तो कहता हूँ कि मुझे पिस्तौल और तीन कारतूस दे दो। अपने शिकार के लिए तो मुझे सिर्फ एक की ही जरूरत है। दो वक्त पर आत्मरक्षा में काम आ सकते हैं।

भगवानदास : यदि किसी एक को ही भेजना हो तो ऐसे पवित्र काम के लिए कई उम्मेदवार हो सकते हैं।

राजगुरु : (कुछ चिंतित होकर) समझ में नहीं आता, क्यों मुझे यह भार सौंपने में शंका हो रही है ? मैं कोतवाली में घुसकर अपना काम करूंगा और आध घंटे में यहां आकर उपस्थित हो जाऊंगा।

आज़ाद : शंका का सवाल नहीं है। हमने तो उसे उसी समय मरा हुआ समझ लिया था जब लालाजी की छाती पर वार करके उसके द्वारा नाम पूछने पर बिना बताये मुंह छिपाकर वह भागकर भीड़ में घुस गया था।

भगतसिंह : मैंने उसी समय कहा था 'मत बता तू अपना नाम पर वह दिन दूर नहीं है जब तेरा नाम गली गली मारा मारा फिरेगा।

आज़ाद : अब जब कि इस काम को एच एस आर ए ने अपने ऊपर ले लिया है तो यह पूरे फौजी कायदे से होना चाहिए।

भगतसिंह : हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी ने उसे मौत की सजा दी है। हम बेखटके मुझे आज उसे गोली का निशाना बनायेंगे

और भारत की कोटि कोटि जनता के नाम एक संदेश प्रसारित करेंगे। ताकि लोगों को गलतफहमी न हो और सरकार को बेकसूरों को सताने और फंसाने का मौका न मिले।

आजाद : सब कुछ राष्ट्रीय गौरव और सम्मान के अनुरूप होगा।

राजगुरु : तब मेरा कोई आग्रह नहीं है।

आजाद : दल की नीति और सुरक्षा के विचार से अभियान का समय और कार्यक्रम उन लोगों को बता दिया जायगा जिन्हें इसमें सक्रिय रूप से भाग लेना है। शेष सब साथियों और दल की शाखाओं को उस क्षण के लिए तैयार रहना होगा जब एक हृदकंप से जमीन और आसमान हिल उठने की स्थिति उत्पन्न हो जायगी।

भगतसिंह : चलो काम की बात खत्म हुई, अब…

आजाद : (हँसकर) अब दस्तरखान बिछेगा और खूब पेट-पूजा होगी।

(एक चक्कर की चीखें पर पहले से

मगाई हुई डबल रोटी और गुड़ लेकर खाने बैठते हैं।)

भगतसिंह : (विनोदपूर्वक) एच एस आर ए के कमाण्डर इन-चीफ के साथ डिनर का सौभाग्य कौन कौन लेना चाहता है ?

(गुड़ की एक डली उठा लेते हैं।)

आजाद नहीं मानोगे ?

भगतसिंह : (इशारे से साथियों को) ले लो न एक एक डली। खड़े खड़े मुंह क्या ताक रहे हो ?

आजाद : (खीभकर) देखो बहुत काम करना है। मुझे हैरान मत करो। मैं जैसा खाता हूं जो कुछ खाता हूं चुपचाप खाने दो।

भगतसिंह : (बनावटी गंभीरता से) पंडित जी लेकिन आपके प्रसाद से हम सब वंचित कैसे रह सकते हैं ?

आजाद : तो लो।

(गुड़ उठाकर फेंक देते हैं और उठ खड़े होते हैं।)

भगतसिंह वाह पंडित जी आप तो नाराज होगये ?

(दूसरे साथी पकड़ कर आजाद को फिर बिठाते हैं। राजगुरु गुड़ उठा लाते हैं।)

और भारत की कोटि कोटि जनता के नाम एक संदेश प्रसारित करेंगे। ताकि लोगों को गलतफहमी न हो और सरकार को बेकसूरों को सताने और फांसने का मौका न मिले।

आज़ाद : सब कुछ राष्ट्रीय गौरव और सम्मान के अनुरूप होगा।

राजगुरु : तब मेरा कोई आग्रह नहीं है।

आज़ाद : दल की नीति और सुरक्षा के विचार से अभियान का समय और कार्यक्रम उन लोगों को बता दिया जायगा जिन्हें इसमें सक्रिय रूप से भाग लेना है। शेष सब साथियों और दल की शाखाओं को उस क्षण के लिए तैयार रहना होगा जब एक हड़कंप से जमीन और आसमान हिल उठने की स्थिति उत्पन्न हो जायगी।

भगतसिंह : चलो काम की बात खत्म हुई, अब…

आज़ाद : (हँसकर) अब रसरंगनाम छिड़ेगा और कुछ पेट-पूजा होगी।

(एक पत्थर की ओरों पर बढ़ते हैं

मँगाई हुई डबल रोटी और गुड़ लेकर खाने बैठते हैं।)

भगतसिंह : (विनोदपूर्वक) एच एस आर. ए के कमाण्डर-इन-चीफ के साथ डिनर का सौभाग्य कौन कौन लेना चाहता है ?

(गुड़ की एक डली उठा लेते हैं।)

आज़ाद नहीं मानोगे ?

भगतसिंह : (इशारे से साथियों को) लो लो न एक एक डली। खड़े खड़े मुँह क्या ताक रहे हो ?

आज़ाद (खीजकर) देखो बहुत काम करना है। मुझे हैरान मत करो। मैं जैसा खाता हूँ जो कुछ खाता हूँ चुपचाप खाने दो।

भगतसिंह (बनावटी गंभीरता से) पंडित जी लेकिन आपके प्रसाद से हम सब वंचित कैसे रह सकते हैं ?

आज़ाद : लो लो।

(गुड़ उठाकर फेंक देते हैं और उठ खड़े होते हैं।)

भगतसिंह : वाह पंडित जी आप तो नाराज़ हो गये ?

(दूसरे साथी पकड़ कर आज़ाद को फिर बिठाते हैं। सब गुड़ उठा लाते हैं।)

राजगुरु : लीजिये आप खाइये। रणजीत तो कभी मसखरेपन से बाज नहीं आता।

(गुड़ लेने लगता है।)

भगतसिंह : अरे मरभूख गुड़ उठाकर लाया तो उसे धो तो लेना था। जो पंडित जी ने जनेऊ तोड़ फेंका है पर नाली के पास पड़े गुड़ को तो बिना धोये नहीं खा सकोगे।

(सब साथी बड़ी मुश्किल से हँसी रोक पाते हैं।)

सुखदेव : लो चाय और गुड़ को भी डालो।

(चाय देना, राजगुरु का गुड़ धोकर रखना और आजाद का खाने पर बैठना। नीचे से किसी का आवाज देना।)

भगतसिंह (ऊपर से ही) चले आओ, वोहराजी !

(गुप्तचर सुदर्शन युवक हंसराज वोहरा का प्रवेश। अभिवादन के पश्चात)

हंसराज : कुछ देर तो जरूर हो गई है।

भगतसिंह : यहाँ पहुँच जाना ही बड़ी बात है।

हंसराज : साइकिल नीचे छोड़ आया हूँ।

(नीचे झांकता है।)

(भगतसिंह की ओर अर्थपूर्ण दृष्टि से देखते हैं। हंसराज बात को न समझकर ताकता रहता है। आजाद भोजन समाप्त कर उठ खड़े होते और बाहर निकल जाते हैं। आजाद के पीछे और कई लोग चले जाते हैं।)

भगतसिंह (भगवानदास को लक्ष्य करके) हनुमानजी, अब इतनी दूर बैठकर इधर क्या ताक रहे हो ? सोच रहे हो, साइकिल यहां लाते तो ठीक होता क्यों न ?

भगवानदास ऐसा ही समझ कर मन को संतोष देने में कोई हर्ज नहीं है।

भगतसिंह : तो आप इस समय गाने के मूड में मालूम पड़ते हैं। अच्छा गाओ हम सुनने का कष्ट गवारा कर लेंगे।

भगवानदास : मैं गाने ही क्यों लगा ?

हंसराज : (अनुरोधपूर्वक) क्या हर्ज है गाइये न।

भगतसिंह : सो अब तो नखरों की गुंजाइश नहीं। सुना डालिये झटपट। अभी पंडित जी भी नहीं हैं।

भगवानदास : अच्छा।

भगतसिंह : मैं सच कहता हूं आप अनुरोध की कद्र करने वाले नहीं हैं। आप उस समय गाना शुरू करेंगे जब मैं कान में उँगली डालकर बैठ जाऊँगा।

(सब हँसने लगते हैं। भगवानदास भगतसिंह की पीठ में घूंसा मारते हैं। इस पर दोनों ओर से घूंसे चलने लगते हैं और देर तक चलते हैं। इस हुड़दंगी में राजगुरु को बैठे बैठे झपकी ले रहे थे जाग पड़ते हैं।)

राजगुरु : कैसे आदमी हो? मेरी कीमती नींद में खलल डाल दिया।

विजयकुमार : मेरे सपनों का हराभरा खेत उजाड़ दिया। सब लोग देखते क्या हो? दोनों सांडों को अलग करो न।

(सब बीचबिचाव करते हैं। मुक्केबाजी बंद होती है।)

भगतसिंह : दोष कैलाश का है। संधि की शर्त के रूप में मैं मांग करता हूं कि वह अपना गाना सुनाये, और वही मराठी गाना।

विजयकुमार : सही बात है।

(भगतसिंह की ओर अर्थपूर्ण दृष्टि से देखते हैं। हंसराज बात को न समझकर ताकता रहता है। भागीरथ मौका समझ कर उठ खड़े होते और बाहर निकल जाते हैं। भागीरथ के पीछे और कई लोग जाते हैं।)

भगतसिंह (भगवानदास को लक्ष्य करके) हनुमानजी अब इतनी दूर बैठकर इधर क्या ताक रहे हो? सोच रहे हो, साइकिल चढ़ा लाते तो ठीक होता क्यों न?

भगवानदास ऐसा ही समझ कर मन को संतोष देने में कोई हर्ज नहीं है।

भगतसिंह : तो आप इस समय गाने के मूड में मालूम पड़ते हैं। अच्छा गाओ हम सुनने का कष्ट गवारा कर लेंगे।

भगवानदास : मैं गाने ही क्यों लगा?

हंसराज (अनुरोधपूर्वक) क्या हर्ज है गाइये न।

भगतसिंह : लो अब तो नखरों की गुंजाइश नहीं। सुना डालिये झटपट। अभी पंडित जी भी नहीं हैं।

भगवानदास : अच्छा।

भगतसिंह : मैं सच कहता हूँ आप अनुरोध की कद्र करने वाले नहीं हैं। आप उस समय गाना शुरू करेंगे जब मैं कान में उँगली डालकर बैठ जाऊँगा।

(सब हँसने लगते हैं। भगवानदास भगतसिंह की पीठ में घूँसा मारते हैं। इस पर दोनों ज़ोर से घूँसे चलाने लगते हैं और देर तक चलते हैं। इस हड़बड़ी में राजगुरु जो बैठे बैठे झपकी ले रहे थे जाग पड़ते हैं।)

राजगुरु कैसे आदमी हो? मेरी क़ीमती नींद में खलल डाल दिया।

विजयकुमार : मेरे सपनों का हराभरा लान उजाड़ दिया। अब लोग देखते क्या हो? दोनों शेरों का शमन करो न।

(सब बीचबिचाव करते हैं। मुक्केबाज़ी बंद होती है।)

भगतसिंह : दोष कैलास का है। संधि की शर्त के रूप में मैं माँग करता हूँ कि वह अपना गाना सुनाये और वही मराठी गाना।

विजयकुमार : सही बात है।

राजगुरु : सामान तो भरना ही पड़ेगा।

भगवानदास : मुझे स्वीकार है।

(गाने के लिए सँभलकर बैठता है भगतसिंह गानेवाले की ओर पीठ कर पड़ रहते हैं।)

भगतसिंह : अच्छा शुरू कीजिये।

भगवानदास : इन्हें गाना सुनने की तमीज तो सिखाइये तब गाऊँ।

भगतसिंह : मैं बाज आया ऐसे गाने से जिसमें आपको शक्ल भी दिखानी पड़े।

(सब हँस पड़ते हैं और देर तक हिल सिलाहट बनी रहती है। उसके बाद हंसराज के अनुरोध से भगवानदास अपना मराठी गीत गाकर सुनाते हैं। बिना बाद्य के भी गीत का समा बंध जाता है।)

हंसराज : (गीत की समाप्ति पर) वाह, बहुत अच्छा।

भगतसिंह : क्या कहने हैं! सल्तनत की बादशाहत निछावर कर देने लायक चीज है। लेकिन बेबसी है एक मास के लिए भी खुराक चार आने व अधिक पंडित जी देते नहीं हैं। उस में दो आने की रोटी-दाल-सब्जी, छः पैसे

दृश्य दूसरा

लाहौर क्रान्तिकारियों का शिविर

१६२८ मध्य दिसम्बर के एक ऐतिहासिक दिन का तीसरा पहर

(आज शिविर में पूर्व दिन जैसी चहल-पहल नहीं है। गिने चुने साथी हैं। सब की संजीदगी और चिन्तनशील मुद्रा से लगता है कि आज का दिन और दिनों से भिन्न है। कोई किसी से बोलता नहीं। सब अपने अपने ध्यान में लगे हैं फिर भी सब के कान कहीं से कुछ सुनने के लिए व्यग्र हैं। उपस्थित लोगों में आज़ाद भगतसिंह राजगुरु सुखदेव विजयकुमार भगवानदास हैं। भगतसिंह को यह निःस्तब्धता कुछ पसन्द नहीं आती। उसे तोड़ने की गरज से वे भगवानदास को छेड़ते हैं।)

भगतसिंह : ओ अनुशासन के पुतले सच सच बता फिल्म कैसी थी ?

भगवानदास : नंबर एक (धीरे से) पर पैसों का क्या हिसाब किताब होगा ? पंडित जी से कौन कहेगा ? म्याऊं का मुंह कौन पकड़ेगा ?

भगतसिंह : (धीरे से) कैलाश, तुम भी निरे चोंच हो। मुर्दे को भी क्रांतिकारी बना दे ऐसी फिल्म पर पंडित जी रोक लगायेंगे ?

भगवानदास : (धीरे धीरे) आप जानो। मैं तो साफ कह दूंगा कि रणजीत और विजय ने जबरदस्ती मेरे से डेढ़ रुपया छीन लिया और खेल देखा। खेल मैंने भी देखा पर मैं निर्दोष हूं। मैं लोग साथियों की खुराक की अमानत में खयानत कर खेल देखने की हिम्मत नहीं कर सकता था।

(अन्तिम शब्द कुछ जोर से कहे गये। सुनकर विजयकुमार भी इस बातचीत में शामिल हो गये।)

विजय : (कुनकुनाकर) अमानत में खयानत की क्या बात है ?

भगतसिंह : कुछ नहीं जी, ये हनुमानजी पूरे चौकस हैं। खेल भी देख लिया और अब डेढ़ रुपया खर्च लेने के लिए डर रहे हैं।

भगवानदास : पंडित जी को हिसाब तो देना होगा। वे अभी पूछेंगे।

माजाब : अरे क्या गुपचुप कर रहे हो ?

भगतसिंह : अजी पंडित जी, एक ऐसा खेल जमा है कि अगर हिन्दी में हो तो भारत की पैंतीस करोड़ जनता जागी हो जाय।

माजाब (उत्सुकता से) सच ऐसा कौनसा खेल है ?

भगतसिंह : हिन्दी में उसे 'टाम काका की कुटिया' कह सकते हैं। अमरीका में हब्शी गुलामों पर होने वाले अत्याचारों और उनकी स्वतन्त्रता की लड़ाई का यह क्रांतिकारी चित्र बस देखने ही लायक है। बोल न कैलास है कि नहीं ?

(भगवानदास विवश होकर हां भरते हैं।)

माजाब ऐसा चित्र हिन्दी में क्यों न तैयार किया जाय ?

विजय कौन तैयार करे ? क्या सरकार उसे करने देगी ?

भगतसिंह : (हंसकर) पंडित जी पैसा इकट्ठा करके देंगे तो हम लोग उसे तैयार करेंगे।

विजय : और फिर सारा भारत क्रांतिकारी हो जायगा।

(भगवानदास मुस्करा कर विजय की ओर देखते हैं।)

मास्टर : इस तरह के चित्र प्रचार का साधन तो बन सकते हैं।

अमरसिंह : इसी चित्र को कल हम तीनों देख आये। डेढ़ रुपया तो खर्च हुआ पंडित जी पर इतना जोश आया कि उसका उबाल अभी तक रह रह कर आ रहा है।

मास्टर : ऐसा पता होता तो बाहर से आये साथियों को भी दिखा देते।

अमरसिंह : (भगवानदास की ओर आंख मारकर धीरे से) वे देख अब तो हुआ।

(इसी समय बाहर से जयगोपाल जिसे पुलिस अधिकारी स्कॉट की गतिविधि पर नजर रखने के लिए नियत किया गया था, प्रवेश करता है।)

मास्टर : आओ जी।

(हाथ से पास बैठने का संकेत करते हैं।)

जयगोपाल : (एक नजर में सबको देखकर) कल रात क ही आना था।

भगतसिंह : तुम्हारा सर्वे तो पूरा होगया ?

जयगोपाल होगया।

भगतसिंह तो पंडित जी को रिपोर्ट देदो।

(सब मंच के एकान्त कोने में एकत्र हो जाते और परामर्श में रत होते हैं।)

जयगोपाल : स्कॉट और सांडर्स दोनों एक जगह सुविधा से मिलने संभव नहीं।

भगतसिंह : स्कॉट नियमित रूप से दफ्तर पहुँचता भी नहीं है।

आज़ाद : उसे बँगले पर ही लिया जा सकता है।

सुखदेव परन्तु एच एस आर ए के काम का महत्व पुलिस दफ्तर के भीतर या उसके फाटक पर ही अधिक है।

आज़ाद : एक दो आदमियों को मार देना कोई विषम समस्या नहीं है। यह तो कहीं भी और किसी भी समय हो सकता है। परन्तु हमें तो सरकार के प्रति युद्ध घोषणा करनी है। अतः दिन में और पुलिस की संगीनों के

दायरे से अपना शिकार छीनकर यह दिखा देना है कि जनता की सरकार अपना काम कर रही है।

भगतसिंह : हाँ यही बात है। बस हमने जैसा कार्यक्रम निश्चित किया था वही ठीक होगा। जयगोपाल पुलिस दफ्तर के फाटक के पास साइकिल लिये खड़ा रहेगा। उसके संकेत पर ही भगतसिंह और राजगुरु अपना काम करके डी ए वी कालेज के हाते में चले जायेंगे। हाते के भीतर आजाद रहेंगे और वे देखेंगे कि कोई उन दोनों का पीछा न कर पाये।

राजगुरु : मुझे तो पसन्द आता है। पहुँचते समय लगेगा मैं चलता हूँ।

भगतसिंह : हम लोग भी पहुँचते हैं।

(राजगुरु का जाना। कैलाशपति महावीरसिंह आदि का आना।)

कैलाशपति : बैंक में एकदम हस्ट हो जाने से अब हमारा काम नहीं है। हम सब जा रहे हैं।

जयगोपाल : (एक नजर में सबको देखकर) कल रात क ही आना था ।

भगतसिंह : तुम्हारा सर्वे तो पूरा होगया ?

जयगोपाल होगया ।

भगतसिंह तो पंडित जी को रिपोर्ट देदो ।

(सब मंच के एकान्त कोने में एकत्र हो जाते और परामर्श में रत होते हैं ।)

जयगोपाल : स्कॉट और सांडर्स दोनों एक जगह सुविधा से मिलने संभव नहीं ।

भगतसिंह : स्कॉट नियमित रूप से दफ्तर पहुंचता भी नहीं है ।

आज़ाद : उसे बंगले पर ही लिया जा सकता है ।

सुखदेव परन्तु एस एस आर ए के काम का महत्व पुलिस दफ्तर के भीतर या उसके फाटक पर ही अधिक है ।

आज़ाद : एक दो आदमियों को मार देना कोई विषम समस्या नहीं है । यह तो कहीं भी और किसी भी समय हो सकता है । परन्तु हमें तो सरकार के प्रति युद्ध घोषणा करनी है । अतः दिन में और पुलिस की संगीनों के

बाहर से अपना शिकार छीनकर यह दिखा देना है कि जनता की सरकार अपना काम कर रही है।

भगतसिंह : हाँ यही बात है। बस हमने जैसा कार्यक्रम निश्चित किया था वही ठीक होगा। जयगोपाल पुलिस दफ्तर के फाटक के पास साइकिल लिये खड़ा रहेगा। उसके संकेत पर ही भगतसिंह और राजगुरु अपना काम करके डी ए वी कालेज के हाते में चले जायेंगे। हाते के भीतर आजाद रहेंगे और वे देखेंगे कि कोई उन दोनों का पीछा न कर पाये।

राजगुरु : मुझे तो पवस जाना है। पहुँचते समय सगैया मैं चलता हूँ।

भगतसिंह : हम लोग भी पहुँचते हैं।

(राजगुरु का जाना। कैलाशपति महावीरसिंह आदि का आना।)

कैलाशपति : बैंक में एकशन हस्ट हो जाने से अब हमारा काम नहीं है। हम सब आ रहे हैं।

आज़ाद : एक्शन की सफलता में संदेह होने से ही ऐसा किया गया । एक साथी ने दूसरा दृष्टिकोण भी रखा है उससे भी यह निर्णय ठीक ही हुआ परन्तु हम खाली नहीं बैठेंगे । कुछ न कुछ करेंगे । आप लोग जाइये और अपने अपने क्षेत्र की स्थिति काबू में रखिये ।

भगतसिंह : समय बहुत नाजुक है ।

महावीरसिंह परन्तु एच एस आर ए के सैनिक तो फौलाद के बने हैं ।

आज़ाद : हमारा काम भी तो मोम के पुतलों से चलने वाला नहीं है । अच्छा आप लोग जाइये ।

(सब एक एक कर निकल जाते हैं । सबके पीछे भगतसिंह आज़ाद और जयगोपाल का जाना । जाते जाते आज़ाद का विजय को संकेत करते जाना ।)

विजय : (सुखदेव और भगवानदास से) चलो उठो । यह समय क्या विस्फोट का है ?

(दोनों हड़बड़ाकर उठ खड़े होते हैं ।)

सुखदेव : हम गाफ़िल नहीं बैठे थे ।

विजय : भविष्य की योजना तैयार कर रहे थे ?

भगवानदास : हां अभी थोड़ी देर में आग में घी पड़ जायगा। उससे एक लपट उठेगी।

सुखदेव : लाहोर नहीं नहीं सारा देश अभिभूत होकर उसे देखेगा। किसी की कुछ समझ में न आयेगा तब तक जब तक

विजय : जब तक हम न समझायेंगे। तो बसो उसी का सरंजाम करें। एक दम यह काम ऐसे हो…

भगवानदास : पूरी सफलता के साथ।

सुखदेव : एच एस आर ए की शान के बिलकुल अनुरूप।

विजय : यही होगा। दिल्ली से लन्दन तक होल उठेगा। बसो आओ हमारी सुरक्षा टुकड़ी पटमास्थल के पास समय पर पहुँची रहे।

(मंच से बाहर हो जाता है। उसके साथ ही सुखदेव और भगवानदास का जाना। मकान के पिछले हिस्से से धन्वन्तरी का मंच पर आकर घूमने लगना।)

धन्वन्तरी : आज आज, आज अरे कौन भगवती आई ? नहीं, वे यहां कहां ? बस हम

सुखदेव   अभी तो सब स्तब्ध है । पुलिस और सरकार दोनों को काठ मार गया है पर कुछ ही देर में भयानक रूप से नाकेबंदी हो जायगी । हम सब को तुरन्त इस स्थान को छोड़ देना है । सब साथियों को सुरक्षित स्थानों पर अलग अलग"

भाग्यवान : पर आज संध्या समय खाने-पीने की क्या व्यवस्था होगी ? पैसा तो एक भी नहीं है ।

(सुखदेव जयगोपाल की ओर देखने लगता है ।)

जयगोपाल   मैं जाऊं देखूं कुछ हो सके ।

सुखदेव : नहीं करके आओ भाई ।

जयगोपाल   अच्छा, अच्छा ।   (निकल जाता है ।

भगतसिंह : रुपये की तो अब जरूरत पड़ेगी ।

विजय : (चिंतित होकर) काफी रुपये हों तब भ ... पसे और इस समय कोई प्रबन्ध सं ... नहीं ।

सुखदेव : परवाह मत करो । मैं आ रहा हूँ । इतना बड़ा काम होगया तब रुपये प्रबन्ध भी हो जायगा ।

(सब आश्वस्त होते हैं, जयगोपाल आता है और दस रुपये लाकर आज़ाद को पकड़ाता है। वे उन्हें साथियों में बांट देते हैं।)

आज़ाद : चलो, इस वक्त काम चलेगा।

(आज़ाद, सुखदेव और भगतसिंह को छोड़कर सब एक एक कर मंच के बाहर हो जाते हैं।)

भगतसिंह : सुखदेव, अब तेरा संगठन काम करे भाई।

आज़ाद : सवेरा होते होते लाल पर्चे लाहौर में बंट जायें।

सुखदेव : लाहौर में ही क्यों, सारे भारत में। एच एस आर ए के कमांडर इन-चीफ़ के हस्ताक्षर वाला घोषणापत्र ही है न लाल पर्चा। वह नियत समय पर सारे भारत में बंटेगा।

भगतसिंह : सभी लोगों को पता लगेगा। अभी तो तरह तरह के अनुमान लगाये जा रहे होंगे।

सुखदेव : (चौंककर) उधर घंटी हुई है। मैं जाकर देखता हूं।

(शीघ्रता से प्रस्थान । आज़ाद और भगतसिंह सतर्क हो जाते हैं । सुखदेव लौटकर आता है ।)

आज़ाद : क्या बात है ?

सुखदेव : मैंने कह रक्खा था, भाभी ने पाँच सौ भेज दिये हैं। सोहन के प्रयत्न से भी दो सौ आये हैं।

आज़ाद : अब हमें साथियों को लाहौर से बाहर भेजने की शीघ्रता करनी चाहिए।

भगतसिंह : युद्ध छिड़ चुका है।

आज़ाद : चलो, अब देर करना ठीक नहीं है। काफ़ी अँधेरा होगया है।

(सब मंच से बाहर हो जाते हैं।)

पर्दा

दृश्य तीसरा

कलकत्ता, सेठ छाजूराम का बँगला

१९२८ दिसम्बर के अन्तिम सप्ताह की रात

(सुशीला बीबी, दुर्गा भाभी भगवतीचरण और भगतसिंह बैठे हैं। दुर्गा भाभी के पास कोच पर उनका बच्चा शची सो रहा है।)

भगवतीचरण : (दुर्गा से) तुमने तो गजब कर दिया !

सुशीला : (हँसकर) सचमुच बताओ तो यह सब हुआ कैसे ?

भगवतीचरण : तार पाकर मैं तो हैरान था कौन दुर्गावती, कौन भाई ?

दुर्गा : यह सब इसकी गलती थी। कहीं तुम धोखा समझ कर स्टेशन न पहुँचते तो बड़ी हैरानी होती।

(शिकायत के अन्दाज़ से भगतसिंह की ओर देखती है।)

भगतसिंह : सच्ची मैं मुझे तो यही नाम याद रहा। सचमुच बड़ी भूल हुई।

सुशीला : पर तुम आईं कैसे इसके साथ ?

दुर्गा : आई क्या सुखदेव ने आकर बताया कि पंडित जी तो तीर्थयात्रियों के एक दल के साथ प्रयाग के पंडा बनकर निकल गये हैं। अब एक साथी और रह गया है। मैंने कहा, उसे भी किसी तरह निकालो। लाहौर तो चलनी से छाना जा रहा है। आदमियों का छिपना तो इस समय असंभव है। उत्तर में उसने बताया इसीलिए तो तुम्हारे पास आया हूँ। मेरे पास ! मैं हैरान हुई, मैं क्या काम आ सकती हूँ। ख्याल आया, शायद रुपये न पहुँचे हों। पर उसने कहा, नहीं रुपये तो मिल गये। अब अगर तुम उसके साथ उसकी मेमसाहब बनकर जाने की हिम्मत कर सको तो शायद वह भी बच जाय। (क्षण भर चुप रहकर) बोलो जा सकोगी ? शची को भी साथ रखना होगा। स्टेशन पर पूछताछ भी हो सकती है, पकड़

धकड़ भी हो सकती है और तब बरबस गोलियाँ चलेंगी। इतने बड़े खतरे का सामना कर सको तो बोलो। मैं सकते में पड़ गई। संभावित सभी खतरे मेरी आँखों के आगे से निकल गये साथ ही इन लोगों के ऊपर मड़राने वाली मृत्यु की छाया भी सामने आगई। अचानक ही मेरे मुँह से निकल गया, जा सकूंगी। क्यों नहीं जा सकूंगी। जब तुम सब मौत को वरण करने के लिए दीवाने हो रहे हो तो मैं क्या इतना भी न कर सकूंगी? सुखदेव ने गद्‌गद् होकर मेरे पैरों की धूलि सिर पर चढ़ा ली और कहा भाभी भाभी तुमने मुझे उबार लिया है। और, मैं कुछ कहूँ इससे पहले ही वह घर से बाहर चला गया पर थोड़ी ही देर में वह साहबी ठाठबाट में लैस एक लंबतड़ंग युवक के साथ लौट आया। कहा, यह है वह साथी। यह रात यहीं रहेगा। समय पर टैक्सी आकर सबको ले जायगी। मुझे असमंजस में पड़ा देखकर वह बोला, इसे

अच्छी तरह देख लिया ? बताओ, इसे पहचानती भी हो या नहीं और तब मैंने गौर से देखा। दाढ़ी मूँछ के बिना भी इसे पहचान गई। मैंने कहा, भगत है क्या, और हम सब हँस पड़े। इसके बाद क्या हुआ वो इससे ही पूछ लो।

(सब भगतसिंह की ओर जिज्ञासा भरी दृष्टि से देखने लगते हैं।)

भगतसिंह मैं कहूँगा, पर भाभी जैसी निपुणता के साथ क्या कह सकूँगा।

भगवतीचरण अब यह रहने दे। बता हम सुनने को व्यग्र हो रहे हैं।

सुशीला : हाँ भाई, स्टेशन का अध्याय तो पूरा कर ही दो। दूसरी बातें तो विस्तार से फिर सुनेंगे।

भगतसिंह एक नौजवान फौजी अफसर ठीक समय पर टैक्सी में अपनी फॅमिली के साथ स्टेशन के लिए रवाना हुआ। उसे कलकत्ता मेल से यात्रा करनी थी। उसके सगेज पर बाकायदा उसके नाम और पद के लेबल लगे थे।

टक्सी के स्टेशन यार्ड में दाखिल होते ही कुलियों ने झुककर सलाम बोला और सामान उठा लिया। और सब तो ठीक हुआ परन्तु उसका अर्दली बहुत ही ढ़ीठ और बदतमीज़ आदमी था। वह अपनी ड्यूटी भूलकर अपने मालिक से दोस्ताना अन्दाज़ में बातें करने लगा। साहब ने खीझकर उसे झिड़का और कुलियों के साथ साथ जाने का संकेत किया। पाँच बजे मुंह अंधेरे भी स्टेशन पर बिजली का प्रकाश था और खुफिया पुलिस का भारी जमघट। नौजवान अफसर टोप को माथे पर झुकाये बच्चे को लिए अपनी मेमसाहब के साथ उनके बीच से निकलता हुआ छूटने को तैयार खड़े कलकत्ता मेल के एक फर्स्ट क्लास में दाखिल होगया। अर्दली ने कुलियों की मदद से बिस्तर पहले ही तयार कर रक्खे थे। गाड़ी ने सीटी दी और ट्रेन क्षण भर में लाहौर के प्लेटफार्म से बाहर पूर्व की ओर पूरी रफ्तार से चली जा रही थी।

दुर्गा : क्यों रे भगत, तेरे में कहने की निपुणता का अभाव है ?

भगतसिंह : भाभी की बराबरी तो नहीं ही कर सकता हूँ।

दुर्गा : चल् झूठे कहीं के।

भगवतीचरण : (सुशीला से) दीदी, अब तुम्हारी परीक्षा होती है। बताओ, परदेसी कौन था ?

(सुशीला सोचने लगती है।)

दुर्गा : (हँसकर) मैं भी लाहौर से बहुत दूर निकल आने तक नहीं जान पाई कि वह कौन था।

भगवतीचरण : और मैं बिना बताये ही जान गया कि कौन था।

भगतसिंह : तो बताइये, कौन था ?

भगवतीचरण : दीदी को बताने दो। व सोच रही हैं।

सुशीला : (माथे पर हाथ रखकर) सोच रही हूँ, राजगुरु के सिवा कौन हो सकता है।

भगवतीचरण : वाह, दीदी !

भगतसिंह : अरे सचमुच वाह दीदी !

दुर्गा : कमाल कर दिया तुमने तो दीदी !

सुशीला : पर उस बेचारे को कहाँ छोड़ आये ?

भगतसिंह : उसे अर्दली का काम सौंपा नहीं। हर स्टेशन पर हाजिरी बजाना मामूली ड्यूटी नहीं थी। उसका आत्मसम्मान सजग होते ही वह सटक गया। बिना अर्दली के ही शेष यात्रा करनी पड़ी। ओफ कितनी जहमत।

(अलसाता जँभाई लेता है।)

सुशीला : रात बहुत हो चुकी है। एच एस आर. ए की गौरवगाथा विस्तार से सुननी बाकी है। वह कल सुनेंगे।

भगवतीचरण : लेकिन एक बात तो पूछ लेने दो दीदी। (भगतसिंह से) लाहौर स्टेशन पर पुलिस के बीच में से गुजरते समय किसी को संदेह नहीं हुआ ?

भगतसिंह एक बार ध्यान तो खटका गया पर फौजी अफसर के यूनीफार्म और बिस्तरों ने उन्हें धोखे में रखा।

भगवतीचरण : फिर भी।

भगतसिंह : उसके लिए तैयारी थी। एक हाथ से बच्ची को गोद में लिये था और दूसरा हाथ कोट

की जेब में रिवाल्वर के घोड़े पर था
राजगुरु के पास भी भरा हुआ पिस्तौल था
प्लेटफार्म पार करके गाड़ी में बैठा और ग
स्टार्ट होगई तबतक तो ख़तरा बना
हुआ था।

भगवतीचरण : (दुर्गा की ओर देखकर) मैं इससे इतनी
आशा नहीं करता था।

सुशीला : भाई आप इतने दिन साथ रहकर भी
हमारी भाभी को परख नहीं पाये।

भगवतीचरण : नहीं परख पाया। इसका यह रूप तो मेरे
लिए एक दम अपरिचित था।

भगतसिंह : इस नय रूप से परिचय कराने के लिए
पुरस्कार का हकदार हूँ।

दुर्गा : पुरस्कार तो तुम्हें शची ने दे दिया है।
(सुशीला और भगवतीचरण दुर्गा
मुह की ओर ताकने लगते हैं।)

भगतसिंह वह क्या ?

दुर्गा : वह अपने नये चाचा जी के साथ इतना
हिल गया है कि और किसी के पास
ठहरता ही नहीं।

भगतसिंह : यह तो और संकट खड़ा होगया।

भगवतीचरण : क्यों ?

भगतसिंह : वह कहीं भी देख लेगा तो चिल्लाकर दूसरों का ध्यान आकर्षित करेगा। यह अच्छा है कि वह अभी तक नाम से परिचित नहीं है।

(शची अचानक बोल पड़ता है।)

शची : चाचाजी मैं जानता हूं। मैं जानता हूं।

(सब स्तब्ध होते हैं।)

दुर्गा : (शची को गोद में लेकर) चुप बेटा चुप।

शची : सवे चाचाजी का नाम"

दुर्गा : (उसके मुंह पर हाथ रखकर) चुप नहीं तो सवे चाचाजी नाराज हो जायंगे।

(शची चुप हो जाता है और भगतसिंह के मुंह की ओर ताकने लगता है।)

भगतसिंह (भगवतीचरण से) कांग्रेस में गये थे ?

भगवतीचरण : एक दो बार ही गया था। लाहौर कांड ही सब जगह चर्चा का विषय हो रहा है। कई लोगों से मिला जे दादा से भी सामना होगया था।

भगतसिंह : सच !

भगवतीचरण : सच । इससे उसका सारा ध्येय छूट पाने में वे सफल नहीं हो पाये ।

भगतसिंह : मुझे मिल जायेंगे तो जानते हो क्या कहूँगे ?

भगवतीचरण : यही कि होशियार रहना । भगवती भी जाना हुआ है ।

भगतसिंह : मैं समझता हूँ । अच्छा अब यह बताओ कि प्रतिक्रिया क्या है ?

भगवतीचरण : जनता के उल्लास का तो कहना ही क्या । यह तो ऐसा ही है जो भीतर से खुश है तो भी ऊपर से नाक-भौं सिकोड़ते हैं । लाल पर्चे से तो सब के दिल दहल गये हैं परन्तु उसका जवाब नहीं है किसी के पास ।

सुशीला : चलो भाभी हम लोग चलें । ये तो अभी...

भगवतीचरण : नहीं नहीं दीदी हम भी चलते हैं ।

(सब उठ खड़े होते हैं ।)

पर्दा

दृश्य चौथा

दिल्ली, फीरोज़शाह के किले के खँडहर

१९२९ के फरवरी मास की एक रात

(एच. एस. आर. ए की केन्द्रीय समिति के सदस्य भिन्न समय पर एक एक कर किले के खँडहर में एकत्र होते हैं। सब के आजाने पर भगतसिंह खड़े होते हैं।)

भगतसिंह : साथियो बाधाओं और कठिनाइयों के बावजूद आज हमारी स्थिति दृढ़ है। आगरे का काम पूरा होगया है। अब हम राजधानी में आ गये हैं। उत्पादन-केन्द्र हर प्रदेश के लिए अलग अलग बनाने की व्यवस्था हो गई है। आगरे में जो उत्पादन हुआ है उसके परीक्षण भी कर लिये गये हैं और परिणाम सफल रहे हैं। साइमन कमीशन को हम अपने तोहफे भेंट नहीं कर सके और वह इस देश से जाने की तैयारी में

असेम्बली में विस्फोट करके बाहर आने की तो गुंजाइश ही न होगी ?

आज़ाद : गुंजाइश तो है, प्रयत्न किया जाय तो वे सुरक्षित निकाले जा सकते हैं।

भगतसिंह : परन्तु उन्हें निकल भागना नहीं होगा। वे अपने आपको वहीं समर्पण कर देंगे। वे न्यायालय के सामने दल के सिद्धांत आदर्श, उद्देश्य और विस्फोट के औचित्य पर एक विस्तृत बयान देंगे ताकि दुनिया यह जान सके कि एच. एस. आर. ए. हिंसक व बौखलाने युवकों का गिरोह मात्र नहीं है। मानवता से प्यार करने वाला यह एक समाजवादी लोकतांत्रिक संगठन है।

विजय : उनके बच निकलने का मतलब बिल्कुल उल्टा होगा। जनता को हम अपने संगठन के आदर्श और उद्देश्य से अवगत न करा सकेंगे। हमारे क्रान्तिप्रेरक और आतंकवादी रूप को अतिरंजित करके सरकार न जाने क्या क्या जुल्म न करेगी। इसलिए उन्हें

तो फिर पाने की आशा छोड़कर ही भेजना होगा।

कैलासपति : किसको भेजना सोचा है ?

माजूर : यह तय करना है परन्तु कम से कम दो को।

विजय : पंडित जी और रणजीत को छोड़कर किन्हीं दो को।

अमरसिंह : छोड़कर क्यों ?

शिववर्मा दल के हित की दृष्टि से। मैं इसका समर्थन करता हूँ।

कैलासपति : और मैं भी।

विजय : परन्तु ऐसा वह अवश्य हो जो अदालत के सामने हमारे उद्देश्यों और आदर्शों को ठीक तरह व्यक्त कर सके।

अमरसिंह तभी तो मुझे भेजा जाय। मेरा विश्वास है कि मैं इस काम को दल की शान के मुताबिक निभा सकूंगा।

(क्षण भर सन्नाटा छाया रहता है।)

शिववर्मा पुलिस तो साथी रणजीत की तलाश में रही है। सांडर्स-वध के सिलसिले में

असेम्बली में विस्फोट करके बाहर आने की तो गुंजाइश ही न होगी ?

आजाद : गुंजाइश तो है, प्रयत्न किया जाय तो वे सुरक्षित निकाले जा सकते हैं।

भगतसिंह : परन्तु उन्हें निकल भागना नहीं होगा। वे अपने आपको वहीं समर्पण कर देंगे। वे न्यायालय के सामने दल के सिद्धांत आदर्श, उद्देश्य और विस्फोट के औचित्य पर एक विस्तृत बयान देंगे ताकि दुनिया यह जान सके कि एच. एस. आर. ए. हिंसक व दीवाने युवकों का गिरोह मात्र नहीं है। मानवता से प्यार करने वाला वह एक समाजवादी लोकतांत्रिक संगठन है।

विजय : उनके बच निकलने का मतलब बिल्कुल उल्टा होगा। जनता को हम अपने संगठन के आदर्श और उद्देश्य से अवगत न करा सकेंगे। हमारे क्रान्तिप्रेरक और आतंकवादी रूप को अतिरंजित करके सरकार न जाने क्या क्या जुल्म न करेगी। इसलिए उन्हें

तो फिर पाने की आशा छोड़कर ही भेजना होगा।

कैलासपति : किसको भेजना सोचा है ?

आज़ाद : यह तय करना है परन्तु कम से कम दो को।

विजय : पंडित को और रणजीत को छोड़कर किन्हीं दो को।

भगतसिंह छोड़कर क्यों ?

शिववर्मा दल के हित की दृष्टि से। मैं इसका समर्थन करता हूँ।

कैलासपति : और मैं भी।

विजय परन्तु ऐसा वह अवश्य हो जो अदालत के सामने हमारे उद्देश्यों और आदर्शों को ठीक तरह व्यक्त कर सके।

भगतसिंह : तभी तो मुझे भेजा जाय। मेरा विश्वास है कि मैं इस काम को दल की राय के मुताबिक निभा सकूँगा।

(क्षण भर सन्नाटा छाया रहता है।)

शिववर्मा पुलिस तो साथी रणजीत की तलाश में है। सांडर्स-वध के सिलसिले में वह

फरार है। उनके पकड़े जाने का मतलब है फांसी।

कलासपति : भला, उन्हें कैसे भेजा जा सकता है?

विजय : यह सही है। भगतसिंह को तो किसी तरह नहीं भेजा जा सकता। यदि साथियों को भरोसा हो जैसा कि मुझे थोड़ा बहुत मन के ऊपर है कि मैं दल के उद्देश्यों और आदर्शों को उचित रूप में रख सकूंगा, तो मैं इस काम के लिए अपने आपको पेश करता हूं। आशा है आप लोग यह गौरव मुझे देने हिचकिचायेंगे नहीं।

(कुछ देर मौन छाया रहता है फिर आज़ाद तोड़ते हैं।)

आज़ाद : चलो ठीक हुआ। दूसरा नाम मैं पेश करता हूं। साथी मोहन ने शिकायत भेजी है कि इतने पुराने होते हुए उन्हें आज तक कोई काम नहीं सौंपा गया। यदि इस अभियान में उन्हें न रखा गया तो निराश होकर वे अपने आपको दल से अलग कर लेंगे।

शिववर्मा : उनका आग्रह मान लिया जाय।

(सब स्वीकृति देते हैं । बैठक उठ जाती है । सुखदेव का अचानक आ जाना ।)

सुखदेव : मुझे विलम्ब होगया । (भगतसिंह को एक ओर ले जाकर) निर्णय होगया कौन जायगा ?

भगतसिंह : बच्चू और मोहन ।

सुखदेव : बच्चू और मोहन, तुम नहीं ?

भगतसिंह : नहीं ।

सुखदेव : (रुष्ट होकर) क्यों ?

भगतसिंह दल का निर्णय ।

सुखदेव : (उसी तरह) और तुमने मान लिया ?

भगतसिंह : क्या करता ?

सुखदेव : लेकिन तुम्हारे जाने की तो बात थी ?

भगतसिंह थी पर दल के भविष्य के लिए मुझे पीछे रखने का फैसला हुआ ।

सुखदेव यह सब कुछ नहीं है ।

भगतसिंह : तब ?

सुखदेव : तब तुम्हें अहंकार हो गया है । तुम समझने लगे हो तुम्हारे बिना दल का काम नहीं चलेगा ।

भगतसिंह : अच्छा !

सुखदेव अच्छा क्या, यह सच है कि तुम मौत से डरने लगे हो। तुम्हें जीवन से मोह होगया है। तुम कायर बन गये हो और कहना चाहते हो कि संगठन के हित में तुम शहीद बनने के सम्मान का बलिदान कर रहे हो।

भगतसिंह : *मैं कायर हो गया हूँ! मैं मौत से डरने लगा हूँ!*

सुखदेव जरूर, तुम उस रास्ते पर चल पड़े हो जिस पर दादा लोग चलते हैं। भाई परमानन्द की तरह एक दिन तुम्हारे सबंध में भी यही फैसला लिखा जायगा कि यह आदमी बुजदिल और कायर है। संकट के कामों में यह दूसरों को झोंककर अपने प्राण बचाता रहा है। वर्ना क्या कारण है कि जब तुम यह मानते हो कि तुम्हारे सिवा दूसरा कोई दल के आदर्श और उद्देश्य को ठीक तरह नहीं रख सकेगा तो फिर तुमने केन्द्रीय समिति को ऐसा फैसला क्यों करने दिया? बोलो, है कोई जवाब?

भगतसिंह : (झुंझलाकर) देखो सुखदेव, तुम बहुत आगे बढ़ रहे हो। तुम मेरा अपमान कर रहे हो।

सुखदेव : मैं अपने मित्र के प्रति अपना कर्तव्य पूरा कर रहा हूँ।

भगतसिंह : अच्छा तो असेम्बली में बम फेंकने मैं ही जाऊँगा। केन्द्रीय समिति को मेरी बात माननी होगी लेकिन तुमने जो मेरा अपमान किया है उसका उत्तर मैं नहीं दूंगा। और अब से तुम मुझसे कभी बात मत करना।

सुखदेव : (कोई उत्तर नहीं देता पर लगता है जैसे उसका दिल भर आया हो।)

भगतसिंह : (साथियों के बीच आकर) साथियो, मेरा अनुरोध है कि समिति अपना निर्णय बदल दे। असेम्बली में मैं ही जाऊँगा। विनय से मैं याचना करता हूँ कि वे अपने हिस्से का यह गौरव मुझे ही ले लेने दे।

(समिति पुनः बैठती है और बहुत वाद विवाद के बाद भगतसिंह के अनुरोध को

भाग लेती है। गुरुदेव निर्णय में भाग नहीं लेता केवल सुनता रहता है और फैसला हो जाने पर शीघ्रता से रात्रि के अन्धकार में गायब हो जाता है।)

पर्दा

दृश्य पाँचवाँ

दिल्ली, कुदसियाबाग के समीप एच. एस. आर. ए. का एक गुप्त स्थान ८ अप्रैल, १९२९ का एक प्रभात

सुखदेव लाहौर से थोड़ी देर पहले ही आया है। वह एकान्त कोठरी में अकेला घूम रहा है। उसका मुँह उतरा और दिल भरा हुआ है। वह किसी गहरी चिन्ता में निमग्न है।)

सुखदेव : मैं समझता था मैं अपने पर पूरा काबू किये हूँ पर साथी यशपाल की दृष्टि में तो मैं पूरी तरह हिल गया था। देखते ही उन्होंने पूछ लिया क्यों क्या हुआ? आँखें क्यों सूज रही हैं तुम्हारी? उन्हें क्या मालूम कि उस दिन मैंने कितना भारी त्याग किया था। परन्तु मुझे संतोष है कि दल के ध्येय की पूर्ति के लिए अपनी सबसे प्रिय वस्तु का उत्सर्ग मैं कर सका। ओफ़!... और उसके

लिए मुझे अवकाश नहीं है।

(गहरी सांस लेता है। भगवतीचरण का प्रवेश)

भगवतीचरण : सुखदेव ओह तुम!

सुखदेव : भगवती भाई, आप मौके से आये।

भगवतीचरण : तुम्हीं ने तो कहा था भगतसिंह को आखिरी विदाई देने चलो तो रात को रवाना हो जाना।

सुखदेव : अकेले आये हो?

भगवतीचरण : नहीं सब हैं। वे देखो"

(बाहर संकेत करता है। दुर्गा सुशीला और शची प्रवेश करते हैं।)

सुखदेव : आओ आओ। (भगवतीचरण से) आप सब यहीं रहें। मैं थोड़ी देर में आया।

(प्रस्थान)

सुशीला : कितना कठोर जीवन है, ओह!

भगवतीचरण : कठिन व्रत से ही इतिहास बनता है।

दुर्गा : घोर तपस्या से भी कठिन व्रत!

शची : माँ कहाँ है मेरे चाचाजी?

दुर्गा : (प्यार करके) अभी आयेंगे, बेटा।

सुशीला : उन्हीं से मिलने तो हम आये हैं।

शशी : यह नये चाचाजी का घर है ?

दुर्गा : हाँ।

शशी : पर वे दिखाई तो नहीं देते कहीं ?

(सब को छोड़कर दूसरे कमरे में दौड़ जाता है।)

भगवतीचरण : यह गड़बड़ करेगा।

दुर्गा : उससे बहुत हिल गया है।

(भगतसिंह सुखदेव के साथ साथ प्रवेश करता है। सब मिलते हैं। शशी दूर से ही देखकर 'नये चाचाजी नये चाचाजी' चिल्लाता हुआ आता है। भगतसिंह उसे गोद में उठा लेता है और बार बार प्यार करता है।)

शशी : चाचाजी हम आपसे मिलने आये हैं।

भगतसिंह : बहुत अच्छा किया तुमने बेटा।

शशी : चाचाजी यही आपका घर है ?

भगतसिंह : हाँ, तुम यहाँ जहाँ चाहो खेल सकते हो।

(शशी बहुत खुश होता है और यहाँ वहाँ कूदने फाँदने दौड़ने उछलने लगता है।)

दुर्गा : आओ सब इधर बैठो और कुछ खा-पी लो।

(वे पोटली खोलती हैं और सब बैठते हैं। भगतसिंह को रसगुल्ले और संतरे बहुत पसन्द हैं यही दुर्गा और सुशीला आग्रह पूर्वक बार बार उसे देती हैं। भगतसिंह एक रसगुल्ला लेकर खाता और खेलते हुए सभी को अपने हाथ से खिलाने लगता है।)

सुशीला : अरे भाई तुम आकर खाओ। उसे खाना होगा तो आप ही खाजायगा।

भगतसिंह : मेरा खाना बाकी रह गया क्या? इतना तो खा चुका हूँ।

दुर्गा : थोड़ा सा और।

भगतसिंह : (बैठकर) अच्छा लाओ।

(संतरे की फांक मुँह में रखता है।)

सुशीला : यों नहीं।

(रसगुल्ला उठाकर देती है।)

भगतसिंह : बस अब नहीं।

(रसगुल्ला लेकर मुँह में रखकर उठ जाता है। दुर्गा और सुशीला सब सामान समेट लेती हैं।)

सुखदेव : (घड़ी देखकर) सवा दस।

भगतसिंह : तो अब चलना चाहिए।

(उठ खड़ा होता है। उसके साथ सब उठ जाते हैं और भरे हुए हृदय से उसे विदा देते हैं। दुर्गा और सुशीला रोली और अक्षत से उसका टीका करती हैं। भगतसिंह जाने से पहले शची को प्यार करता है। शची उसके साथ जाने का आग्रह करता है पर भगतसिंह उसे समझा देता है। शीघ्रता से भगतसिंह निकल जाता है। सुखदेव उसके पीछे चला जाता है। भगवतीचरण खिड़की में सिर निकालकर बाहर देखने लगता है। स्त्रियाँ डबडबाई आँखों से सूने द्वार की ओर ताकती रह जाती हैं।)

शची : (उँगली दिखाकर) वे जा रहे हैं चाचाजी, वे जा रहे हैं, अरे वे जा रहे हैं—गये गये चले गये।

(मंच पर उसी की आवाज गूँजती रहती है।)

पर्दा

दृश्य छठा

नई दिल्ली, असेम्बली के एक माननीय सदस्य की कोठी।

मध्य अप्रैल १९२९ का सायंकाल

(असेम्बली में बम-विस्फोट के साक्षी जयकर मोतीलाल नेहरू और सैफुद्दीन किचलू बैठे चर्चा कर रहे हैं।)

मोतीलाल : असल पूछो तो बम शूस्टर ने फेंके थे।

किचलू : बिल्कुल सही बात, असेम्बली द्वारा तिरस्कृत बिलों को कानून बना देने की घोषणा असली बम-विस्फोट था।

जयकर : वायसराय को विशेषाधिकार इसलिए नहीं मिला है कि वह जनता की पुकार के प्रति कान बंद कर अपना हुकुम चलाये।

मोतीलाल : अगर ऐसा होगा तो भगतसिंह और दत्त भी रहेंगे।

किशन : ये बूस्टर के विस्फोटों की प्रतिध्वनि मात्र हैं।

जयकर : और अब पुलिस बहादुरों की वाहवाही ले रही है।

मोतीलाल : लिया करे उन्होंने तो अपना काम कर दिखाया। दो कानून दो बम दो गोलियां।

किशन : और मौत किसी की नहीं।

जयकर : इससे उनका उद्देश्य तो स्पष्ट है। वे सिर्फ बहरों को सुनाना चाहते थे।

मोतीलाल : किसी के प्राण लेना चाहते तो रिवाल्वर में काफी गोलियां थीं। लोग चिल्ला ही रहे थे कि 'पकड़ो पकड़ो' पर पकड़ने की हिम्मत कोई नहीं कर रहा था। दोनों बम फेंक कर इन्कलाब जिन्दाबाद के नारे लगाते और लाल पर्चे लुटाते खड़े हँस रहे थे।

किशन : मैंने तो ऐसी भगदड़ और लापरवाही इतनी उमर में नहीं देखी।

जयकर : जिसके जिधर सींग समाये वह उधर ही दौड़ गया।

मोतीलाल : पर जिन्हें भागना चाहिए था वे दृढ़ता से

दृश्य छठा

नई दिल्ली, असेम्बली के एक माननीय सदस्य की कोठी।

मध्य अप्रैल १९२९ का सायंकाल

(असेम्बली में बम-विस्फोट के साक्षी जयकर, मोतीलाल नेहरू और सैफुद्दीन किचलू बैठे चर्चा कर रहे हैं।)

मोतीलाल : असल पूछो तो बम शूस्टर ने फेंके थे।

किचलू : बिल्कुल सही बात, असेम्बली द्वारा तिरस्कृत बिलों को कानून बना देने की घोषणा असली बम-विस्फोट था।

जयकर : वायसराय को विशेषाधिकार इसलिए नहीं मिला है कि वह जनता की पुकार के प्रति कान बंद कर अपना हुक्म चलाये।

मोतीलाल : अगर ऐसा होगा तो भगतसिंह और दत्त भी रहेंगे।

दिवसू : वे मुख्तर के विस्फोटों की प्रतिध्वनि मात्र हैं।

जयकर : और अब पुलिस बहादुरी की वाहवाही ले रही है।

मोतीलाल : लिया करे उन्होंने तो अपना काम कर दिखाया। दो कानून दो बम दो गोलियाँ।

दिवसू : और मौत किसी की नहीं।

जयकर : इससे उनका उद्देश्य तो स्पष्ट है। वे सिर्फ बहरों को सुनाना चाहते थे।

मोतीलाल : किसी के प्राण लेना चाहते तो रिवाल्वर में काफी गोलियाँ थीं। लोग चिल्ला ही रहे थे कि 'पकड़ो पकड़ो' पर पकड़ने की हिम्मत कोई नहीं कर रहा था। दोनों बम फेंक कर 'इन्कलाब जिन्दाबाद' के नारे लगाते और लाल पर्चे लुटाते खड़े हँस रहे थे।

दिवसू : मैंने तो ऐसी भगदड़ और हलचली इतनी उमर में नहीं देखी।

जयकर : जिसके जिधर सींग समाये वह/उधर ही दौड़ गया।

मोतीलाल : पर जिन्हें भागना चाहिए था व दृढ़ता से

खड़े थे। पुलिस कब आये और उन्हें पकड़ ले जाये इसकी प्रतीक्षा कर रहे थे।

किचलू : भगतसिंह को लगा कि पिस्तौल उसके हाथ में है इसीसे शायद पुलिस आगे नहीं आ रही। उसने पिस्तौल एक ओर फेंक दिया और खाली हाथ खड़ा होगया।

जयकर : और तब सार्जेन्ट पेरी ने आगे बढ़कर उसे गिरफ्तार किया।

(एक वृद्ध सज्जन प्रवेश करते हैं।)

जयकर हलो, आइये सर वामन जी इलास !

वामनजी : आया भई आया। शुक्र है खुदा के घर से लौट आया।

(लड़खड़ाते हुए आकर सोफा पर बैठते हैं।)

मोतीलाल मैं आपको बधाई देता हूँ। सर शुस्टर का क्या हाल है ?

वामनजी : ठीक है। मामूली सा ही झपट्टा लगा था उन्हें।

मोतीलाल नेहरू : और करार ?

वामनजी : (हँसकर) मत पूछिये, मत पूछिये। बुरी तरह हौलदिल होगया था। अब तक उनकी कँपकँपी नहीं गई है।

जयकर : सर साइमन के लिए कोई डर की बात न थी। वे तो प्रेसीडेन्ट महोदय के अतिथि के स्थान पर बैठे थे।

वामनजी : पर वे भी पलायन कर गये। मौत का डर बुरा होता है।

जयकर : उनके कमीशन ने भारत की भावनाओं को कितना उभाड़ा है। यह वे जाते जाते देख सके।

वामनजी : मैं आपसे बिल्कुल सहमत हूँ मिस्टर जयकर।

मोतीलाल : मुझे मिस्टर राव के लिए दुख है। उन बेचारों की नाक…

वामनजी : ज्यादा विकृति नहीं आई।

मोतीलाल : और मिस्टर शंकर राव ?

वामनजी : वे भी ठीक हैं। मेडिकल मेम्बर महाशय आप

लोगों की दृढ़ता तो सराहनीय है। मिस्टर ब्रूस्टर का कहना है कि मालवीय, जिना आप और पटेल साहब तो आखिर तक ऐसे डटे रहे जैसे कुछ हुआ ही न हो।

मोतीलाल : ब्रूस्टर ने डेस्क के नीचे छिपकर बड़ी होशियारी की वरना न जाने क्या हो जाता।

वामनजी : हाँ वे बालबाल बच गये। लेकिन दिल दहला देने वाले भयंकर विस्फोटों में आप कैसे जमे रहे?

मोतीलाल : हमें विस्फोटों के बीच ही रहना पड़ता है।

वामनजी : खुदा खैर करे। मेरे तो कानों के पर्दे बेकार होगये हैं।

मोतीलाल : लेकिन उन जवांमर्दों की बहादुरी तो देखो जान बचाने के लिए भागे भी नहीं।

(मदनमोहन मालवीय का आना।)

वामनजी : आइये पंडित जी।

मालवीयजी : (बैठते हुए) उस दिन के बाद आज आपको देख रहा हूं।

वामनजी : खुदा के शुक्र से लेकिन मैं उन नौजवानों के लिए दुखी हूँ।

मालवीयजी : मुझे तो उनके लिए गर्व है। सारे देश को उनके लिए गर्व है। उन्होंने बड़ी बहादुरी से जनभावना को व्यक्त किया है।

वामनजी : निस्संदेह लेकिन उन्होंने बच निकलने की कोशिश क्यों नहीं की? सर करतार और दूसरे सभी की राय है कि वे आसानी से ऐसा कर सकते थे।

मोतीलाल : ऐसा न करने के लिए वे कृतसंकल्प थे लेकिन सरकार उनके इरादों को बुरे से बुरे रूप में रख रही है। उनके नैतिक साहस को भंग करने के लिए कमीने हथकंडों का काम में लाया जा रहा है।

वामनजी : वे सरकार को उखाड़ फेंकना चाहते हैं और सरकार उन्हें नष्ट कर देने पर तुली है।

मालवीयजी : इस सरकार को तो हम भी उखाड़ फेंकना चाहते हैं।

वामनजी : लेकिन, लेकिन…

मोतीलाल : वे केवल विध्वसक नहीं हैं। वे निश्चित आदर्शों से प्रेरित हैं ?

मालवीयजी : वे समाजवादी सरकार चाहते हैं।

वामनजी : लेकिन क्या भारत इसके लिए उपयुक्त स्थल है ?

मालवीयजी : कम से कम वे अपने ध्येय के प्रति ईमानदार हैं।

मोतीलाल : ये कोरे हिंसावादी पागल नहीं हैं। उनका उत्कट देश प्रेम जनता के लिए प्रेरणा की वस्तु है।

मालवीयजी उनसे प्रतिशोध लेकर सरकार उन्हें मिटाना चाहती है। यह असंभव है।

मोतीलाल : इससे तो वे अमर हो जायेंगे। उनकी ख्याति का शिखर एवरेस्ट से भी ऊँचा होगा।

वामनजी : कुछ भी हो, उनके दुस्साहस ने असेम्बली को हिला दिया। बहरे कानों को सुनाने के लिए जो धड़ाका उन्होंने किया उससे सम्पूर्ण देश दहल गया !

मालवीयजी : उसी जोर को अब मिटाया जा रहा है।

वामनजी : किस तरह ?

मालवीयजी : यही कि दल मुलजिम होगया।

वामनजी : नहीं मैंने कभी इस पर विश्वास नहीं किया।

मोतीलाल : मुझे तो यह खबर पढ़ कर सिर्फ हँसी आई। वे इतने कच्चे खिलाड़ी नहीं हो सकते। उनका अपना इतिहास है उनके अपने मान्य हैं। प्राणों का मोह छोड़कर अपने ध्येय पर निछावर होनेवाले इस तरह बहकाये नहीं जा सकते।

मालवीयजी : और अब पुलिस जनता को आतंकित कर रही है। जिला भर में यात्रियों को इकट्ठा कर पूछताछ की जा रही है। मोटर ड्राइवरों को परेशान किया जा रहा है। टाइप मशीनों के मालिकों को धमकाया जा रहा है। सिनेमाओं डाकखानों तारघरों में पुलिस के आतंक से लोग जाते डरते हैं।

मोतीलाल : मेरठ षड्यन्त्र जैसे ही किसी और षड्यन्त्र को खड़ा करने की यह भूमिका है। सरकार

अपने दिमाग़ी सन्तुलन को खो बैठी है। यह कोई सही कदम उठाने की स्थिति में नहीं है।

वामनजी : मैं समझता हूं आप दुरुस्त कह रहे हैं मिस्टर नेहरू लेकिन लेकिन ···

(टेलीफोन की घंटी बजती है। वामन जी रिसीवर कान से लगाते हैं।)

हलो, मिस्टर राम। यस यस वामनजी स्पीकिंग। ह्वाट दे से दे हैव अनअर्थ्ड ए वाइड स्प्रेड कांस्पिरेसी! माई गॉड! माई एम कमिंग।

(वामनजी उठ खड़े होते हैं। मोतीलालजी मालवीयजी की ओर मालवीयजी मोती लालजी को अर्थ भरी दृष्टि से देखते रहते हैं।)

पर्दा

दृश्य सातवां

शिमला, पंजाब गवर्नर का ग्रीष्मकालीन निवास

१९ सितम्बर १९२९ का सायंकाल

(लाट पंजाब गवर्नर ने लाहौर षड्यन्त्र-संबंधी समस्त कागजात तलब किये हैं। कुछ फाइलों और कागजों का अंबार उसके सामने टेबिल पर लगा है। वह एक फाइल उठाकर देखता है। साथ में मदद के लिए बैठा अधिकारी आगे झुक आता है।)

अधिकारी : यह पुलिस की रिपोर्ट है योर एक्सेलेन्सी, कि लाहौर-षड्यन्त्र अब थमाया जा सकता है। मुखबिरों की सूचना पर सोलह व्यक्ति गिरफ्त में आ चुके हैं। बाकी फरार हैं उनके लिए सरगर्मी से दौड़ धूप हो रही है।

गवर्नर : अच्छा, दूसरी फाइल लो।

अधिकारी (फाइल सामने रखता है) श्रीमान् यह

असेम्बली बमकांड में आजन्म कारावास की सजा पाये दोनों बंदियों को इस मामले के सिलसिले में पंजाब गवर्नमेंट को सौंपने का आदेश है।

गवर्नर : भगतसिंह और दत्त के लिए। एक मियांवाली और दूसरा लाहौर सन्ट्रल जेल भेजा गया था।

अधिकारी : जी श्रीमान्।

गवर्नर : मामूली बंदियों के तौर ?

अधिकारी : निश्चय श्रीमान्।

गवर्नर : दिल्ली में शाही मेहमान के तौर पर रह रहे थे। पंजाब में आकर ही उन्हें पता लगा कि वे आज अभागे कैदी हैं।

अधिकारी : श्रीमन् उनकी हिमाकत तो देखिये वे युद्ध बंदियों जैसी सुविधाओं की मांग कर रहे थे।

गवर्नर : उन्होंने सोचा अनशन से सरकार को झुकाया जा सकेगा।

अधिकारी : (दूसरा कागज निकालकर) अमानुषिक व्यवहार की शिकायत श्रीमन्।

गवर्नर छोड़ो छोड़ो आगे चलो। (अधिकारी पन्ना पलट देता है।) ठहरो जरा देखूं। ६ जुलाई, मियांवाली जेल से रवानगी। तलाश एक मेजर पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट, एक डिप्टी सुपरिन्टेन्डेन्ट तीन सब इन्सपेक्टर और एक दर्जन सशस्त्र सिपाही। २५ दिन का भूखा कमजोर हथकड़ियों में जकड़ा भगतसिंह! लाहौर स्टेशन पर उसे उतारने के लिए और पचास सशस्त्र सिपाहियों का दस्ता! किसने ऐसा हुक्म दिया था देखो तो!

अधिकारी : सर्वोच्च पुलिस अधिकारी के हस्ताक्षर हैं श्रीमन्। एहतियाती कार्यवाही।

गवर्नर : इससे सरकार की कमजोरी झलकती है। एक नोट दो। फिर ऐसा न होना चाहिए।
(अधिकारी नोट देता है। गवर्नर सही करता है।)

अधिकारी : (दूसरी कागज उठाकर) अनशन में विस्तार की रिपोर्ट श्रीमन्। दूसरे अभियुक्त भी अनशन में भगतसिंह और दत्त के साथ शामिल।

गवर्नर : हां, हां। जनता की सहानुभूति पाने का उपाय घृणित किन्तु चालाकी से भरा हुआ।

अधिकारी मोट है श्रीमन्, सरकार न झुकने के लिए कृत संकल्प।

गवर्नर : प्रशंसनीय मोट।

अधिकारी अनशन की दशा में भी केस चालू। पेशी भुगताने के लिए अभियुक्तों को अदालत में ले जाना जारी। कोई छूट नहीं, कोई रियायत नहीं।

गवर्नर ठीक, ठीक रियायत की जरूरत नहीं।

अधिकारी : १७ जुलाई भगतसिंह द्वारा अदालत के सामने पुलिस के दुर्व्यवहार की बकवास। उपेक्षा बरती जाने पर मुकदमा दूसरी अदालत में ले जाने की धमकी। पुलिस सुपरिन्टेण्डेण्ट से भगतसिंह की झड़प। उद्दंडता के लिए अदालत द्वारा बंदियों के लिए दंड की घोषणा।

गवर्नर स्वजनों और वकीलों को सुविधा छीन

संशोधित विस्तृत विवरण।

(रिपोर्ट सामने रखता है।)

गवर्नर (देखकर) भगतसिंह का चेहरा आकर्षक और बुद्धिमत्तापूर्ण। निहायत गंभीर और शांत। उसकी बातचीत और दृष्टि में सज्जनता। यतीन्द्रदास का और भी मृदुल तथा एक कन्या की तरह कोमल और सुशील। एकदम झूठ और बनावटी। ये कांग्रेस वाले ये गांधीवादी अहिंसा और सत्य के पुजारी भी बनते हैं और हिंसक-हत्यारों की प्रशंसा करते भी नहीं थकते। हमारी सरकार उनकी पाई परवाह नहीं करती। पाई परवाह नहीं करती।

(मेज पर हाथ पटकता है।)

अधिकारी : (एक कागज में से पढ़ता है) विद्यार्थी की मुलाकात भी असफल।

गवर्नर : जिसका दिल और दिमाग विप्लववादियों के साथ और शरीर कांग्रेस का अनुयायी। साहों का मददगार और चोर का सा पाखण्ड। दोनों नावों में पैर रखनेवाला।

सबसे खतरनाक आदमी। उसे पंजाब में पैर न रखने देना था मगर।

अधिकारी (एक फाइल में से) जेम्स वाल्श कमेटी और उसकी सिफारिशें।

गवर्नर : हाँ हाँ और उसने कुछ मतलब भी हासिल किया था।

अधिकारी भगतसिंह और दत्त ने ८१ दिन बाद और दूसरे बंदियों ने ११ दिन बाद २ सितम्बर को अनशन तोड़ा।

(गवर्नर की पुत्री कन्या का प्रवेश)

कन्या उनका साहस गजब का है न पापा इतना लंबा अनशन! इतिहास में अनोखा!

गवर्नर (भड़ककर) तुम ऐसा कहती हो मेरी बच्ची?

कन्या क्यों न कहूँ?

गवर्नर : वे खूनी हैं, विद्रोही हैं।

कन्या वे हाड़-मांस के बने हैं वे आदमी हैं।

गवर्नर तुम अस्वस्थ दिखती हो। जाओ और आराम करो मेरी बच्ची?

सम्बन्धित विस्तृत विवरण ।

(रिपोर्ट सामने रखता है ।)

गवर्नर : (देखकर) भगतसिंह का चेहरा प्रभावक और बुद्धिमत्तापूर्ण । निहायत गंभीर और शांत । उसकी बातचीत और दृष्टि में सज्जनता । यतीनदास तो और भी मृदुल तथा एक कन्या की तरह कोमल और सुशील । एकदम झूठ और बनावटी । ये कांग्रेस वाले ये गांधीवादी अहिंसा और सत्य के पुजारी भी बनते हैं और हिंसक-हत्यारों की प्रशंसा करते भी नहीं थकते । हमारी सरकार उनकी कतई परवाह नहीं करती । कतई परवाह नहीं करती ।

(मेज पर हाथ पटकता है ।)

अधिकारी : (एक कागज में से पढ़ता है) विद्यार्थी की मुलाकात भी असफल ।

गवर्नर : जिसका दिल और दिमाग विप्लववादियों के साथ और बाहर कांग्रेस का अनुयायी । लोमड़ी सा मक्कार और चोर सा चालाक । दोनों नावों में पैर रखनेवाला ।

सबसे खतरनाक आदमी। उसे पंजाब से
पर न रखने देना था सर।

अधिकारी (एक फाइल में से) जेल जाँच कमेटी और
उसकी सिफारिशें।

गवर्नर : हाँ हाँ और उसने कुछ मतलब भी हासिल
किया था।

अधिकारी भगतसिंह और दत्त ने ८१ दिन बाद
और दूसरे बंदियों ने ५१ दिन बाद
२ सितम्बर को अनशन तोड़ा।

(गवर्नर की युवा कन्या का प्रवेश)

कन्या : उनका साहस गजब का है न पापा इतना
लम्बा अनशन! इतिहास में अनोखा!

गवर्नर (चौंककर) तुम ऐसा कहती हो मेरी
बच्ची?

कन्या क्यों न कहूँ?

गवर्नर वे खूनी हैं विद्रोही हैं।

कन्या वे हाड़-मांस के बने हैं, वे आदमी हैं।

गवर्नर : तुम अस्वस्थ दिखती हो। जाओ और
आराम करो मेरी बच्ची?

कन्या : (ममसुनी करके) पापा मैं उस देशभक्त शहीद के लिए आँसू न रोक सकी।

गवर्नर : क्या ?

कन्या : वही यतीन्द्रदास जिसकी शव-यात्रा का पथ, लाहौर से कलकत्ते तक, फूलों और आँसुओं से बना था! वह उसका हकदार था पापा क्या वह नहीं था ?

गवर्नर : ओह सबसे बड़ी गलती जो सरकार ने की वह यह थी। उसका मृत शरीर देना नहीं था। उन्होंने उससे पूरा फायदा उठाया। उन्होंने सारे देश में आग बरसा दी है। (अधिकारी के प्रति) एक आदेश लिखो इसकी पुनरावृत्ति एक दम वर्जित। बंदियों के शव उनके परवालों को सौंपने की प्रथा समाप्त।

(अधिकारी आदेश लिखता है। गवर्नर सही करता है।)

कन्या : पापा पापा सर्वाधिक क्रूर और अमानुषिक आदेश! कृपया इसे रद्द कर दीजिये।

गवर्नर : शासन इसी तरह होता है बेबी!

भगवतीचरण ने अपना नाम रखाने के लिए बहुत जिद की। मगर पूर्व निश्चित नामों में से साथी यशपाल को प्रथम रखा गया। भगवतीचरण अपने प्रति फैलाये गये भ्रम को दूर करने के लिए, कि वे सरकारी गुप्तचर हैं इस जोखिम के कार्य में अपने आपको झोंक कर अग्निपरीक्षा देना आवश्यक समझते थे। यशपाल उदास थे परन्तु दल के निर्णय के आगे नतशिर थे। दोपहर से पहले ही वे रहे-सहे कामों को पूरा करने निकल गये थे और अभी अभी लौटकर भोजन करके बैठे हैं। बैरे के काम पर नियुक्त साथी घीसविहारी खाना लाकर टेबल पर लगाते हैं।)

यशपाल : (विनोद से) बैरा खाना एक दम ठंडा होगया है।

घीसविहारी : होगया है, हुजूर।

यशपाल : आज तो खा लेता हूँ लेकिन आयन्दा…

घीसविहारी : आयन्दा नहीं होगा हुजूर।

(झुककर अर्ज करता है, सुशीला और दुर्गा मुँह दबाकर हँसती हैं।)

यशपाल : (खाते खाते मदनगोपाल से) भैया नहीं दिख रहे हैं?

मदनगोपाल : वे धन्वन्तरी के साथ गये हैं। मोटर का ड्रायवर लेने और ड्राइवर का प्रबन्ध करने के बा'' ही आयेंगे।

गिर जाना । सुखदेवराज का पीड़ा से छटपटाना ।)

यशपाल : यह क्या कर लिया ?

सुखदेवराज : (पीड़ा से कराहते हुए) परीक्षा के लिए फेंकते समय बम हरी भाई के हाथ में फट गया । वे बुरी तरह घायल होकर पड़े हैं। मेरे पैर में चोट आई है । बच्चन कुछ दूर था । वह बच गया । वह उनके पास है ।

(सब इस संवाद से तत्क्षण उठ जाते हैं ।)

यशपाल : मदनगोपाल तुम यहां रहो । मैं और छैलबिहारी जाते हैं।

(यशपाल और छैलबिहारी का सुखदेवराज से स्थान और पता पूछकर भागते हुए प्रस्थान ।)

दुर्गा : (आंखों के आंसू रोककर सुखदेवराज से) वे कैसे हैं भाई ? कैसे फट गया बम ?

सुखदेवराज : उनके चोट ज्यादा है भाभी । वे बम हाथ में लेकर फेंक रहे थे । उसका थोड़ा कुछ ढीला मालूम पड़ा तो बोले यह ठीक नहीं है । इसे रहने दिया जाए । मैंने कहा, डर लगता हो तो लाओ मैं फेंक दूं । मैं उनसे बम लेने के

उसके उपचार में लग जाते हैं। आकाश का आना और इस अप्रत्याशित दुर्घटना की खबर से स्तब्ध होकर बैठ जाना। यशपाल और वैशम्पायन का प्रवेश। उन्हें देखकर सब व्यग्रता से अधीर हो उठते हैं। उत्तर में वैशम्पायन फूट फूटकर रोने लगता है।)

यशपाल : (भरे हुए गले से) हम अपने बहादुर सेनानी को बचा नहीं सके।

(दुर्गा की चीख निकल जाती है। वह एक निश्चेष्ट मूर्ति मात्र बनकर रह जाती है। सुशीला अपना सिर थामकर बैठी रह जाती है। मदनगोपाल एक बुत की भांति खड़ा रहता है।)

सुखदेवराज : (पीड़ा से) ओह, बेहद दर्द है!

(छैलबिहारी का प्रवेश।)

यशपाल : (क्रोध से) तुम्हें वहां रहने के लिए कहा था न? तुम छोड़कर कैसे आगये?

छैलबिहारी : मृत्यु होने के बाद ही आया हूं।

यशपाल : फिर भी छोड़ना तो नहीं था। हम पुकारते

पुकारते परेशान होगये। अँधेरी रात में जगह ढूंढना मुश्किल होगया।

छैलबिहारी : रास्ता दिखाने के लिए सफेद झण्डियां लटका दी थीं न।

आजाद : लेकिन छोड़ जाने के लिए तुम्हें किसने कहा था?

(आजाद की धीमी परन्तु दृढ़ आवाज छैलबिहारी को चुप रह जाने के लिए विवश कर देती है। वह अपना सिर झुका लेता है। वैशम्पायन सिसकता रहता है।)

यशपाल (आजाद की ओर देखकर) अब?

आजाद : अब क्या हो सकता है? (भाभी को लक्ष्य करके) तुम हम सब की माँ-बहिन से बढ़कर हो। तुमने दल के लिए अपना सर्वस्व दे दिया है। हम सब कभी तुम्हारे ऋण से उऋण न हो सकेंगे। अपना बच्चा और भाई समझकर तुम जो आदेश दोगी उसे हम अपना पवित्र कर्त्तव्य मानकर पूरा करेंगे।

(दुर्गा निर्वाक निस्पंद बनी रहती है। अचानक आघात ने उसे काठ बना दिया

है। उसका निश्चल मौन आत्मदमन उपस्थित साथियों के धैर्य को हिला देता है पर जिस स्थिति में वे रुके हैं उसमें इससे सहायता ही मिलती है। आज़ाद और बच्चन उन्हें सहारा देकर पलंग तक ले जाते और लिटा देते हैं। सुशीला को भी दूसरे पलंग पर लिटा दिया जाता है। ऊपर की बत्तियां बुझाकर मंच के उस भाग पर अँधेरा कर दिया जाता है। आज़ाद और यशपाल को छोड़कर सब साथी निकल जाते हैं।)

यशपाल : एक योद्धा की मृत्यु !

आज़ाद : जिसका मातम भी हम खुलकर नहीं मना सकते !

यशपाल : यही हमारी मजबूरी है। लेकिन वे आखिर तक दृढ़ थे।

आज़ाद : कुछ बोल भी पाये ?

यशपाल : मुझे देखकर बोले, तुम आ गये और इधर उधर नज़र दौड़ाई। मैंने कहा भैया घर पर नहीं थे। मैं और छैलबिहारी सुनते ही दौड़े आये हैं। कहने लगे कोई बात नहीं। वे

भी आ जाते तो देख लेता।—प्यास से जीभ ऐंठ रही थी। बच्चन भीगे कपड़े से पानी के बूंद मुंह में निचोड़ देता था। हमने उन्हें बाहों पर उठाने की कोशिश की पर असह्य दर्द से वे चीख पड़े अतः मैंने कहा, घबराना नहीं अभी खाट लाता हूं। बोले डरता नहीं हूं पर इतना अफसोस जरूर है कि भगतसिंह को छुड़ाने में योग न दे सका। काश, यह मौत दो दिन बाद आती। मैंने कहा तो खाट लाता हूं। बोले, बेकार है। बम का धड़ाका दूर दूर तक सुना गया होगा। कहीं संदेह में पुलिस खोज करती आजाय तो क्या फायदा? मेरे हाथ भी तो नहीं रहे। यदि यही साबित होते तो तुम एक रिवाल्वर दे जाते और पुलिस को मेरे आहत होने की सूचना दे देते, तब उस समय उनसे दो दो हाथ करके ही जाता। यही कसक रह गया।—और देखो भगतसिंह को छुड़ाने का प्रयत्न रुकना नहीं चाहिए। मैंने कहा, नहीं रुकेगा और दो दिन बाद तुम उनसे

मिल सकोगे। इस पर हँसे, बोले दो दिन किसके ? बम का कोई टुकड़ा गुर्दे में जा फँसा है। मैं अब थोड़ी देर का ही मेहमान हूं।

प्रकाशवती : (आंखों से आंसू पोंछते हुए) ऐसे अनन्यनिष्ठ सर्वस्वत्यागी वीर पर भी हमारे दल के लोगों ने संदेह किया। यदि पाप कहीं है तो इससे बड़ा अमार्जनीय पाप दूसरा न होगा।

यशपाल : छैलबिहारी को पास छोड़कर मैं और बच्चन भागे कालेज बोर्डिंग से दो चादरें और टाट लो। सेठी और वात्स्यायन को भी सहायता के लिए ले लिया। इन्द्रपाल भी मिल गया था। हम रात के सघन अंधकार में बड़ी मुश्किल से वहां पहुँच पाये। जाकर देखा तो सब समाप्त हो चुका था। छैलबिहारी उनकी मृत्यु हो जाने के बाद शायद वहां से भाग आया था। मैंने साथ लाई चादरों से शरीर को ढक दिया। सबने वीर योद्धा के शव को आखिरी सलामी दी और उमड़ते हृदयों को दबाकर लौट आये।

आज़ाद : (मर्माहत होकर) तो शव के अंतिम संस्कार का प्रबंध…

यशपाल : रात आधी से अधिक बीत चुकी है। कुछ देर ठहर कर चलेंगे।

आज़ाद : कहीं जंगली जानवर शरीर को खराब न करें ?

यशपाल : इतनी देर न किया होगा तो न करेंगे।

आज़ाद : शरीर बुरी तरह क्षतविक्षत होगा ?

यशपाल : बहुत बुरी तरह। एक हाथ कलाई से उड़ गया था। दूसरे की उँगलियाँ चली गई थीं। आँतें पेट के बाहर आगई थीं। शरीर लहू लुहान हो रहा था।

आजाद : मालूम पड़ता है बम हाथ में ही फट गया था ?

यशपाल : यही लगता है।

आजाद : अब एक्शन किस तरह होगा ? दो आदमी कम होगये हैं।

यशपाल : उनका अंतिम अनुरोध था कि एक्शन न रुके। वह तो करना ही होगा।

आख़िरी इच्छा दो आदमी कम पड़ गये एक तुम, एक हम में से किसी और को चुन लेना।

(छैलबिहारी और मदनमोहन की ओर संकेत करते हैं।)

पर्दा

दृश्य दूसरा

लाहौर, सेन्ट्रल जेल

७ अक्टूबर १९३० का सायंकाल

(लाहौर षड्यंत्र केस के लिए नियुक्त ट्रिब्यूनल ने आज अपना फैसला सुना दिया है, यह खबर आग की तरह बोर्स्टल जेल से सेन्ट्रल जेल की चहारदीवारी के अन्दर पहुंच गई। कैदियों ने खाना लेने से इनकार कर दिया और भगतसिंह जिन्दाबाद के नारे लगाते हुए अपनी अपनी कोठरियों में लौट आये। जेल के अधिकारियों में हलचल मच गई है।)

जेलर : क्या बात है? सब वार्डरों को हाजिर करो।

नायब जेलर : सब आ रहे हैं हुजूर।

(एक एक करके सब वार्डर आते हैं।)

जेलर (वार्डरों से) यह कैसा हंगामा है?

वार्डर : (चुप)

पड़ते हैं। नायब जेलर घबराया हुआ प्रवेश करता है।)

नायब जेलर : लाहौर षड्यन्त्र के फांसी और आजन्म कैद की सज़ा पाये हुए बंदी हुजूर!

(हुक्मनामा हाथ में पकड़ाता है।)

जेलर : जितने हैं उनको अन्दर लो। उनको अन्दर लो।

(जेल के भीतर से पहली फिर 'भगतसिंह ज़िन्दाबाद' की आवाज़ लगाते हैं। भगतसिंह सुखदेव राजगुरु और उनके पीछे उम्र कैद की सज़ा पाये हुए बंदी एक एक कर प्रवेश करते हैं। वे 'इन्कलाब ज़िन्दाबाद' के नारों से जेल को गुंजा देते हैं। जेलर के चेहरे का रंग उड़ जाता है और वह हक्का बक्का हो जाता है।)

नायब जेलर (जेलर से) वो भी पुलिस के जवान

जेलर : पहले इन्हें बंद करो। उन्हें पीछे देखेंगे।

(बंदियों का मंच से जेल के अन्दर की ओर ले जाया जाना। गोरे जेल सुपरिन्टेन्डेन्ट का प्रवेश।)

सुपरिन्टेण्डेण्ट : (व्यंग से) आज तो आपके जेल में बड़ी रौनक है

जेलर (झुककर) हुजूर, जेल का अनुशासन आज खतरे में है।

सुपरिन्टेण्डेण्ट तुम ऐसा कहते हो राय साहेब !

जेलर : जेल के बाहर और भीतर एक तूफ़ान उठ खड़ा हुआ है। आपके इकबाल से जेल के अन्दर हम उसे इस तरह नेस्तनाबूद कर देंगे कि उसका निशान भी बाकी नहीं रहेगा।

सुपरिन्टेण्डेण्ट यह तुम्हारी वफादारी का सबूत होगा।

जेलर बन्दा सरकार का नमकहलाल नौकर है।

सुपरिन्टेण्डेण्ट मैं जानता हूँ। "पुलिस के जवान तुम्हारी मदद को आ रहे हैं।

(सुपरिन्टेण्डेण्ट का जाना और डंडे तथा लाठियां लिए हुए पुलिस के सिपाहियों का कतार की कतार मंच पर से निकलकर भीतर जेल में प्रवेश करना।)

जेलर नायब साहेब जाओ और देखो। एक एक को चीन चीन कर

नायब कोई नहीं बचेगा हुजूर ।

जेलर उसके बाद सबको फाँसियों पर दो । रात भर, दिन भर

नायब : आप यहीं से सुनते रहिये ।

जेलर : और देखो वार्डरों को भी…

नायब जी हुजूर ।

(पुलिस के जवानों के पीछे नायब का प्रस्थान । नेपथ्य से 'इन्कलाब जिन्दाबाद' के गुरुगम्भीर घोष का वातावरण को चीरते हुए सुनाई पड़ना । उसके बाद चीखना चिल्लाना और आर्तनाद का मर्मभेदी शब्द निरन्तर आना और मंच का काँपना । जेलर का पैशाचिक अट्टहास ।)

पर्दा

दृश्य तीसरा

इलाहाबाद : हीवेट रोड का एक एकान्त रेस्टोरां

२७ फरवरी १९३१, दोपहर से कुछ पहले

(तीन पत्रकार सर्व श्री पाठक, पुमेश्वर और नायडू एक छोटे से कमरे में इत्मीनान से बैठे चाय पी रहे हैं। बीच बीच में गपशप चल रही है।)

पाठक : डेढ़ सौ साल राज करके अंग्रेजों को पता चल गया है कि जिसे वे धोखाधड़ी में गटक गये थे उसे पचा लेना उनके बस में नहीं है। वायसराय की ट्रेन को उड़ाने और पंजाब गवर्नर पर गोली चलाने के साहस पूर्ण

पुमेश्वर : इन आखिरी दो सालों में तो…

पाठक : उन्हें नाकों चने चबाने में कसर नहीं रही।

नायडू : (प्याले में डालकर) पास की चीज़ बड़ी दिखाई देती है। संघर्ष की लंबी परंपरा में

ये दो खास प्रसंग कोई बड़ा महत्व नहीं रखते।

पाठक : मेरे विचार से रखते हैं। सावरकर-बन्धु से अब तक घटनाओं की एक देशव्यापी शृंखला ने उन्हें अतीत से कुछ अधिक महत्व दिया ही है।

मायडू : हमें ऐसा लगता है।

पुणेकर : सिपाही-विद्रोह, वंगीय क्रांति, दिल्ली और पंजाब के प्रयास व दूसरे क्रांति प्रयत्न

मायडू : (बीच में टोककर) हाँ हाँ, अपने समय और स्थान के लिहाज से ऐसा ही महत्व रखते थे। उस काल का कोई आदमी होता तो वह बताता।

पाठक : मेरा मतलब उनके महत्व को कम आँकने से नहीं है।

मायडू : तो?

पाठक : उस विरासत से प्रेरणा पाकर ये दो खास अंग्रेजों के आगे एक प्रश्नचिह्न बनकर खड़े हुए हैं।

पुणेकर : क्रांतिकारियों से जेलें भर गई हैं। अंग्रेज

के उपहार न्यायालयों में बँट रहे हैं। घर घर और नगर नगर षडयन्त्र-केस चल रहे हैं। गोलियों से जगह जगह युवक भूने जा रहे हैं

पाठक सामूहिक अनशन चल रहे हैं दिनों हफ्तों नहीं महीनों

मायदू हाँ इस मामले में जरूर रिकार्ड तोड़ दिया गया है।

पाठक यही नहीं उन्होंने लाखों से स्वराज्य की पगडंडी को राजपथ में बदला है। अंग्रेजों को लगने लगा है, भावी पीढ़ी भगतसिंह, सुखदेव राजगुरु और आजाद बनने जा रही है।

मुसेकर संगीनें फाँसी और उत्पीड़न नई पौध को खाद-पानी का काम कर रहे हैं।

मायदू : फिर भी अभी बहुत लंबा रास्ता है। मैं आपको हताश नहीं करना चाहता। अभी भगतसिंहों और आजादों की कई फसलों को इसी तरह मौत में दबना पड़ेगा। फिर भी

यह निश्चय नहीं कि इस देश में किस तंत्र की जड़ मजबूत हो सकेगी।

पुलेकर : हम पत्रकारों का भी कुछ कर्तव्य है ?

नायडू : हम वह पूरा कर रहे हैं।

पाठक : (कुर्सी लेकर) चाय की मेज पर विवाद करके ?

नायडू : हाँ हाँ यही तो रास्ता है ठीक निर्णय पर पहुँचने का।

पुलेकर : हम ठीक निर्णय पर पहुँच गये।

पाठक : किस निर्णय पर ?

नायडू : हम पत्रकारों को कलम रख कर पिस्तौल उठा लेनी चाहिए। आजादी के स्वर पिंजड़े में बंद हैं। उन्हें मौत देने की जरूरत है ताकि एक नया भार ए का काम दिन दिन दूनी गति से दौड़ चले। प्रत्यक्ष समस्या का काम प्रश्नों के आगे पड़ा है उसका हल प्रस्तुत करना ही होगा

(उसी समय पत्रकार की सेन बजाते हुए आते हैं और किसी किसी को लेते एक कुर्सी पर पसरे बैठ जाते हैं।)

सेन : (चिल्लाकर) बेरा ज़रा एक कप चाय।

मायडू : इतने उत्तेजित किसलिए है मिस्टर सेन!

सेन : (चीखकर) ऐं तुम सब! सुना नहीं अल्फ्रेड पार्क में भारी गोलीकांड हो गया!

पाठक : गोलीकांड गोलीकांड, किससे?

सेन : आज़ाद और पुलिस में।

पुस्कर : (आशंकित होकर) तो यहाँ क्या कर रहे हो? चलो दौड़ो देखें।

सेन : वे आज़ाद की लाश तो ले गये।

(उठ खड़ा होता है। पाठक भी खड़े हो जाते हैं।)

मायडू : (खड़े होकर) चाय को गोली मारो सेन! चलो हम उस मृत्युंजय के दर्शनों को अपनी आँखों से देखे बिना नहीं रह सकते।

(तेज़ी से सब निकल जाते हैं। बेरा चाय लेकर आता है और मुँह बाये खड़ा रह जाता है। दो नवयुवक बदहवास से प्रवेश करते हैं। बेरा उनके आगे चाय रख देता है।)

पहला युवक : मैं तो थोड़ी ही दूर था। वह पुरुषसिंह

आराम से बैठा अपने साथी से बातों में तन्मय था ।

दूसरा युवक   बिल्कुल बेखबर ?

पहला युवक : फिर भी पुलिस की मोटर पास आते ही वह एक दम उछला और दोनों ओर से धनाधन गोलियाँ छूटने लगीं । पुलिस कप्तान की पहले से साधी हुई गोली उसके लगी साथ ही उसकी गोली ने कप्तान की कलाई बींध कर पिस्तौल दूर गिरा दिया । परन्तु पुलिस टिड्डीदल की भाँति उसे घेर चुकी थी । गोलियाँ खाकर भी वह शेर पिस्तौल चलाये जा रहा था । उसकी आखिरी गोली एक बड़े पुलिस अधिकारी के मुंह में धंस गई । उसके बाद मैं ठहरा नहीं भाग और भागा ।

दूसरा युवक   और उस साथी का क्या हुआ ?

पहला युवक   वह शायद जान बचाकर भाग गया । उसकी ओर मैं ध्यान नहीं दे पाया ।

दूसरा युवक   बड़ा कायर था !

पहला युवक   यहाँ आकर सुना कि यह शेर वही था

जिसके दर्शनों के लिए हम दोनों भटकते फिर रहे थे।

दूसरा युवक : आजाद थे आजाद थे? क्रांति की जीवन्त मूर्ति आज़ाद! हाय तो क्या अब उनके दर्शन भी न हो सकेंगे? अब उनके बिना भगतसिंह को कौन छुड़ायेगा?

पहला युवक : मैंने उस वीर के दर्शन कर पाये। यह मेरा सौभाग्य था। पर कहीं पता होता कि यही वह हस्ती है तो

दूसरा युवक : तो तुम भी शहीद हो जाते।

पहला युवक : हाँ जीवन सफल कर लेता।

(बैरा भीतर आता है।)

बैरा : आप चाय तो नहीं पी रहे हैं?

दूसरा युवक : नहीं।

(दोनों उठकर बाहर निकल जाते हैं। यशपाल और सुरेन्द्र पांडे प्रवेश करते हैं।)

पांडे : सर्वनाश!

यशपाल : (सिर पकड़कर) लेकिन यह कैसे हुआ?

पांडे : इसका शायद कभी पता न लगे।

लड़के और मास्टर पुलिस से नाराज हैं। न जाने क्या होगा।

पांडे (यशपाल से) तो चलें हम लोग देखें तो सही।

यशपाल : चलो।

(दोनों शीघ्रता से निकल जाते हैं। सुखदेवराज प्रवेश करता है।)

बेरा इधर हुजूर।

(एक कुर्सी आगे करता है। आगंतुक बैठ जाता है। बेरा चाय लेने चला जाता है।)

सुखदेवराज मैं कुछ नहीं जानता। मैं कुछ नहीं जानता। मैंने कुछ नहीं देखा। मैं यहां था ही नहीं। वह कोई और होगा। कोई और होगा। पर यशपाल उसने शायद देख लिया हो तब, तब चाय गरम चाय। बड़ा गरम चाय! गरमागरम चाय।

बेरा। (प्रवेश करके) लाया हुजूर!

(चाय सामने टेबिल पर रखता है। सुखदेवराज जल्दी जल्दी चाय बनाता और पीता है। उसके हाथ कांप रहे हैं।)

सुखदेवराम : ओह, वीरभद्र तिवारी ! क्या वह उधर से नहीं आ रहा था ? भैया ने उसे देखा था। मुझ से कहा भी था। तो वही होगा। और गोलीकांड में मैं रफूचक्कर हुआ। यह तो भैया का ही आदेश था। मेरे लिए उनका आदेश मानना ही था। दल के लिए एक साथी के प्राणों की कीमत वे समझते ही थे। तो सब कुछ यों हुआ। वीर भद्र सचमुच वीरभद्र ! मैं नहीं जानता। मैं नहीं कह सकता।

(दूसरा प्याला चाय बनाता और पीने का यत्न करता पर हाथ कांपता और प्याला छूट पड़ता है। प्याला टूटने का शब्द सुनकर बैरा आता है।)

बैरा : हुजूर, हुजूर।

सुखदेवराम : (झुंझलाकर) एक दम ठंडी चाय एक दम ठंडा !

बैरा : नहीं हुजूर नहीं हुजूर !

सुखदेवराम : बिल लाओ पैसे लो। जाओ जाओ।

(बरे का आना मसलेबराय का चले होकर जल्दी जल्दी टहलना फिर मंच से बाहर हो जाना ।

पर्दा

दृश्य चौथा

नई दिल्ली, होम मेम्बर की कोठी

२८ फरवरी १९३१ का सायंकाल

(जेम्स होरार एक बड़े कमरे में बैठे सामने रखी फाइल में कुछ आवश्यक नोट लिख रहे हैं। सरजार्ज मुस्टर प्रवेश करते हैं।)

मुस्टर : जेम्स, तुम्हारा विभाग अब शांति से सो सकेगा।

होरार : हाँ, जार्ज सारे पुलिस मोहकमे की इज्जत कसौटी पर थी।

मुस्टर : आश्चर्यजनक निडर और निर्भीक!

होरार : एच एस आर ए का सेनापति, बेखौफ और बहादुर! मैं उससे ईर्षा करता हूँ।

मुस्टर : सौभाग्य से बेखबरी में घेर लिया गया।

होरार : नहीं तो क्या हाथ आता? हम नॉट बावर से और हाथ धो बैठते।

मूस्टर : अब तो वह 'बाजार-विजेता' की अमर ख्याति का गर्व कर सकेगा ?

हेरार : नहीं, उसे नहीं करना चाहिए। वह सिर्फ अवसर की बात थी।

मूस्टर फिर भी वह योद्धा की मौत मरा !

हेरार : लेकिन गुलाम देश का योद्धा ! एच एस आर ए के प्रधान-सेनापति को फौजी सम्मान भी नसीब न हो सका। मैं सचमुच हृदय से दुखी हूँ।

मूस्टर : जेम्स तुम उसके प्रति इतनी सहानुभूति रखते हो !

हेरार : मुझे रखनी चाहिए जार्ज। इतनी पुलिस, इतनी सी आई डी इतनी सेना इतने साधन और हम मुट्ठी भर युवकों को काबू न कर सकें। बोल्शेविकों और कांग्रेस की इस मध्यवर्ती चेष्टा में जन-जागरण का भयानक खतरा हर समय सामने मौजूद रहता है।

मूस्टर : अब तो करीब करीब उसे पार कर लिया

गया है ? सब जेल में हैं या फांसी की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

फेरार : अभी वे निर्दोष नहीं हुए हैं और मुझे भय है कि कभी नहीं होंगे।

मूस्टर : तो उनकी जड़ें पाताल में हैं ?

फेरार निश्चित रूप से।

मूस्टर : या ईश्वर तुम तो अनावश्यक रूप से निराशावादी हो !— मुझे अब चलना चाहिए, जेम्स !

फेरार : (हाथ आगे बढ़ाकर) गुड नाइट चार्ज।

मूस्टर : गुड नाइट।

(हाथ मिलाने के बाद मूस्टर का प्रस्थान। द्वारपाल का उच्च पुलिस अधिकारी के आने की सूचना देना।)

द्वारपाल : प्रतीक्षा करने को कहूं ?

फेरार : आने दो, आने दो।

(अधिकारी का प्रवेश और सैल्यूट। फेरार के इशारे पर सामने कुर्सी पर बैठना।)

अधिकारी : हुजूर, आजाद

फरार : (गरजकर) इसमें पुलिस की कोई बहादुरी नहीं। अंग्रेज सागर-साम्राज्य के स्वामी इस तरह की बहादुरी पर गर्व करने से नहीं हुए हैं।

अधिकारी : हुजूर —

फरार : यह तो एक हत्या थी। अकेले आदमी की हत्या पुलिस की एक पूरी बटालियन की मदद से! क्या तुम्हें इस पर गर्व है?

अधिकारी : बिल्कुल नहीं हुजूर

फरार : जब तक यशपाल फरार है तब तक पुलिस के सिर पर भारी कर्तव्य है। असेम्बली कांड के बाद जलगांव में बंदी व दूसरे क्रांतिकारी जो भी पकड़े गये हैं वे पुलिस की योग्यता के प्रमाण नहीं हैं। उनमें से अधिकांश ने अपने आपको आपही सौंप दिया था या दुर्भाग्यवश चक्कर में आगये।

अधिकारी : हमारा संगठित प्रयास चल रहा है। हम पूरी कोशिश कर रहे हैं।

फरार : डैम तुम्हारी कोशिश डैम तुम्हारा प्रयास। मैं जो चाहता हूँ वही चाहता हूँ।

अधिकारी यही होगा, हुजूर ।

क़रार मैं नहीं चाहता कि स्काटलैंड यार्ड के अधिकारी हमें यहाँ बुलाने पड़ें । उससे यहाँ की पुलिस की प्रतिष्ठा को धक्का लगेगा ।

अधिकारी उसकी आवश्यकता नहीं पड़ेगी, हुजूर ।

क़रार तो जाओ और तभी आना जब

अधिकारी : तभी हुजूर तभी हुजूर ।

(अधिकारी का सैल्यूट करके जाना । क़रार का अपनी फाइल पर नोट लिखने लगना ।)

पर्दा

दृश्य पांचवा

लाहौर, सेन्ट्रल जेल के भीतर फांसीघर का अहाता

२३ मार्च १९३१, दिन का तीसरा पहर

(फाँसी की सज़ा पाये हुए बंदियों में भगतसिंह सुखदेव और राजगुरु अपनी अपनी कोठरियों में मौजूद हैं। वहीं समीप दूसरे लाहौर षड्यन्त्र केस के अभियुक्त करतारसिंह, जहांगीरीलाल धर्मपाल और जयप्रकाश भी बंद हैं। आज अदालत से उन्हें जल्दी ही लौटा दिया गया है और उनकी कोठरियों में बन्द कर दिया गया है और तीसरे पहर तक जेल के सभी बंदी बारकों में भेज दिये गये हैं। और सब जगह कड़ा पहरा लगा दिया गया है। रोज से भिन्न हलचल से बंदियों को किसी नई घटना का आभास हो रहा है। भगतसिंह अपनी कोठरी के दरवाजे पर खड़े खड़े सोच रहा है।)

भगतसिंह : आशाएं आकांक्षाएं सब समाप्त हो चुकी हैं, इन कपड़ों को छोड़कर अपनी कही जाने वाली किसी चीज को मैंने नहीं रक्खा है। सब बांट दी है। मोह का दायरा अब बहुत

संकरा होगया है। वह इस शरीर तक सिमट कर रह गया है। कुछ घटों बाद इस शरीर का मोह भी छूट जायगा। जीव की वह परम शांत अवस्था होगी।

(राजगुरु की कोठरी से गाने की आवाज आती है। भगतसिंह का ध्यान भंग हो जाता है। वह सुखदेव को आवाज देता है।)

सुखदेव सुखदेव !

सुखदेव बोलो !

भगतसिंह : रघुनाथ मस्ती के आलम में खोया जा रहा है।

सुखदेव : मलकहुक से मिलने की तैयारी में है।

भगतसिंह : और तू ?

सुखदेव : मैं महात्मा गांधी को पत्र लिख रहा हूं।

भगतसिंह : महात्मा गांधी को ?

सुखदेव : हां।

भगतसिंह कि फिर वायसराय से मिलें ?

सुखदेव नहीं मैं प्राणभिक्षा को नफरत करता हूं। इसके लिए हमने यह पथ नहीं चुना था।

भगतसिंह यही तो यही तो।

सुखदेव इस लंबे पत्र में मैंने महात्मा से प्रार्थना की है कि अगर आप हमारी सहायता नहीं कर सकते तो कृपया हम पर रहम कीजिये और हमें अकेला छोड़ दीजिये। आप अपनी अपीलों के द्वारा हममें फूट और विश्वास घात के बीज डाल रहे हैं। आपकी अपीलें क्रांतिकारियों के प्रति उत्पन्न हो रही सार्वजनिक सहानुभूति और सहायता की भावना को नष्ट कर रही हैं और सरकार उससे लाभ उठाकर हमें बेदर्दी से कुचल रही है।

भगतसिंह : तुम्हारा ख्याल है कि महात्माजी इन तथ्यों से अनजान हैं?

सुखदेव : नहीं लेकिन जनता को भी तो बताना है।

भगतसिंह : ऐसा पत्र लिखने में काफी देर नहीं हो गई है?

सुखदेव : जवाब की तो यों भी आशा न थी। हमारे पत्र और उनके विचार उनके दिमाग में कुछ देर उथल पुथल मचाते रहें और चर्चा लोगों तक पहुँच जाय बस।

(इसी समय एक वार्डर आता है और तीनों बंदियों को नहाने के लिए पानी दे जाता है। तीनों इत्मीनान से नहाना-धोना करते हैं। कोई भी किसी तरह की कमजोरी नहीं दिखाता।)

सुखदेव : भगत, नहा चुका ?

भगतसिंह : हाँ भाई और रघुनाथ ?

सुखदेव : शायद वह भी नहा चुका है।

भगतसिंह : तो जरा लेनिन से आखिरी मुलाकात कर लूं।

सुखदेव : लेनिन से ?

भगतसिंह : हाँ भई वकील साहब से नई किताब मंगा ली थी। सब पढ़ गया हूँ। कुछ थोड़े से पन्ने बचे हैं।

सुखदेव : तो पढ़ लो।

(भगतसिंह अपनी कोठरी में पुस्तक पढ़ने में तल्लीन हो जाता है। कुछ देर शांति रहती है। मंच पर प्रकाश मद्धिम कर दिया जाता है। सायंकाल का आभास होने लगता है। उसी समय जेल के वार्डर और सिपाही प्रवेश करते हैं। भगतसिंह की

(इसी समय एक वार्डर आता है और तीनों बंदियों को नहाने के लिए पानी दे जाता है। तीनों इत्मीनान से नहाना-धोना करते हैं। कोई भी किसी तरह की कमजोरी नहीं दिखाता।)

सुखदेव : भगत नहा चुका ?

भगतसिंह : हां भाई और रघुनाथ ?

सुखदेव : शायद वह भी नहा चुका है।

भगतसिंह : तो जरा लेनिन से आखिरी मुलाकात कर लूं।

सुखदेव : लेनिन से ?

भगतसिंह : हां भई वकील साहेब से यह किताब मंगा ली थी। सब पढ़ गया हूं। कुछ थोड़े से पन्ने बचे हैं।

सुखदेव : तो पढ़ लो।

(भगतसिंह अपनी कोठरी में पुस्तक पढ़ने में तल्लीन हो जाता है। कुछ देर शांति रहती है। मंच पर प्रकाश मद्धिम कर दिया जाता है। सायंकाल का आभास होने लगता है। उसी समय जेल के वार्डर और सिपाही प्रवेश करते हैं। भगतसिंह को

कोठरी खोलते हैं, पर वह अपनी पुस्तक पढ़ने में डूबा रहता है।)

भगतसिंह (एक हाथ से आगन्तुकों को रोककर) ठहरो ठहरो इस समय एक क्रांतिकारी दूसरे क्रांतिकारी से मिल रहा है।

(सब सकपकाकर एक दूसरे का मुँह निहारते रहते हैं। किसी से कुछ करते नहीं बन पड़ता। इसी समय पुस्तक समाप्त करके भगतसिंह उसे एक ओर उछालता हुआ 'हाँ अब चलो' कह कर खड़ा हो जाता है। तभी सुखदेव की कोठरी से हापापाई होने और धमन्ने की आहट सुनाई पड़ती है।)

भगतसिंह सुखदेव सुखदेव! क्या बात है?

वार्डर (भगतसिंह की कोठरी के सामने आकर) यह वेस का कायदा है बाबू। मैं तो हुक्म का तावेदार हूँ। हथकड़ी लगाने का हुक्म मिला है। हथकड़ी लगवा लीजिये। मेरे बुढ़ापे पर तरस खाइए। आप तो समझदार हैं।

(गजब चीज बोलता लगता है।)

भगतसिंह : लाओ पहना दो, बाबा ! हथकड़ी या बिना हथकड़ी इसमें क्या फर्क पड़ता है।

वार्डर : (कोठरी खोलकर) आप कितने भले हैं। ओह आप रत्न हैं और हम लोग

(भगतसिंह के हाथ पीछे करके हथकड़ी लगाता है। उसे कोठरी से बाहर निकाल लेता है। सुखदेव और राजगुरु भगतसिंह की हथकड़ी पहने देखते हैं तो वे भी प्रतिरोध बंद करके हथकड़ियां लगवा लेते हैं। इस बीच 'इन्कलाब जिन्दाबाद' के नारे और जोर से लगते रहते हैं। उनके नारों के साथ सारी जेल की कोठरियों से नारे लगाये जाते हैं। असंख्य कंठों की आवाजें प्रतिध्वनित होकर वायुमंडल में हड़कम्प मचा देती हैं। जेल के बाहर जनता के नारे इन आवाजों को दुगना कर देते हैं।)

भगतसिंह : (सामने की कोठरियों से झांक रहे साथियों से) अच्छा भाई जाते हैं। हम शुभकामना करते जाते हैं।

(और गाते हुए फांसी घर की ओर बढ़ते हैं।)

दृश्य छठा

लाहौर जेल के समीप श्री सन्तानम का बंगला

२३ मार्च १९३१ सूर्यास्त से कुछ पूर्व

(पंडित सन्तानम बंगले के बाहर लान में कुर्सी पर बैठे हैं। पास ही दूसरी कुर्सी पर बाहर से आये हुए कोई मिस्टर राय हैं। शेष कुर्सियां खाली पड़ी हैं।)

राय   अफसोस गुलाम हिन्दुस्तान की जनता के आंखों के तारे उस दीवार के पीछे मौत का इन्तजार कर रहे हैं।

(जेल की दीवार की ओर संकेत करता है।)

सन्तानम   हम उनके इतने करीब हैं पर विवश हैं।

राय : गांधी इरविन पैक्ट को लोग मखौल कहें तो उसमें क्या झूठ है ?

सन्तानम : हरगिज, उसने महात्मा जी के आगे विवशता जाहिर कर दो उसे यह मजाक ही हो।

राव : सब शरारत। अंग्रेज बदला लेने में पूरा निर्दय होता है।

सन्तानम : और कराची-कांग्रेस तक फांसी स्थगित रखने की बकवास

राव : झूठा एहसान।

सन्तानम : गांधी जी ने ठीक ही उत्तर दिया, नहीं इस कृपा की जरूरत नहीं।

राव : यह एक सुनहरा अवसर था जिससे लाभ उठाया जा सकता था।

सन्तानम : सत्ता के घमंड में आदमी अन्धा हो जाता है।

राव : ब्रिटिश-साम्राज्य की अर्थी में ये कीलें ठोकी जा रही हैं।

सन्तानम : और वे उसे अमर बनने की चेष्टा समझ रहे हैं।

राव : इन फांसियों के परिणाम का उन्हें पता नहीं है।

सन्तानम : भारत और इंगलैंड के बीच में इन युवकों की लाशें सदा खड़ी रहेंगी।

राय : सद्भावना का सामेन्ट समाप्त होगया है। तुम शायद अभी न समझ सकेगा।

सन्तानम : गांधी और जवाहर के नाम से भी अधिक आज भगतसिंह का नाम लोगों में प्रिय होगया है। उसकी इस ख्याति से अंग्रेज सरकार डरती भी है।

राय : मैं कहता हूं जीवित भगतसिंह से उन्हें कम खतरा है। मृत भगतसिंह ब्रिटिश सिंह को कच्चा ही चबा जायगा। सारे देश में घर घर ऐसे ऐसे भगतसिंह पैदा हो जायेंगे।

(इसी समय जेल के भीतर 'इन्कलाब जिन्दाबाद' के नारे लगते हैं।)

सन्तानम : (चौंककर) ऐं, यह क्या ?

(पहले से भी अधिक जोर से नारा दोहराया जाता है।)

राय : क्या मामला है ?

(नारा और जोर से लगता है। सारा जेल नारों से गूंज उठता है।)

सन्तानम : तो क्या ये फांसी पर चढ़ाये जा रहे हैं ?

(नारों के तुमुल वेग से दीवारें थरथरा उठती हैं ।)

राय लेकिन शाम को फांसी लगाने का तो कायदा नहीं है ।

(नारे बराबर लग रहे हैं और हर बार पहले से तेज । जैसे जेल में कोई अनुशासन नहीं रह गया हो । बाहर जनता न जाने कहां से टूट पड़ती है और नारों को उसी तरह दोहराती है ।)

सन्तानम : फांसी का तख्ता गिरेगा तो यहां से सुनाई पड़ेगा । अभी तक फांसी दी तो नहीं गई है, फिर भी सरदार किशनसिंह को खबर तो कर दूं । (टेलीफोन उठाकर) हलो सरदार किशनसिंह मैं सन्तानम । जेल इन्कलाब जिंदाबाद के नारों से हिल रहा है । न जाने क्या बात है ? कहीं—कहीं—आप आ रहे हैं, आइये ।

(नेपथ्य में तख्ता गिरने का खड़का होता है । उसके बाद जेल में जो हाहाकार

लगता है उससे आकाश फटने का सा भ्रम
होने लगता है।)

राम : मालूम पड़ता है केस खत्म होगया।

सन्तराम : जरूर। बेचारा बूढ़ा किशनसिंह!

राम : बेचारा नहीं। सारे भारत के पिता उसके भाग्य से ईर्षा करते हैं।

(सरदार किशनसिंह बदहवासी से प्रवेश करते हैं।)

किशनसिंह : पंडित जी हाय मेरा भगत! उसे कोई

सन्तराम : (बढ़कर सहारा देते हुए) मुझे दुख है मुझे दुख है सरदारजी! नहीं मुझे गर्व है। सारे लाहौर को उस पर गर्व है। सारे भारत को उस पर गर्व है।

राम : शहीद के पिता की आंखों में आंसू का क्या काम। देवता उसके रास्ते में फूल बिछाते हैं।

किशनसिंह : भगत भगत! मेरे भगत! तेरा अभागा पिता।

(जेल के बाहर और भीतर दोनों ओर धरती और आकाश को हिलानेवाले नारे

लगते हैं 'भगतसिंह ज़िन्दाबाद' 'सुखदेव ज़िन्दाबाद' 'राजगुरु ज़िन्दाबाद'। मंच पर एक दम अँधेरा कर दिया जाता है। फिर भी नारे बराबर लगते रहते हैं। बराबर लगते रहते हैं। सन्तराम और राव सरदार किशनसिंह को दोनों ओर से सँभालते हैं।)

(धीरे धीरे पर्दा गिरता है)

नाटक के आधार ग्रंथ

यशपाल : सिंहावलोकन भाग १, २, ३

चतुर्वेदी बनारसीदास : यश की धरोहर

" रामप्रसाद बिस्मिल की आत्मकथा

गुप्त मन्मथनाथ भारतीय क्रांतिकारी आन्दोलन का इतिहास

बंसल रतनलाल मृत्युंजय सरदार भगतसिंह

चन्द्रशेखर आज़ाद

पथिक : सरदार भगतसिंह

नेहरू जवाहरलाल मेरी कहानी

पट्टाभि सीतारमैया : कांग्रेस का इतिहास

मासिक साप्ताहिक दैनिक पत्र-पत्रिकाएं और रिपोर्टें